शाश्वत धर्म

फरवरी / मार्च १९९३

रे चिर प्रवासी! देख पर उत्कर्ष ईर्ष्या क्यों करे?
है आसुरी यह वृति तेरी शांत समता को हरे।
निश दिन धधकती आग सी दिल को जलाती व्यर्थ है।
खाख करती सरलता कोई न इसका अर्थ है॥

सम्पादक जे. के संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल,बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,

* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भैंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल,कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी. फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा. *

* श्री [illegible]नाथ जैन डोसी देहरासर - थराद * श्री सौधर्म वृहत्त्पोगच्छ जैन संघ - आणंद (गुजरात)
* श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ - थलवाड़ (राज.) * श्री वृहत्त्पोगच्छीय जैन संघ - जावरा (म.प्र.)

1302

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३

शाश्वत धर्म कार्यालय

डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक ९-१० ★ फरवरी/मार्च १९९३

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म – फरवरी + मार्च १९९३

झरोखा

- सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
- स्वावलम्बन ....स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी म. सा. ५
- मधुकर प्रवचन पियुष ....महेन्द्र जैन ९
- श्री नेमिनाथ जिनस्तवन (२२) ...... मुनि श्री जयानंदविजयजी म.सा. ११
- वोसिरामि : एक वैज्ञानिक विवेचन .... श्री कन्हैयालाल लोढ़ा १२
- जैन संस्कृति में अहिंसा .... स्व. उपाध्याय श्री अमरमुनि १५
- युवा संदेश .... मुनि श्री रत्नसेन विजयजी म.सा. १८
- क्या आप जानते हैं ? .... धर्ममित्र १९
- तप आत्मशोधन की प्रक्रिया .... श्री महेन्द्र जे. संघवी २०
- भारतीय संस्कृति के संदर्भ में पशुहत्या व्यापार नहीं अपराध हैं .... श्री पन्नालाल मुंधड़ा २३
- भक्ष्य अभक्ष्य : विकल्प की खोज संगोष्ठी .... डॉ. नेमीचंदजी जैन २५
- सरे राह चलते चलते .... प्रवासी २७
- आध्यात्मिक उपदेश के आवश्यक गुण .... डॉ. जगदीश सूचिका २८
- समभाव आत्मा का स्वभाव है .... श्री उदयलाल जारोली ३१
- रूकिये ! पढ़िये !! सोचिये !!! .... मुसाफिर ३३
- स्वाध्याय चिंतन .... श्री ललित कोठारी ३४
- समाचार दर्शन .... संकलित ३५
- समाचार सार .... संकलित ४१
- आपका पत्र मिला ४५
- परिषद के प्रांगण से .... श्री सुरेन्द्र लोढा ४७

गुजराती विभाग

- (बोधकथा) आनंद श्रावक अने अपरिग्रह .... श्री रोहित शाह ५५
- मंदिरो दहेरासरो नी बाह्य जालवणी करतां ..... श्री सेवंती एम. संघवी ५७
- अंक विज्ञान थी आतमज्ञान - .... मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी म. ६०
- स्वास्थ्य चर्चा - गोरा ओ नी मीट इकानामी ६१

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

Typesetting By :

Chaitanya Typesetting,

B-2, Sagar Apartments, Brahmin Society, Naupada Thane.

सम्पादकीय

हिंसाचार का विष-चक्र

पिछले दिनों से बर्बर हिंसाचार की जो लगातार घटनायें हो रही है, उसे देखकर लगता है सभ्य मानव मानवता से कोसों दूर हो गया है। दानवता का तांडव नृत्य सारे संस्कारों, नैतिकताओं पर अट्टहास कर रहा है। बम्बई-अहमदाबाद- सुरत आदि संस्कारवान शहरों में घटित घटनायें, मानव द्वारा मानव को जिन्दा कत्ल करना, घरों-बस्तियों में आग लगाकर लोगों को बेघर बनाना, एक कमरे में एक परिवार के सभी सदस्यों को डालकर, पूरे परिवार को जिन्दा जला डालना आदि कई प्रकार की बेरहम पद्धतियाँ अपनायी गयी। १२ मार्च के बम्बई बम विस्फोट की घटनाओं में हजारों निर्दोष लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा एवं अनगिनत सम्पत्ति का नुकसान हूआ। इन्सान इतना बेरहम कभी नहीं हुआ था।

उदारता, सहिष्णुता, मानवता एवं समझदारी जो अपने विचारों में, अपने संस्कार और स्वभाव में नहीं होगी तो अन्य धर्मी तो क्या हम अपने स्वधर्मी या भाषा या परिवार के लोगों के साथ भी शांति एवं स्नेह से नहीं जी सकते।

हिंसाचार पनपने के कई कारण हैं। अपनी सत्ता को कायम रखने के लिये वोटों की राजनीति करने वाले नेताओं का भी इसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष हाथ रहता है। असामाजिक तत्वों के साथ हाथ मिलाकर, गठबन्धन कर अपना स्वार्थ निकालते हुए जब पानी नाक से उपर बहने लगता है तो सारा मामला आपे से बाहर हो जाता है। गुंडातत्व कोई एक दिन में इतने ताकतवर नहीं हो जाते किन्तु भ्रष्टाचार और बडे लोगों का हाथ उन्हे इतने हत्याकांड करने के लिये शक्ति प्रदान करतें हैं।

क्रूरता एवं हिंसाचार की शिक्षा देने में फिल्मों का सहयोग भी कम नहीं है। हिन्दी फिल्मों में अभी निरंकुश क्रुरता, हत्या, हिंसा, वैर-भावना को अत्याधिक दिखाया जा रहा है, जिसे देखकर युवापीढ़ी प्रेरणा प्राप्त करती है। इन्सान- के प्रति इन्सान इतना बेरहम, बेदिल, अमानवीय कभी नहीं बना था,

आज तो मानव-मानव को गाजर-मूली की तरह काट रहा है। प्रतिदिन हिंसा प्रतिशोध के दृश्य देख-देखकर नयी पीढ़ी के दिल मात्र संवेदन हीन ही नहीं वैरभाव व क्रुरता से जड़ के समान हो गये हैं, उनके लिये मानो यही स्वाभाविक क्रिया हो गयी है। दंगे-फसादों में भाग लेने वाले अधिकांश युवा इसी ग्रुप के होते हैं। इस प्रकार राजकीय, गुंडातत्व के साथ ही इन दंगो के पिछे आर्थिक व सामाजिक कारण भी होते है। उपभोक्ता वादी संस्कृति के पनपने से आज व्यक्ति को सारे साधन व सुखसुविधायें चाहिये फिर येन-केन प्रकारेण उसे प्राप्त करने के लिये वह अपराधी तत्वों का हत्था बनता है। कई बार छान-बीन के बाद प्रकाश में आने वाली ऐसी घटनायें अखबारों में आती है कि अमुक फिल्म के अमुक दृश्य से प्रेरणा लेकर यह हत्या या चोरी की गयी। पूर्व में भी कथाओं या प्रसंगों में गरीबी, बेकारी आदि का चित्रण लेखकों द्वारा किया जाता था, किन्तु वह पढते ही हृदय में अनुकंपा, सहानभूति व करूणा जन्म लेती थी। हृदय मानवता के मृदु स्पर्श से पिघलने लगता था किन्तु आज वास्तविकता के नाम पर गरीबी, बेकारी या वैर भावना को जिस घृणास्पद, जुगुप्साप्रेरक तरीके से फिल्माया जा रहा है उसे देखकर प्रेक्षकों में करूणा या मानवता जागृत होने के बजाय हिंसाचार या वैर से बदला लेने की प्रक्रिया कैसे करना यह भी सिखाया जा रहा है। गरीबी, बेकारी या इन्सान की लाचारी तिरस्कार पात्र नहीं है किन्तु धन कमाने या कीर्ति की लालसा में, अपने व्यक्तिगत स्वार्थ या लाभ के खातिर उसको निमित्त बनाकर विकृत रूप में पेश करना व भावनाओं को बहकाना सामाजिक दूषण है, अपराध है।

जिस प्रकार पानी ढलान पर अपने आप बहने लगता है, उसके लिये कोई मेहनत की जरूरत नहीं रहती, किन्तु उसी पानी को उपर चढाने के लिये विद्युत मोटर पम्प की आवश्यकता होती है। अर्थात् उपर चढाने के लिये मेहनत करनी पड़ती है, उसी प्रकार मानव की मनोवृत्तियों को अधोगामी बनाने के लिये कोई मेहनत की जरूरत नहीं किन्तु उन्हे उर्ध्वगामी बनाने के लिये परिश्रम की जरूरत है।

श्रमण भगवान महावीर ने कहा था कि खून का दाग खून से नहीं पानी से साफ होता है। वैर या हिंसा का बदला वैर या हिंसा से लेने से कभी उसका अन्त नहीं आयेगा। हम आवेश- आवेग को रोककर मानवीय गुणों, दया, क्षमा, मैत्री, करूणा से पुनः अपने आपको संस्कारित करें तभी हिंसाचार के विष-चक्र को रोका जा सकेगा।

J.K. Sanghvi

(जे. के. संघवी)

स्वावलम्बन

स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

किसी भी सिद्धि के लिये स्वावलम्बी मनुष्य जितना सफल हो सकता है, उतना दूसरों की सहायता पर निर्भर रहने वाला मनुष्य कदापि कृतकार्य में सफल नहीं हो सकता। स्वावलम्बन से विमुख होना मानवता के साथ विश्वास-घात करना है। मानव की मानवता (मनुष्य की मनुष्यता) तो इसी में चिरस्थायी है जब वह परावलम्बी न हो कर स्वावलम्बी बने। आज जिस ओर दृष्टिपात किया जाय मनुष्य अपनी साधना और कार्य प्रणालियों में असफल ही दृष्टिगोचर होता है। इसका एक मात्र कारण है कि वह छोटे से छोटे कार्य में भी दूसरों का मुँह ताकने लगता है। इसी विषम परिस्थिति ने उसे अकर्मण्य, प्रमादी, एवं स्फूर्तिहीन बना दिया है। आज के मनुष्यों में अधिकांश की यह आदत-सी पड़ गई है और इसी के वशीभूत होकर वे मनुष्यता के साथ विश्वासघात करते हुए अपने आत्मबल को खो बैठे। ऐसी विषमता ने जहां अपना जाल बिछा रखा हो वहां कैसे अज्ञानान्धकार मिट कर लोक-कल्याण की संभावना की जा सकती है। अतएव स्वपर का कल्याण चाहने वाले मनुष्य को स्वावलम्बी होना ही चाहिये। कहा भी है कि:—

अपने बल पर आप खड़े रह करो सदा सब अपने काम।
यही वीर पुरुषों का व्रत है रखो हमेशा इस पर ध्यान।।
जो जन सदा पराये मुख को, खड़े खड़े ही तकते हैं।
उनके हाथ न कुछ भी आता, और न कुछ कर सकते हैं।।

पापाचरण भी स्वावलम्बन के लिये बाधक है। प्राय: बहुत से मनुष्य पाप-प्रवृत्तिजनक बाह्य पदार्थों पर आकर्षित हो, उसके साथ आमोद-प्रमोद करने में अपना जीवन सफल समझते है। उन्हें यह भली भाँति समझ लेना चाहिये कि क्षणिक आमोद-प्रमोद का परिणाम आखिर महान् भयङ्कर होता है। उसके पीछे शोक-सन्ताप रहता है। अत: स्वावलम्बी बनने के लिये मनुष्य को प्रत्येक पापाचरण से सदा अलग रहना चाहिये। क्यों कि:—

पापाचरण की मूर्ति यद्यपि, दिखती बहुत मधुर है।
चित चोर और मन मोर पर, यह अन्त में बहु भीरू है।।
इसका अनुपम रूप फिर भी, गरल सम भीषण महान्।
रहना सदा ही दूर इससे, पुरूष बल जाता कहां।।

इस पद के प्रत्येक वाक्य का विचार करने से सहज ही में पता लगता है कि वस्तुत: पापाचार देखने में अति सुन्दर एवं लुभावना मालूम होता है और सरस होने पर भी इसका अन्तिम परिणाम बडा भीषण है जो स्वावलम्बन को कोसों दूर पटक देता है। जो लोग आमोद प्रमोद के क़ामी हैं उन्हीं के ऊपर पापाचरण सवार होते है और वे परावलम्बी जीवन व्यतीत करते

हैं। परन्तु जो लोग आत्मबली हैं वे मरणान्त विपत्ति में भी न परावलम्बी बनते है और न कायर होते हैं, उन पर किसी का हमला नहीं हो सकता। वे कण्ठगत प्राण होने पर भी अपने स्वावलम्बन को नहीं छोडते, प्रत्युत् और भी अधिक दृढता से आत्मोद्धारक अपने प्रण की रक्षा करते हैं। कहा भी है कि :—

अपने प्रण से वीर न टलते, चाहे उन्हें डालिये पीस।
नियम निबाहेंगे वे अपना, जब तम उनके धड़ पर शीष।।
खा कर जिसे उगल देते हैं, फिर उसको खाते हैं श्वान।
देते छोड़ उसे ले फिर से, छूते नहीं कभी मतिमान।।

स्वावलम्बी होने का मुख्य कारण धैर्य धरना भी है। जिसके बिना मनुष्य स्वावलम्बी नहीं हो सकता। मनुष्य जब कायर हो जाता है, तब वह धैर्य को खो कर अकर्मण्य सा बन जाता है। अतः ऐसे मनुष्यों को चाहिए कि वे अपने जीवन के क्षेत्र में अधीरता से कोई काम न लेवें। अधीर मनुष्य सर्वदा कायर और कायरता से स्वभावतः परावलम्बी होता है। धैर्यवान् मनुष्य कभी अपने आप को निराश नहीं मानता। उसके जीवन में सन्तोष, शांति, धैर्य, और सुख बना रहता है। इसलिए मनुष्य को सर्व प्रथम धैर्यवान् बनना चाहिये और प्रत्येक कार्य को धैर्यता से करना चाहिये जिससे कोई भी कार्य न बिगड़ने पावे और न असफलता का सामना करना पड़े। एक कवि ने ठीक लिखा है कि—

जग की विस्तृत रण-स्थली में, जीवन के झगडों के बीच।
नायक बन कर करो काम सब, पशुओं जैसे बनो न नीच।।
हो सचेत श्रम करो सदा तुम, चाहे जो कुछ हो परिणाम।
सदा उद्यमी हो कर सीखो, धीरज धर कर करना काम।।
उच्च शिखर की दुखद यातना, कठिन धूप का प्रबल प्रताप।
उज्ज्वल माणिक सदृश कांतिमय, शीतल हिम का दारूण हाप।।
कभी न करते विचलित जिनको, कर्मवीर वे कहलाते।
ऐसे ही सज्जन जग में निज, कठिन कार्य को कर पाते।।

स्वावलम्बन के औपदेशिक सूत्र :—

(१) किसी देव अथवा मानव की सहायता पर जीवित रहने वाला मनुष्य अपनी आन्तरिक शक्तियों का तिरस्कार कर उन्हें इस प्रकार दुर्बल बना देता है जिससे किसी भी समय वह अपने आप की लेशमात्र रक्षा नहीं कर सकता, दूसरों की सहायता कदापि स्थिर नहीं होती। वह तो अल्पकालीन या क्षणभंगुर होती है, उनके न मिलने पर मनुष्य अकर्मण्य बन कर पतन के गर्त में जा गिरता है। उसको यह भान नहीं होता कि अब क्या करना? और क्या नहीं? अतएव मुनष्य में इतना आत्मबल होना जरूरी है कि वह दूसरों की सहायता लिए बिना भी अपने कार्य यथावत् स्वयं सम्पन्न कर सके। क्योंकि परावलम्बन निराशा जनक है जैसे :—

स्वर्ण की जन्जीर बांधे, श्वान फिर भी श्वान है।

धूलि धूसर भी करी, पाता सदा सन्मान है।।

परावलम्बी कुत्ता स्वर्ण की जंजीर से बन्धा हुआ होने पर भी सम्मान पात्र नहीं होता, परन्तु मिट्टी से भरा हुआ स्वावलम्बी हाथी सदा आदर पात्र होता है। इसका कारण यही है कि स्वतन्त्रता सुख और शांति ये अमूल्य रत्न दूसरों के आश्रय में रहने वाले व्यक्तियों को नहीं मिला करते। ये रत्न तो स्वावलम्बियों के पास ही रहते और उन्हें सजाते हैं। सच्चे प्रयत्नशील आत्म-विश्वासी और कर्मवीर कभी किसी के आश्रय पर निर्भर नहीं रहते उनका तो वास्तविक यही सिद्धान्त होता है कि :—

डटे रहो अपने कामों पर, सावधान हो कर तैयार।
समय कार्य करने वालों के, हित लायेगा अनुपम उपहार।।

(२) किसी भी कार्य को करने के पहले अपने लक्ष्य का निश्चय कर उसको समझने का प्रयत्न करो। जब लक्ष्य ध्यान में आ जावे तो उसको पूर्ण स्थिर कर लो। क्योंकि लक्ष्य ज्ञान की स्थिरता ही सफलता की अमोघ कुञ्जी है। कार्य यद्यपि कठिन हो पर उससे घबराना एवं निराश होना कायरता है। सदा ध्यान में रहना चाहिए कि कार्य जितना कठिन होता है उसका सम्पादन भी उतना ही गौरवशाली होता है। एक बार जिस कार्य को जिसने दृढता से कर दिखाया, दूसरे लोग उसी का अनुकरण करने लग जाते हैं और वह कठिन कार्य सफल बन जाता है। संसार में ऐसा कोई कार्य दुःसाध्य नहीं जो मनुष्य शक्ति से सम्पन्न न हो सके। मनुष्य में वह बल है जिस से अति कठिन से कठिन कार्य को सरलता एवं सुगमता से किसी का आश्रय लिए बिना आसानी से कर सकता है। चाहिये उसमें साहस, धैर्य और यत्न पूर्वक कार्य करने का आत्मबल। कठिन कार्यों के मार्ग में कांटे चुभते हैं, पीड़ा सहन करनी पड़ती है और लोगों की गालियां एवं उपहास उपस्थित होते हैं, पर जो मनुष्य किसी की परवाह न कर अपने मार्ग को नहीं छोड़ता, वही विजय पाता है। इसलिए :—

यदि सत्य के आधार पर है मार्ग तुम्हारा
चिन्ता नहीं जो विघ्न के कांटो से पूर्ण है।
अपवाद है आसक्त तुम्हें भीत करने में,
बस अपनी धुन में मस्त रह आगे चले चलो।
कांटे गड़ेंगे पैर में अकेले सहोगे पीर,
उलटे हसेंगे लोग तुम्हारी कराह पर,
कुछ गालियां भी देंगे यह तो स्वभाव है,
छोड़ो उन्हें वहीं पर तुम आगे बढे चलो।

(३) मनुष्य अनन्त शक्तियों का खजाना है, उनमें अनन्त बल, अनन्त सामर्थ्य और विचार के लिए अनन्त बुद्धिबल भरा पड़ा है। वह अपनी शक्ति एवं बुद्धि बल से मदोन्मत्त हाथी को, क्रुद्ध केसरी सिंह को, दुर्गम पहाड़ों को, भारी से भारी शत्रु को और दुर्लंघ्य समुद्रों को भी अपने आधीन कर सकता है। इतना शक्तिशाली होकर भी मनुष्य सामर्थ्यहीन इसलिये हो जाता है कि वह अपनी शक्ति को नहीं पहचान पाता। जिस प्रकार हाथी अपनी

अगाध शक्ति को भूल कर सिंह से पराजीत हो जाता है। अगर उसे अपनी शक्ति का भान हो जावे तो उसके सामने सिंह का बल कभी कामयाब नहीं हो सकता। हाथी की काया यद्यपि विशाल है, परन्तु उसमें अपना बल पहचानने की, शक्ति नहीं है इसी से सिंह के सामने हाथी के सामर्थ्य का मूल्यांकन नहीं है। उसी प्रकार मनुष्य अनन्त शक्ति का धारक होने पर भी आत्मबल से अपरिचित या अनभिज्ञ होने के कारण सामर्थ्य-हीन बन जाता है। यदि वह अपने आत्मबल को पहचान ले और उस पर अटल विश्वास रख ले तो उसके सामने भारी से भारी सत्ता भी कोई चीज़ नहीं है। आत्मबल से मनुष्य पूज्य परमात्मा तक बन जाता है। कार्य सिद्ध करने में यदि विपत्ति भी आवे तो चलविचल नहीं होना चाहिये। कहा भी है कि:—

आती विपद् लख यत्न कुछ, रक्षार्थ करना चाहिये
आलस्यवश हो मोतवे, बेआई न मरना चाहिये।।
सुख यदि सदा रहता नहीं, तो दु:ख का भी अन्त है।
यह सोच कर निज चित्त में, विचलित न होता सन्त है।।

(४) मनुष्य अपने निर्धारित लक्ष्य को सफल बनाने में ही अपनी सारी शक्तियों तथा बुद्धिबल को लगा दे। जो मनुष्य अस्थिर चित्त होकर एक कार्य को पूरा किये बिना दूसरे को और उसको भी अपूर्ण छोड़ कर तीसरा करने लगता है, वह किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। उसके एक नहीं, दो नहीं सबके सब कार्य अस्त व्यस्त से रहते हैं, एक भी कार्य पूर्ण नहीं हो पाता। इसीलिये स्वावलम्बी बनने के लिये प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने के पश्चात् ही दूसरा कार्य अपने हाथ में लेना चाहिये। क्यों कि :—

एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
जो गहि सेवे मूल को, फूले फले अघाय।।

यह सत्य है कि कार्य करने के पूर्व पग-पग पर विपदाएँ आती हैं और सङ्कट अपना जाल बिछाने को तैयार रहते हैं, परन्तु उनसे तनिक भी न डर कर अपने लक्ष्य को न छोड़े। जो मनुष्य इस प्रकार आपत्तियों से बिना डरे बराबर दृढता से कार्य करते रहते हैं और अपने निश्चय से कभी चलबिचल नहीं होते, उनके हाथों में ही विजय श्री रहती है, सफलता उन पर चँवर ढुलाती है और महत्ता उनकी विजय पताका फहराती है। अत: प्रत्येक मनुष्य को आत्मबल, साहस, सामर्थ्य एवं धैर्य पूर्वक अपनी आत्मसाधना में रहना चाहिये, तभी सफलता प्राप्त होगी।

(५) बहुधा देखने में आता है कि मनुष्य साहसपूर्वक किसी भी कार्य क्षेत्र में उतरता अवश्य है परन्तु थोड़े ही समय में उसका वह साहस, वह उत्सुकता और कार्यक्षेत्र में विचरने वाली वह उमङ्ग न मालूम कहाँ चली जाती है? जिससे वह अपना कार्य अधूरा ही छोड़ कर किंकर्त्तव्य विमूढ़ की भांति हाथ पर हाथ धरे अकर्मण्य हो, एक ओर बैठ जाता है। इसका कारण यही है कि मनुष्य जहां अनन्त शक्तियों का कोष है वहाँ वह दुर्बलता का भी पुतला बन जाता है और शक्तिसम्पन्न होकर भी वह दुर्बलता के कारण अपना आत्म-विश्वास खो बैठता है। इसीसे वह थोड़े ही समय में अपने कार्यक्षेत्र से मुँह मोड़ लेता है। – क्रमशः

मधुकर – प्रवचन – पियुष

(आचार्य श्री जयंतसेनसूरीजी के प्रवचनांश)

संकलन - महेन्द्र जैन

★ समता और शुद्धता के अभाव में जीवन निरर्थक है, मनुष्य जीवन बार–बार नहीं मिलता है। जीवन में समता व ममता के दो रास्ते हैं। इसमें से हमें एक रास्ते को चुनना है। इसका चुनाव भी हमें ही करना चाहिये, क्योंकि हर दिन हमारी उम्र बढ़ती जा रही है, अर्थात हमारा जीवन कम होता जा रहा है। हमारी दृष्टि का भ्रम है कि हम बड़े हो रहे हैं जबकि हम छोटे होते जा रहे हैं। हम एकान्त में बैठ कर चिन्तन करें तो हमारे दिल में ही खुदा के दर्शन हो जावेंगे।

★ हम आत्मवाद, अध्यात्मवाद, कर्मवाद तथा स्याद्वाद से अनजान है या धीरे–धीरे अलग–अलग हट कर दूर बैठ रहे है। तथा उसके अलावा हमारा मस्तिष्क अपने अलग वाद में उलझा हुआ है हमारे जीवन में विकास का क्रम तब ही ठीक होगा, जब उपरोक्त सभी वादों को अपने जीवन सें जोड़े तब ही जीवन सुखद बन सकेगा।

★ आदमी अधिकार शब्द को भुलकर कर्तव्य शब्द को याद कर लेता है तो अहम् भावना चली जाती है, कर्तव्य का जो व्यक्ति चिन्तन कर लेता है तो वह अहम् की ओर अपने कदम नहीं बढ़ा सकता है। महावीर का मार्ग आत्मचिंतन का मार्ग है। भगवान महावीर ने कहा ''तुम चले कहां से, तुम्हे पहुंचना हैं कहाँ? इन दोनों बातों को पहले याद कर लो।'' जिस मनुष्य ने जीवन में इन दोनों बातों को धारण कर लिया उसका जीवन प्रगतिमय व उत्क्रान्तिमय व्यतीत होगा। जिसने अपने स्वयं के लिये आत्मश्रेय का पथ ग्रहण कर लिया उसे कभी कोई तकलीफ नहीं होगी।

★ मनुष्य को दिल और दिमाग दोनों सही रखना चाहिये। मनुष्य का दिल बिगड़ा व साफ सुधरा है तो समझ लेना चाहिये कि वह कलियुगी जीवन जी रहा है। दिल जिसमें सम्यकत्व का वास हो, दिमाग जिसमें सम्यकत्व का चिन्तन हो। मैं क्या करता हूँ, इसका ख्याल मनुष्य ने रख लिया समझों उसने सब कुछ पा लिया है। मिथ्या जब तक नहीं गया तब तक हम अपने आप के वास्तविक रूप को व आत्म स्वरूप को नहीं समझ पायेंगे।

छठवीं पुण्यतिथी के अवसर पर

- स्मरणांजली -

स्व. श्री तगराजजी हिराणी

स्वर्गवास : ३०/३/१९८७

पुत्र - चम्पालाल, फतेहराज, कान्तिलाल,
प्रकाशचंद, गौतमचंद, राजु

पुत्री - ललिताकुमारी
एवं समस्त हिराणी परिवार
रेवतड़ा, जि. जालोर (राजस्थान)

प्रतिष्ठान -

1) **Bhawana Enterprises**
17-Keshav Iyer Street,
Madras - 600 003 (T.N.)

2) **Primier Metal Suppliers**
A-9, Shree Ram Market,
D.K.Lane Chick Pet
Bangalore - 560 003.

श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी कृत चतुर्विंशति जिन स्तवन (धारावाहिक)

श्री नेमिनाथ भगवंत स्तवन (२२)

(देश मनोहर मालवो........ ए राह)

विवेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

नेमि जिणंद नमुं सदा, ब्रह्मचारी बलवन्त, ललना ।
राजुल रूपवती रती, ते छोड़ी मतिवन्त, ललना । नेमि. ॥ १ ॥

जो ब्रह्मचर्य के पालन में सर्व श्रेष्ठ शक्तिशाली है । कामदेव की रति जैसी रूपवती राजुल नारी को अत्यंत मतिमान, बुद्धिवन्त श्री नेमिनाथ भगवंत ने छोड़ दी ऐसे श्री नेमिनाथ भगवंत को सदा नमस्कार करता हूँ ।

धरणी में तेह धन्य छे, रमणीनो छोड़े रंग ललना ।
रमणी रसे बहु रडवड्या, शंकरादि स्त्री संग ललना । नेमि. ॥ २ ॥

पृथ्वीतल में उन्हीं आत्माओं को पूजनीय/उत्तम/धन्य/वंदनीय माना गया है जिन्होंने रमणी का संग/स्त्री संग का त्याग किया है । क्योंकि रमणी के संग के कारण/रमणी रस के कारण/विषय वासना के कारण शंकरादि के समान इस संसार में परिभ्रमण विशेष रूप से होता है । अनंत आत्माएँ स्त्री संग के कारण संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं ।

दुःख दारिद्र सवि दमे, देव दानव हुवे दास ललना ।
ब्रह्म रूपी बख्तर वरे, पामे ज्ञान प्रकाश ललना । नेमि. ॥ ३ ॥

गुरुदेवश्री ब्रह्मचर्य गुण की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ब्रह्मचर्य के पालन से दुःख, दारिद्रता (भौतिक एवं आत्मिक दोनों प्रकार की दुःख दारिद्रता) का सर्वथा नाश हो जाता है । देव एवं दानव भी उसके दास हो जाते हैं । ब्रह्मरूपी बख्तर (कवच) मन पर पहन लेने से मोहराय के सैनिक, मोहराय स्वयं आत्मा का अंश मात्र अहित नहीं कर सकता । एवं वह ज्ञान रूपी प्रकाश की पूर्णता को भी प्राप्त कर लेता है । केवलज्ञान को प्राप्त कर लेता है ।

तजे कुण शिवा सुत विना राजुल सरिखी नार/ललना ।
समुद्र विजय शिशु मन वस्यो, शिव रमणीनो सार । ललना । नेमि. ॥ ४ ॥

श्री नेमिनाथ भगवंत की प्रशंसा करते हुए कहा कि राजुल समाज रूपवती नारी का त्याग शिवा माता के पुत्र श्री नेमिनाथ भगवंत के सिवाय कौन कर सकता है ? अर्थात् श्री नेमिनाथ भगवंत ही ऐसी स्त्री का त्याग कर सकते हैं । ऐसे बावीसवें जिनेश्वर शिव रमणी के तत्व को पाये हुए हैं, जो समुद्र विजय के सुपुत्र रत्न हैं, वे मेरे मन में बस गये हैं ।

ब्रह्म गुप्ति वर हुं वरूं, हुं जाचुं ए जिनराज ललना ।
सूरि राजेन्द्र नी संपदा, हुँ पेखुं महाराज ललना । श्री नेमि ॥ ५ ॥

श्री नेमिनाथ भगवंत की संपत्ति को मैं देख रहा हूँ उन भगवंत से मेरी याचना है कि मैं भी आपके जैसी ब्रह्मचर्य गुप्ति का पालन करने वाला बनूँ ।

आपके जैसे ब्रह्मचर्य का धारक मैं बनूँ । ऐसी आपसे मेरी नम्र याचना है । गुरुदेवश्री ने इस स्तवन में ब्रह्मचर्य व्रत के उत्कृष्ट पालक श्री नेमिनाथ भगवंत की प्रशंसा स्तवना करके ऐसी ब्रह्म गुप्ति के पालन करने की शक्ति की याचना की है ।

वोसिरामि : एक वैज्ञानिक विवेचन

श्री कन्हैयालाल लोढा

''रागो य दोसो वि य कम्म वीर्य'' उत्तराध्ययन अ. ३२ गाथा ७, अर्थात् कर्म की उत्पत्ति राग-द्वेष रूप बीजों से होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो राग और द्वेष ही कर्म-बंध के कारण हैं अर्थात् जब तक राग-द्वेष है तब ही तक कर्म-बंध रहता है। राग-द्वेष में परिवर्तन होने के साथ ही कर्म-बंध में भी परिवर्तन होता रहता है। वर्तमान में राग-द्वेष के घटने से पूर्व में बंधे हुए कर्मों में भी घटोतरी हो जाती है अर्थात् पहले बंधे हुए कर्मों की स्थिति और अनुभाग में कमी हो जाती है, उन में अपवर्तन व अपकर्सण हो जाता है। वर्तमान में राग-द्वेष में वृध्दि होने से पूर्व में बंधे हुए कर्मो में भी वृद्धि हो जाती है-अर्थात् पहले बंधे हुए कर्मो की स्थिति व अनुभाग में वृद्धि हो जाती है उनमें उद्वर्तन व उत्कर्षण हो जाता है। वर्तमान में पूर्ण रुप से राग-द्वेष रहित-वीतराग होने पर घाती कर्मो का पूर्ण क्षय हो जाता है। तात्पर्य यह है कि कर्म-बंध का संबंध पूर्ण रुप से राग-द्वेष पर निर्भर करता है।

राग-द्वेष के साथ कर्म-बंध का उपर्युक्त नियम सभी कर्मो पर लागू होता है परन्तु वीतराग होने पर कर्म-क्षय का नियम केवल घाती कर्मो पर ही लागू होता है अघाती कर्मो पर आंशिक रुप से लागू होता है पूर्ण रुप में नहीं। घाती कर्म ही आत्मा के गुणों का घात करने वाले हैं। आत्म-गुणों का घात ही वास्तव में घात है, हानि है। अघाती कर्म आत्मा के मौलिक निजी किसी भी गुण का अंश मात्र, लेश या देश मात्र भी घात नहीं करते हैं इसीलिए आगम में अघाती कर्मों की किसी भी प्रकृति को देश घाती नहीं कहा है अत: अघाती कर्म से जीव की लेशमात्र भी हानि नही होती फिर भी वीतराग होने पर अघाती कर्मों की स्थिति व अनुभाग अत्यधिक हीन-न्यून हो जाते हैं वे जली हुई रस्सी, भुने हुए चने के समान निर्जीव सत्वहीन हो जाते हैं। जैसे भुना हुआ चना खाद्य का काम तो देता है परन्तु नवीन पौधा उत्पन्न करने में अक्षम होता है इसी प्रकार अघाती कर्म जगत-हित के लिए तो उपयोगी होते हैं परन्तु उनसे नवीन कर्मों की उत्पत्ति नहीं होती है।

राग-द्वेष मिटाने का एक उपाय 'वोसिरामि' भी है, या यों कहें कि कर्म क्षय का एक उपाय वोसिरामि भी है। 'वोसिरामि' शब्द अर्द्ध मागधी व प्राकृत भाषा का शब्द हैं। इसके लिए संस्कृत भाषा में 'विस्मरामि' शब्द है 'विस्मरामि' शब्द का अर्थ है—'मैं' विस्मरण करता हुँ। 'विस्मरण' शब्द 'स्मरण' शब्द का विलोमार्थक है। स्मरण का अर्थ होता है—'याद रखना' अत: विस्मरण का अर्थ है 'याद न रखना' अर्थात् भूल जाना।

यह नियम है कि स्मरण उसी का रहता है जिसके साथ किसी न किसी प्रकार संबंध है। संबंध से हृदय पर प्रभाव अंकित होता है। प्रभाव उसी का अंकित होता है जिसके प्रति राग या द्वेष है। जैसे हम बाजार में होकर निकलते हैं तो हमें बाजार में कपड़े मिठाई, खिलौनों, पुस्तकों आदि की दुकानें दिखाई देती हैं और उनमें रखी हुई मिठाई वस्त्र खिलोने आदि वस्तुऐं भी दिखाई देती है। परन्तु बाजार में दिखाई देने वाली सब दुकानें व उनमें रखी हुई सब वस्तुएँ आकर्षण- विकर्षण है अर्थात् जिन्हें हम पसंद या ना पसंद करते हैं या यों

कहें जिनके प्रति हमारा राग द्वेष है। राग द्वेष उन्ही से होता है जिनसे हम प्रभावित होतें हैं। जिनसे हम प्रभावित नही होते, जिनके प्रति हम तटस्थ रहते है, उदा-सीन रहते है उनके प्रति हमारे हृदय में राग द्वेष नहीं होता। राग द्वेष न होने से उनका प्रभाव अंकित नहीं होता। प्रभाव अंकित नहीं होने से उनका स्मरण नहीं होता। जिसका स्मरण नहीं होता उसे विस्मरण करने की आवश्यकता ही नहीं होती।

किसी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, अवस्था, घटना आदि का प्रभाव अंकित होना ही संस्कार निर्माण होना है। संस्कार निर्माण होना ही कर्म-बंध होना है। किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के दिखने या देखने। कर्म नहीं बंधते परन्तु उनके साथ सुख-दुःख रूप संबंध जोड़ने से कर्म बंधते हैं।सुखात्मक संबध जोड़ने से राग और दुःखात्मक संबंध जोड़ने से द्वेष उत्पन्न होता है। यही संस्कार-निर्माण या कर्म-बंध का कारण है।

किसी वस्तु को मात्र देखना 'द्रष्टाभाव' है और उस दृश्यमान वस्तु, व्यक्ति आदि से सुख चाहना, दुःख मानना अर्थात् सुखी-दुःखी होना भोक्ताभाव है और उन्हें प्राप्त करने बनाये रखने अथवा दूर हटाने आदि के लिए प्रयास करना कर्त्ताभाव है। कर्त्ता-भोक्ता भाव राग-द्वेष होने के द्योतक हैं, कर्म-बंध होने के कारण हैं। यह नियम है कि द्रष्टाभाव में राग-द्वेष नहीं होता। जहां राग-द्वेष नही होता वहां समभाव होता है, स्वभाव होता है। जहां समभाव होता है वहां स्वभाव में स्थित रहना होता है वहां न प्रभाव अंकित होता है,न संस्कार-निर्माण होता है, न कर्म-बंध होता है और न संबंध स्थापित होता है। जिससे संबंध स्थापित नहीं होता उसका स्मरण नहीं रहता। इसके विपरीत जहां कर्त्ता-भोक्ता भाव है वहां संबंध स्थापित होता है। जहां संबंध है वहां बंधन है। यह बंधन ही कर्म-बंध है। यह बंध या संबंध ही स्मृति के रूप में उदय आता है।

जो यह नियम है कि जिससे बंधा हुआ है संबंध जोड़े हुए है उसे उसका स्मरण आता है। किसी वस्तु,व्यक्ति, घटना,दृश्य आदि का स्मंरण आना उसके साथ संबंध या बंध का द्योतक है। किसी का स्मरण तब रहता है जब तक उसके साथ किसी न किसी प्रकार का संबंध का बंध है। इस संबंध का विच्छेद करते ही उसका बंधन टूट जाता है फिर उसका स्मरण नहीं आता अर्थात् विस्मरण हो जाता है। यह विस्मरण होना बंधन टूटना है।

विस्मरण होना संबंध-विच्छेद होने का द्योतक है। संबंध -विच्छेद होना ही असंग हो जाना है। इसे ही त्याग कहा जाता है। त्याग में संयम और तप (संवर और निर्जरा) दोनों समाविष्ट है। विषय-कषाय रूप दोषों को निंदनीय व हेय जानकार उनकी पुनरावृत्ति न करने रूप व्रत ग्रहण करना संयम है और उनकी स्मृति भी न करने का दृढनिश्चय करना वोसिरामि है। संयम या व्रत ग्रहण से नवीन कर्मो का बंध होना रूकता है। वोसिरामि से पूर्वकृत कर्मो का, मुक्त भोगों का संबंध-विच्छेद होने से उनका तादात्म्य टूटता है जिससे उन कर्मो का क्षय होता है।

साधक का हित इसी में है कि घटना से मिलने वाली शिक्षा को ग्रहण करे और उस घटना को भूल जाय,विस्मरण कर दे। घटना की स्मृति से कर्म सजीव,सत्वयुक्त, सहज रहते

हैं फिर वे कर्म उदय होकर नवीन कर्मो के बंध के कारण बनते है। इस प्रकार घटना की स्मृति से कर्म प्रवाहमान रहते है। घटना की स्मृति से उन कर्मो का सिंचन होता रहता है जिससे वे हरे-भरे (सजीव) रहते हैं। घटना की विस्मृति से वे कर्म निर्जीव (नि:सत्व-निष्प्राण)होकर निर्जरित हो जाते हैं अर्थात् जैसे निर्जीव-सूखे पत्ते झड़ जाते हैं वैसे ही कर्म भी झड़ जाते हैं। यह आपेक्षिक दृष्टिकोण हैं अत: कर्म निर्जरित या क्षय करने का सबसे सुगम,सहज व सरल उपाय है घटनाओं को विस्मरण कर देना । यही वोसिरामि साधना हैं,कर्मो से मुक्ति पाने की साधना है॥ वोसिरामि साधना में संबंध-विच्छेद, असंगता, नि:संगता, निष्कामना, निर्ममता, निरहंकारता,त्याग निहित है।

'वोसिरामि' शब्द का दूसरा संस्कृत रूप 'व्युत्सर्जयामि' बनता है जिसका अर्थ है मैं व्युत्सर्जन, विसर्जन,व्युत्सर्ग करता हू। 'व्युत्सर्ग' शब्द संसर्ग शब्द का विलोम अर्थवाची है। संसर्ग का अर्थ है संग करना ,संबंध जोड़ना। अत: व्युत्सर्ग का अर्थ होता है संग छोड़ना, असंग होना, संबंध-विच्छेद करना। यह नियम है कि जिससे संबंध होता है उसी की स्मृति रहती है, उसी की याद आती है,यही बंधन है। अत: बंधन रहित होने का उपाय व्युत्सर्ग है, विसर्जन है,वोसिरामि है। वोसिरामि के बिना संबंध या बंध टूटना संभव नही है। तात्पर्य यह है कि बंधन रहित होने की, मुक्ति पाने की 'वोसिरामि' सरल ,सहज, सुगम साधना है जिसे अपनाने में मानव मात्र समर्थ एवं स्वाधीन है।

कृपया ध्यान देवें

प्रभावना का साधन शुद्ध होना जरूरी है

जैनधर्म अहिंसाप्रधान धर्म है। प्रत्येक श्रावक को अभक्ष्य वस्तु का त्याग करने के लिये कहा गया है। प्रभावना के माध्यम से हम साधर्मिक भक्ति करते हैं, अत: प्रभावना का साधन भी शुद्ध होना जरूरी है। आजकल प्रभावना में बिस्कीट बांटी जाती है जो कि अभक्ष्य की गिनती में ही आती है। उसमें भी अभी-अभी जो सर्कस बिस्कीट का आगमन हुआ है वह तो जोकर (मानव) के फोटो आकार की होने से बच्चों में भी अहिंसा की भावना कुंठित होती है। अत: हिंसा के भावों को उत्तेजन देने वाली ज्ञानावरणीय कर्म का बंधन करने वाली बिस्कीटों अथवा विशेष रूप से सर्कस बिस्कीटों की प्रभावना द्वारा आराधना नहीं विराधना होती है, अत: इनसे बचिये।

निवेदक — के. के. संघवी-थाने

जैन संस्कृति में अहिंसा

स्व. उपाध्याय श्री अमरमुनिजी

जैन-संस्कृति की संसार को जो सबसे बड़ी देन है, वह अहिंसा है। अहिंसा का यह महान् विचार, जो आज विश्व की शान्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन समझा जाने लगा है, और जिसकी अमोध शक्ति के सम्मुख संसार की समस्त संहारक शक्तियाँ कुण्ठित होती दिखाई देने लगी हैं, एक दिन जैन-संस्कृति के महान् उन्नयकों द्वारा ही हिंसा काण्ड में लगे हुए उन्मत संसार के सामने रखा गया था।

जैन-संस्कृति का महान सन्देश है कि कोई भी मनुष्य समाज से सर्वथा पृथक रहकर अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकता। समाज में घुल-मिल कर ही वह अपने जीवन का आनन्द उठा सकता है और दूसरे संगी-साथियों के जीवन को भी उठा सकता है। जब यह निश्चित है कि व्यक्ति समाज से अलग नहीं रह सकता, तब यह भी आवश्यक है कि वह अपने हृदय को उदार बनाए, विशाल बनाए, विराट् बनाए और जिन लोगों से खुद को काम लेना है, या जिनको देना है, उनके हृदय में अपनी ओर से पूर्ण विश्वास पैदा करे। जब तक मनुष्य अपने पार्श्ववर्ती समाज में अपनेपन का भाव पैदा न करेगा, अर्थात् जब तक दूसरे लोग उसको अपना आदमी न समझेंगें, तब तक समाज का कल्याण नहीं हो सकता। एक बार ही नहीं हजार बार कहा जा सकता है, कि नहीं हो सकता। एक-दूसरे का आपस में अविश्वास ही तबाही का कारण बना हुआ है।

संसार में जो चारों ओर दुःख का हाहाकार है, वह प्रकृति की ओर से मिलनेवाला तो मामूली-सा ही है। यदि सही अन्तर्निरीक्षण किया जाए, तो प्रकृति दुःख की अपेक्षा हमारे सुख में ही अधिक सहायक है। वास्तव में जो कुछ भी ऊपर का दुःख है, वह मनुष्य पर मनुष्य के द्वारा ही लादा हुआ है। यदि हर एक व्यक्ति अपनी ओर से दूसरों पर किए जाने वाले दुःखों को बन्द कर दे, तो यह संसार आज ही नरक से स्वर्ग में बदल सकता है।

श्रमण भगवान् महावीर ने तो राष्ट्रों में परस्पर होने वाले युद्धों का हल भी अहिंसा के द्वारा ही बतलाया है। उनका आदर्श है कि धर्म के द्वारा ही विश्व भर के प्रत्येक मनुष्य के हृदय में यह भावना जगा दे कि वह 'स्व' में ही संतुष्ट रहे, 'पर' की ओर आकृष्ट होने का कभी भी प्रयत्न न करे। पर की ओर आकृष्ट हो ने का अर्थ है दूसरों के सुख - साधनों को देखकर लालायित होजाना और उन्हें छीनने का दुःसाहस करना।

हाँ तो जब तक नदी अपने पाट में प्रवाहित होती रहती है, तब तक उससे संसार को लाभ ही लाभ है, हानि कुछ भी नहीं। ज्योंहि वह अपनी सीमा से हटकर आस-पास के प्रदेश पर अधिकार जमा कर बाढ़ का रूप धरण कर लेती है, तो संसार में हाहाकार मच जाता है, प्रलय का दृश्य खड़ा हो जाता है। यही दशा मनुष्यों की है। जब तक सब-के-सब मनुष्य अपने-अपने 'स्व' में ही प्रभावित रहते हैं, तब तक कोई अशान्ति नहीं है, लड़ाई झगड़ा नहीं है। अशान्ति और संघर्ष का वातावरण वहीं पैदा होता है, जहाँ कि मनुष्य 'स्व' से बाहर फैलना शुरू करता है, दूसरे के अधिकारों को कुचलता है और दूसरों के

जीवनोपयोगी साधनों पर कब्जा जमाने लगता है।

प्राचीन जैन-साहित्य उठाकर आप देखें। श्रमण भगवान् महावीर ने इस दिशा में बड़े स्तुत्य प्रयत्न किए हैं। वे अपने प्रत्येक गृहस्थ शिष्य को पाँचवे अपरिग्रह व्रत की मर्यादा में सर्वदा 'स्व' में ही सीमित रहने की शिक्षा देते हैं। व्यापार, उद्योग आदि क्षेत्र में उन्होंने अपने अनुयायियों को अपने न्याय से प्राप्त अधिकारों से कभी भी आगे नहीं बढ़ने दिया। प्राप्त अधिकारों से आगे बढ़ने का अर्थ है, अपने दूसरे साथियों के साथ संघर्ष में उतरना।

जैन-संस्कृति का अमर आदर्श है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी उचित आवश्यकता के लिए ही उचित साधनों का सहारा लेकर उचित प्रयत्न करे। आवश्यकता से अधिक किसी भी सुख-सामग्री का संग्रह करना, जैन-संस्कृति में चोरी है। व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र क्यों लड़ते हैं? इसी अनुचित संग्रह वृत्ति के कारण दूसरों की जीवन की, जीवन के सुख-साधनों की उपेक्षा करके मनुष्य कभी भी सुख-शान्ति नहीं प्राप्त कर सकता। अहिंसा के बीज अपरिग्रह-वृत्ति में ही खोजे जा सकते हैं। एक अपेक्षा से कहें, तो अहिंसा और अपरिग्रह-वृत्ति दोनों पर्यायवाची शब्द हैं।

आत्म-रक्षा के लिए उचित प्रतिकार के साधन जुटाना, जैनधर्म के विरुद्ध नहीं है। परन्तु आवश्यकता से अधिक संग्रहित एवं संगठित शक्ति, अवश्य ही संहार लीला का अभिनय करेगी, अहिंसा को मरणोन्मुखी बनाएगी। अतएवं आप आश्चर्य न करे कि पिछले कुछ वर्षों में जो शस्त्र-संन्यास का आन्दोलन चल रहा था, प्रत्येक राष्ट्र को सीमित युद्ध-सामग्री रखने को कहा जा रहा था, वह जैन तीर्थंकरों ने हजारों वर्ष पहले चलाया था। आज जो काम कानून द्वारा किया जाता हैं, उन दिनों वह उपदेश द्वारा किया जाता था। भगवान् महावीर ने बड़े-बड़े राजाओं को जैनधर्म में दीक्षित किया था और उन्हें नियम दिया गया था कि वे राष्ट्र रक्षा के काम में आने वाले शस्त्रों से अधिक संग्रह न करें। साधनों का आधिक्य मनुष्य को उद्दण्ड बना देता है। प्रभुत्ता की लालसा में आकर वह कहीं न कहीं किसी पर चढ़ दौड़ेगा और मानव संसार में युद्ध की आग भड़का देगा। इस दृष्टि से जैन तीर्थंकर हिंसा के मूल कारणों को उखाड़ने का प्रयत्न करते रहे हैं।

जैन तीर्थंकरों ने कभी भी युद्धों का समर्थन नहीं किया। जहाँ अनेक परम्पराओं के धर्माचार्य साम्राज्यवादी राजाओं के हाथों की कठपुतली बनकर युद्ध के समर्थन में लगे हुए थे, युद्ध में मरने वालों को स्वर्ग का लालच दिखा रहे थे, राजा को परमेश्वर का अंश बताकर उसके लिए सब कुछ, अर्पण कर देने का प्रचार कर रहे थे, वहाँ जैन तीर्थंकर इस बात का विरोध करते रहे हैं। 'प्रश्न व्याकरण' और 'भगवती सूत्र' युद्ध के विरोध में बहुत कुछ कहते हैं। यदि थोड़ा-सा कष्ट उठाकर देखने का प्रयत्न करेंगे तो बहुत कुछ युद्ध-विरोधी विचार-सामग्री प्राप्त कर सकेंगे। आप जानते हैं, मगधाधिपति अजातशत्रु (कुणिक) भगवान् महावीर का कितना अधिक उत्कृष्ट भक्त था। 'औपपातिक' सूत्र में उसकी भक्ति का चित्र चरम-सीमा तक पहुँचा दिया है। प्रतिदिन भगवान् के कुशल समाचार जानकर फिर अन्न-जल ग्रहण करना, कितना उग्र नियम है। परन्तु वैशाली पर कुणिक द्वारा किए गए आक्रमण का भगवान् ने जरा भी समर्थन नहीं किया। प्रत्युत नरक का अधिकारी बताकर उसके पापकर्मों का भण्डाफोड़ कर दिया। अजातशत्रु इस पर रुष्ट भी हो जाता है, किन्तु

भगवान् महावीर इस बात की कुछ भी परवाह नहीं करते। भला पूर्ण अहिंसा के अवतार रोमाँचकारी नर-संहार का समर्थन कैसे कर सकते थे?

जैन तीर्थंकरों की अहिंसा का भाव आज की मान्यता के अनुसार निष्क्रयता रूप नहीं था। वे अहिंसा का अर्थ—प्रेम, परोपकार, विश्व-बन्धुत्व करते थे। 'स्वयं आनन्द से जीओ और दूसरों को जीने दो,' जैन तीर्थंकरों का आदर्श यहीं तक सीमित न था। उनका आदर्श था—'दूसरों के जीने में मदद करो, बल्कि अवसर आने पर दूसरों के जीवन की रक्षा के लिए अपने जीवने की आहुति भी दे डालो।' वे उस जीवन को कोइ महत्त्व न देते थे, जो जन सेवा के मार्ग से सर्वथा दूर रहकर एक मात्र भक्तिवाद के अर्थ-शून्य क्रियाकाण्डों में ही उलझा रहता है।

भगवान् महावीर ने तो एकबार यहाँ तक कहा था कि मेरी सेवा करने की अपेक्षा दीन-दुखियों की सेवा करना कहीं अधिक श्रेयस्कर है। मैं उनसे प्रसन्न नहीं, जो मेरी भक्ति करते हैं, माला फेरते हैं। मैं तो उन पर प्रसन्न हूँ, जो मेरी आज्ञा का पालन करते हैं। मेरी आज्ञा है—'प्राणी मात्र को सुख, सुविधा और आराम पहुँचाना।' भगवान् महावीर का यह ज्योतिर्मय संदेश आज भी हमारी आँखों के सामने है, यदि हम थोड़ा-बहुत-सत्प्रयत्न करना चाहें। ऊपर के सन्देश का सूक्ष्म बीज यदि हममें से कोई देखना चाहें तो उत्तराध्ययन की सर्वार्थसिद्धि वृत्ति में देख सकते हैं।

अहिंसा के अग्रगण्य संदेश वाहक भगवान् महावीर हैं। आज दिन तक उन्हीं के अमर संदेशों का गौरव-गान गाया जा रहा है। आपको मालूम है? आज से ढाई हजार वर्ष पहले का समय, भारतीय संस्कृति के इतिहास में एक महान् अंधकार पूर्ण युग माना जाता है। देवी-देवताओं के आगे पशुबली के नाम पर रक्त की नदियाँ बहाई जाती थी। मांसाहार और सुरापान का दौर चलता था। अस्पृश्यता के नाम पर करोड़ों की संख्या में मनुष्य अत्याचार की चक्की में पिस रहे थे। स्त्रियों को भी मनुष्योचित अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। एक क्या, अनेक रूपों में सब ओर से हिंसा का विशाल साम्राज्य छाया हुआ था। भगवान् महावीर ने उस समय अहिंसा का अमृतमय संदेश दिया, जिससे भारत की कायापालट हो गई। मनुष्य राक्षसी भावों से हटकर मनुष्यता की सीमा में प्रविष्ट हुआ। क्या मनुष्य, क्या पशु, सबके हृदय में उनके प्रति प्रेम का सागर उमड़ पड़ा। अहिंसा के संदेश ने सारे मानवीय सुधारों के महल खड़े कर दिए। दुर्भाग्य से आज वे महल फिर गिर रहे हैं। जल, थल, नभ अभी भी खून से रंगे जा रहे हैं, और भविष्य में इससे भयंकर रंगने की तैयारियाँ हो रही हैं। तीसरे महायुद्ध का स्वप्न अभी देखना बन्द नहीं हुआ है। परमाणु बम के अविष्कार की सब देशों में होड़ लग रही है। सब ओर अविश्वास और दुर्भाव चक्कर काट रहे है।अस्तु, आवश्यकता है—आज फिर जैन-संस्कृति के, जैनाचार्यों के "अहिंसा परमोधर्मः" की। मानव जाति के स्थायी सुखों के स्वप्नों को एक मात्र अहिंसा ही पूर्ण कर सकती है, और कोई नहीं।

"अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परम्।"

● मुनिश्री रत्नसेनविजयजी

सत्संग-महिमा

बैटरी को चार्ज किए बिना
उसमें करंट current
पैदा नहीं होता है।
उसी प्रकार
जीवन की बैटरी को
सत्संग से चार्ज करना चाहिये।
सत्संग से जीवन में
अपूर्व शक्ति पैदा होती है।
आत्मा की
सुषुप्त-शक्तियों को
जागृत करने की ताकत
सत्संग में ही है।
दुर्जनों का संग
जीवन-बाग में
आग लगाने वाला होता है।
सज्जनों का संग
जीवन-बाग को पल्लवित
करने वाला होता है।

दुर्जन से दूर रहो

'सड़े हुए आम के साथ रहने से
अच्छे आम में भी सड़न आ जाती है।'
बस!
जीवन में दुर्जन का संग भी
अपने पवित्र-जीवन में सड़न
पैदा कर सकता है।
अतः
जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए
दुर्जन के संग से
सदैव दूर रहना
कहावत है - 'सूखी लकड़ी के साथ
भीगी लकड़ी भी जल जाती है।'
दुर्जन के संग से
सज्जन को भी मार खानी पड़ सकती है,
अतः मैत्री करो तो
सज्जनों से करना।
दुर्जन-मित्रों से कोसों दूर रहना।
उनका भूल से भी संग मत करना।

महावीर-वाणी

- वस्तुस्वरूप को यथार्थ रुप से जानने वाले जिन भगवान् ने ज्ञान, दर्शन. चारित्र और तप को मोक्ष का मार्ग बताया है।

- स्वाध्याय सब भावों (विषयों) का प्रकाश करनेवाला है।

– मधुकर

क्या आप जानते हैं?

- भारत के प्रधानमंत्रीजी द्वारा दिये गये आंकड़ों के अनुसार देश में प्रति ५४ मिनट में एक वलात्कार एवं प्रति दो घंटों में एक दहेज कारण मृत्यु होती है। हर ४३ मिनट में एक अपहरण की घटना होती है। स्त्री के प्रति देश में कितनी पूज्य भावनायें थी, वहाँ इन आंकडों से लगता है कि कानून व्यवस्था और नीति नियम कितनी निची कक्षा में आ गये हैं।
- जिन्दा कस्तूरीमृग को पकड़कर उसकी नाभि में से इतनी वेरहमी से कस्तुरी निकाली जाती है कि अधिकांश मृग की मृत्यु ही हो जाती है। लेकिन कस्तुरी सेंट (सुगंधी) की खुशवु में हम उस खौफनाक कत्ल को भूल जाते है।
- अकेले अमेरिका में ही ६८,००० रसायनों का व्यापारिक उपयोग होता है। कलकारखानों की मशीनों का शोरगुल वाहनों की आवाज, या कैसा भी तेज शोरगुल ध्वनि प्रदुषण है। ध्वनि माप आविष्कारकर्ता अलेक्झेंडर के अनुसार मनुष्य की सामान्य सुनने की क्षमता ७० से ८० डी.बी. तक है। इससे अधिक आवाज उसे कष्ट पहुंचाती है। जवकि आज का शोर १९० डी.बी. तक है।
- वैज्ञानिकों की खोज है कि तेज कोलाहल में लम्वे अर्से तक रहने पर शरीर की रक्त वाहिनी नलिकाएं संकुचित हो जाती हैं। रक्त में कोलोस्ट्रोल की मात्रा वढ़ जाती है जिससे दिल की धड़कन वंद होने या मस्तिष्क नाड़ी फट जाने तक की स्थिति आ जाती है। ध्वनि प्रदुषण से गुस्सा, ध्यानांतरण, कार्य दक्षता में कमी व मानसिक थकान होती है।
- एक आंकड़े के मुताविक प्रदूषण से प्रभावित होकर प्रतिवर्ष १५ लाख वच्चे पेचिस और दस्त की बीमारियों से ग्रसित होकर मौत की चपेट में आ जाते हैं।
- आपमें से वहुत से उपभोक्ता अहिंसक, जीवप्रेमी, करूणा और दया की भावना से पूर्ण भी होंगे· लेकिन अक्सर मालुम नहीं होता कि आपके द्वारा इस्तेमाल की गई वस्तुओं के पीछे कितने निरीह मूक प्राणियों का दर्द और पीड़ा छिपी हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार आदमी के फैशन और शौक के लिए प्रतिदिन ५ करोड़ वेवस लाचार प्राणियों का कत्ल किया जाता है।
- एक रेशम की साड़ी के लिए ३ हजार से ६ हजार कीड़ों को गरम पानी में उवाला जाता है तव तैयार होती है आपकी सिल्क की एक साड़ी और आपके पास कुल कितनी रेशमी साड़ियां है?
- सावुन मल-मलकर नहाकर हम अपने आप को तरोताजा महसूस करते हैं। लेकिन ये सावुन वनाने के लिए अधिकांश उत्पादक जानवरों की चर्वी का उपयोग करते हैं।
- दांतों को रोज सुवह-शाम हम टूथपेस्ट लगाकर खूव मांजते हैं। इन टूथपेस्ट में से अधिकांश में जानवरों की हड्डियों का चूर्ण इस्तेमाल होता है।
- ओरल पेथोलोजीस्टो की राष्ट्रीय परिषद ने निष्कर्ष निकाला है कि तम्वाकू को पान के साथ या सीधे मुंह में डालकर अयोग्य रीति से एवं ज्यादा समय मुंह में रखने से मुंह के केन्सर होने के ढेर सारे किस्से सामने आये हैं।

- धर्ममित्र

तप - आत्मशोधन की प्रक्रिया ?

□महेन्द्र जे. संघवी

'इच्छा-निरोधस्तप:' अर्थात् इच्छाओं का निरोध ही तप है। तप का अर्थ निषेधात्मक नहीं बल्कि विधेयात्मक है। वह विसर्जन नहीं सृजन करता है। शरीर को कृश करना तप नहीं है। आत्मा के निकट पहुँचना ही तप है। आज दुनिया में जितना भी विवाद चल रहा है उसका मूल कारण मनुष्य की अनन्त और असीम इच्छाएँ हैं। इन इच्छाओं को जड़ मूल से विनष्ट कर शान्ति की ओर अग्रसर होना ही तप का मूल उद्देश्य है।

आत्मोत्थान की सारी की सारी बातें तप की गोद में पली हैं, विकसित हुयी हैं और यौनावस्था को प्राप्त किया है। नैतिक जीवन की पूर्णता के लिये त्याग और तप मूलक जीवन की नितान्त आवश्यकता है। बिना तप के तो नैतिक जीवन भी अपनी पूर्णता को प्राप्त नहीं करता फिर आत्मशोधन की प्रक्रिया में तो बिना तप का सहारा लिये पूर्णता प्राप्त करने की कल्पना करना ही महज एक छलावा है।

तप के द्वारा मनुष्य के अंतरंग में एक विशेष प्रकार की लहरें उठने लगती हैं। ये लहरें शरीर को आत्म शक्ति प्रदान करती है। तप के द्वारा मनुष्य में विशिष्ट प्रकार की उर्जा संग्रहित हो जाती है और मनुष्य उस ऊर्जा के माध्यम से आत्मोत्थान की ओर कदम बढ़ाता जाता है। इसी तप के माध्यम से मनुष्य अपने परम लक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है कि —

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिव्हाइ, तवेण परिसुज्झई।।

अर्थात्—ज्ञान से जाना जाता है, दर्शन से श्रद्धा होती है, चारित्र से कमास्त्रवों का निरोध होता है और तप से आत्मा की शुद्धि होती है।

एक उदाहरण है कि एक आदमी घी बनाने के लिये मक्खन को पपा रहा है। उसका उद्देश्य मक्खन को तपाना है, बर्तन को नहीं, लेकिन चूंकि मक्खन, बर्तन में है अत: बर्तन को तपाये बिना मक्खन तप नहीं सकता। ठीक उसी तरह आत्मशुद्धि के लिये देह शुद्धि जरूरी है और देह शुद्धि बिना तप के नहीं हो सकती।

निम्नलिखित बारह प्रकार के तप (छ: अभ्यंकर और छ: बाह्य) आत्मशोधन की प्रक्रिया में सहायक हो सकते हैं। —

बाह्य तप : अनशन, ऊनोदरी, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, प्रतिसलीनता और कायक्लेश।

अभ्यंतर तप : प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और व्यत्सुर्ग।

१) **अनशन :** अनशन और लंघन में बहुत अंतर है। लंघन, लंघन है, वह अनशन नहीं हो सकता क्योंकि लंघन में

अनिच्छा हो सकती है, लेकिन उपवास या अनशन में स्वेच्छा और संयम होता है। उपवास करने से कमजोरी आती है यह मान्यता गलत है क्योंकि शरीर भी एक मशीन है और मशीन को चलते चलते बीच में विश्राम की जरूरत अवश्य होती है। उपवास से जीवन संतोषी और संयमित बनता है, यही संयमित जीवन मोक्ष के समीप लाकर खड़ा करता है।

२) **ऊनोदरी :** अनशन और ऊनोदरी दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक है। भूख से कम खाना ही ऊनोदरी तप कहलाता है। इससे रसना को लगाम मिलती है। ऊनोदरी तप से संयम, संतोष, सहिष्णुता, समता और स्मृति जैसे गुण विकसित होते हैं। ऊनोदरी तप से तन के साथ-साथ मन पर भी काबू हो जाता है।

३) **वृत्तिपरिसंख्यान :** 'मेरे द्वारा इतनी संख्या में वस्तुओं का उपयोग होगा' यह निश्चित करना अर्थात् वस्तु संख्या नियोजित करना ही वृत्ति परिसंख्यान है। इसे भिक्षाचरी भी कहते हैं। जिस तरह गाय चारे को बिना उन्मूलित किये अपना आहार ग्रहण करती है उसी प्रकार साधक को भी कम से कम में काम चलाना चाहिये।

४) **रसपरित्याग :** दूध, दही, घी, तेल, गुड़ और तले हुये पदार्थों जैसे विकारवर्धक पदार्थों को भोजन में शामिल न करके सादा भोजन करना ही रसपरित्याग है। इससे स्वाद पर संयम मिलता है और अस्वाद का अभ्यास होता है।

५) **प्रतिसंलीनता :** यह अन्तर्मुख साधना है। इसे विविक्त शैयासन भी कहा गया है। 'प्रति' का अर्थ 'विपरित' और 'संलीनता' अर्थात् 'ठीक तरह से लीन' अतः प्रतिसंलीनता का अर्थ हुआ इन्द्रियों की वृत्ति को विषयासक्ति से दूर कर आत्मोत्थान की दिशा में प्रवृत्त करना। यह भी आत्मोत्थान की मंजिल तक पहुँचने का एक प्रशस्त मार्ग है।

६) **कायक्लेश :** इसका अर्थ काया को कष्ट देना नहीं बल्कि आत्मा को पहचानना है, उसे निकट से देखना है। यह जानना है कि शरीर, शरीर है आत्मा नहीं और आत्मा, आत्मा है शरीर नहीं। आत्मा और शरीर दोनों भिन्न-भिन्न हैं। दोनों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है और अपनी अपनी अलग परिभाषाएँ। हर जीव को देह में आसक्ति तो होती ही है, कभी-कभी तो आसक्ति इतनी अधिक होती है कि जीव भ्रमित होकर शरीर को ही आत्मा मानने लगता है। देह पर से आसक्ति का कम करना ही तप का मुख्य उद्देश्य है। इससे साधक क्रमशः आत्मा के नजदिक अपने कदम बढ़ाता जाता है और उसे अपूर्व शान्ति का अहसास होता है उसके मन में समभाव का सागर हिलोरे मारने लगता है।

७) **प्रायश्चित :** आत्मा के पापकर्मों का नाश करे, कर्म-मैल से मलिन आत्मा को समता रस में नहलाकर पवित्र करे और हुये अपराधों की शुद्धि कराये उसे प्रायश्चित कहते हैं। साधक अपनी भूलों और अपराधों को स्वीकार करता है और पश्चाताप कर उनसे पिछे हटता है तथा ऐसा अपराध फिर न करने का संकल्प करता है।

८) **विनय :** मोटे तौर पर इसका अर्थ बड़ों के प्रति आदर भाव रखकर उनकी आज्ञा का पालन करना है। जहाँ अहंकार होगा, वहाँ विनय कभी नहीं हो सकता। पर जैसे प्रकाश के आते ही अँधेरे को भागना पड़ता है उसी तरह से विनय गुण के आते ही अहंकार छू-मंतर हो जाता है, जिससे सरलता/नम्रता का प्रादुर्भाव होता है।

९) **वैयावृत्त्य :** नि:शंक और नि:स्वार्थ समर्पण भाव से सेवा करना वैयावृत्य कहलाता है। यह पूर्ण रूप से समर्पण भाव का द्योतक है। इसमें सेवा के पिछे किसी फल की आशा नहीं होती क्योंकि फल की आशा से की हुयी सेवा में स्वार्थ भावना आ जाती है जिससे सेवा का महत्त्व गौण हो जाता है। सेवा में नि:शंक समर्पण भाव की जरूरत होती है।

१०) **स्वाध्याय :** स्वयं को जानना, परखना और स्वयं में झाँकना ही स्वाध्याय तप है। इस तप में साधक का निर्ग्रन्थ अथवा निर्ग्रन्थता के नजदीक रहना आवश्यक हो जाता है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, सदाचरण और अपरिग्रह आदि में मन रमना चाहिये, इनके बिना सही मायने में स्वाध्याय संभव नहीं।

११) **ध्यान :** जब हम अपने चंचल मन और इन्द्रियों को दुनिया की झंझटो से मुक्त कर एक केन्द्र बिन्दु पर टिकाते हैं तो उससे निरंतर एक विशेष प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है, उस अवस्था को ध्यान कहते हैं। यह आत्मदर्शन की साधना है, मोक्ष तक पहुँचने की मजबूत सीढ़ी है और मन को निर्मल करने का अचूक और अमोघ शस्त्र है।

१२) **व्युत्सर्ग :** व्युत्सर्ग, त्याग का पर्याय वाची शब्द है। इसमें साधक बाहरी उपकरणों के साथ कषाय जैसे आंतरिक दुर्भाव का भी त्याग करता है और क्रमश: मोक्ष के राज मार्ग पर अपने कदमों को आहट प्रदान करता है।

इस प्रकार तप की साधना, साधक को मोक्ष मार्ग पर पहुँचाने में सेतू का काम करती है।

★ यदि आप के पास ज्ञान की गहराई नहीं है, भले ही क्रियाओं का विस्तार हो, तो संभावना है कि आप क्रियामार्ग से कभी भी फिसल जाओगे। तालाब जल्दी सूख जाता है...धूप गिरी नहीं और तालाब सूखा नहीं। विषय कषायों की धूप में कई क्रियावान् सूख गये....ज्ञान का गहरा कुआ सूखता नहीं, भयंकर गर्मी में भी वह शीतल पानी देता रहता है।

भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में – पशुहत्या व्यापार नहीं अपराध है

– श्री. पन्नालाल सुंदड़ा

भारत विश्व का सबसे बड़ा गणतान्त्रिक देश है – यह सोचकर हर नागरिक का सीना फूल उठता है। एवं यह सत्य है कि भारत का नागरिक अपने मन की बात देशहित में कह सकता है तथा देर सबेर उस पर सरकार का ध्यान आकर्षित होने की उम्मीद भी कर सकता है। उसके दुख दर्दों की व्यथा संसद में उनके प्रतिनिधियों के द्वारा उठाई जाती है। समाज की उन्नति के लिये सरकार ने जहाँ बहुत से महकमे बनाए वहीं योजना आयोग भी बनाया जिसकी मुख्य भूमिका गणतान्त्रिक सरकार का मार्गदर्शन कर देश को उन्नतिशील बनाना है।

किन्तु क्या यह गणतन्त्र सिर्फ मनुष्यों के लिये है या इस धरातल पर रहनेवाले पशु–पक्षी, जलचर एवं थलचरों के लिये भी हैं। जहाँ तक़ भारतीय संविधान का प्रश्न है, हमारे संविधान के मतानुसार केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों का एक मात्र उद्देश्य कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना ही है। एवं इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक है कि शासन सद्‌गुणों को बढ़ावा देनेवाले कदम उठाये न कि विकार उत्पन्न करनेवाले।

हत्या चाहे वह किसी जीव की हो या मनुष्य की सदा से ही हमारी सभ्यता और परम्परा के अन्तर्गत एक घोर अपराध माना गया है। पशुओं को भोजन के लिये मारना न सिर्फ उनका दुरुपयोग है बल्कि यह देश को पशुधन से वंचित कर दरिद्रता एवं प्रदुषण के भयावह वातावरण में भी धकेलता है। साथ ही साथ पशु का पान कर मनुष्य पशुवत व्यवहार करने लगता है और इस प्रकार समाज को पाश्विक प्रवृत्तियों से नरकतुल्य बना देता है। आज यदि चारों तरफ़ पाश्विक प्रवृत्तियाँ बढ़ते हुए खून खराबे के रूप में ताण्डव नृत्य कर रही हैं तो उसका मुख्य कारण लाखों पशुओं को प्रतिदिन क्रूरतापूर्ण तरीकों से मारकर उनका उपयोग भोजन के रुप में करना ही है। इसीलिये हमारे मनीषियों ने कहा है, 'जैसा खाय अन्न वैसा होय मन'। सिखों के धर्म ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में कहा गया है कि 'जो रत लग्गे कपड़े जामा होए पलीत। जे रत पीवें मांस तिन क्यों निर्मल चीत'। 'भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में इसीलिये निर्देश दिया है, 'माहिस्यात्रसर्व भूतानी' अर्थात जीव जन्तुओं का वध न करो क्योंकि मेरा अंश प्रत्येक जीव में है। कुरान एवं बाइबिल में भी पशुपक्षियों पर हिंसा न करने के लिए कहा गया हैं।

किन्तु दुर्भाग्यवश संविधान की एक खामी के कारण जिसमें यह कहा गया है कि किसी भी व्यक्ति को उसके कार्य से वंचित नहीं करना चाहिये के अन्तर्गत दुर्भाग्यवश पशुहत्या भी एक कार्य या उद्योग माना जाने लगा। किन्तु पशुहत्या व्यापार या वाणिज्य नहीं हो सकता। यदि पशुहत्या वाणिज्य या व्यापार है तो मनुष्य हत्या वाणिज्य या व्यापार क्यों नहीं, यदि पशुओं की हत्या कर देश को अधिक हानि पहुंचाना व्यापार है

तो फिर स्मगलिंग, जुआखोरी, चोरी और डकैती व्यापार क्यों नहीं। यदि पशुओं के साथ कृत्रिम गर्भाधन कर उनसे प्रजनन करवाना व्यापार है तो फिर वैश्यावृत्ति व्यापार क्यों नहीं।

उपरोक्त प्रश्नों का एकमात्र जवाब यही है कि मनुष्य अपने आप को संसार का सर्वशक्तिमान जीव समझता है, वह दयाभावना विहिन अपने समकक्ष किसी को भी जीने देना नहीं चाहता। वह एक निर्दयी, निरंकुश शासक की तरह पशुओं को गुलामों की तरह रखना, मारना एवं दुरुपयोग करना चाहता है। उसके हृदय में पशुओं के प्रति वह सद्भावना जो उसे अपने गूंगे व बहरे भाई के प्रति होनी चाहिये थी, नहीं है। वह भूल गया है कि हम किसी की कब्र पर खुशियां नहीं मना सकते। वह यह भी भूल गया है कि हम किसी को मारकर स्वयं भी जिन्दा नहीं रह सकते। उसने शायद अपनी सूझबूझ को तिलांजली दे दी है एवं यह सोचने लगा है कि यह धरातल सिर्फ़ मनुष्यों के लिये बना है। उसने अपना वह हृदय, जो दूसरों के दुख से द्रवित होता था, एवं कमजोरों की सहायता करने को प्रेरित करता था, खो दिया है।

आज का मनुष्य बिना हृदय के सिर्फ मस्तिष्क धारण किये हुए है। उसकी स्थिति हृदय विहिन मनुष्य की है जो चारों ओर बुराइयों से घिरा हुआ है। ऐसी स्थिति में यदि हमारा देश कुछ और वर्षों तक चला तो शायद हमें कुछ वैज्ञानिक उपलब्धियां तो मिल जाएं किन्तु सच्चा सात्विक मनुष्य दुर्लभ हो जायेगा।

इसलिए यदि हम सौहाद्रपूर्ण, सुगठित और संवेदनाशील सामाजिक वातावरण में जीना चाहते हैं तो हमें पशुहत्या एक उद्योग नहीं बल्कि अपराध मानना होगा। भारतीय संविधान को देश और समाज के हित में यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि पशु हत्या उद्योग या व्यापार नहीं, अपराध है।

भारतीय गणतंत्र में मनुष्य, पशु एवं पक्षी सभी को समान रुप से जीने का अधिकार है, यह देश सिर्फ मनुष्यों के लिए नहीं बल्कि सभी प्राणियों के लिये है जिसकी संरचना प्रकृति ने बहुत ही सूझबूझ से की है।

क्षणिकाएँ

आज के आदमी के
अधरों पर अमृत
हृदय में हलाहल है
उपर से जितना शान्त
अन्तरंग में
उतना ही कोलाहल है

उनका मानना है कि –
धर्म उनके घर का
व्यापार है
और
वे धर्म के ठेकेदार हैं

मुनि श्री तरूण सागर

'भक्ष्य-अभक्ष्य : विकल्प की खोज संगोष्ठी' आयोजित की जाये !

डॉ. नेमीचंद जैन

कारण : इस तरह की संगोष्ठियों के आयोजन की आवश्यकता क्यों है ?

१. संसाधित खाद्यों की संख्या और उनका विस्तार दिनोंदिन बढ़ रहा है। मल्टीनेशनल (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों के आने से खतरा और अधिक बढ़ जाएगा। प्रोसेस्ड अर्थात् संसाधित खाद्य पदार्थ पौष्टिकता की दृष्टि से तो निःसत्व हो ही जाते है। हिंसा-अहिंसा की दृष्टी भी उन्हे तैयार करने में नहीं होती। ज्यादातर कम्पनियाँ मांसाहार और शाकाहार दोनों तैयार करती है।

२. पैक्ड खाद्यों की संख्या भी बढ़ी है। पैकेजिंग में भी अहिंसा की दृष्टि लुप्त रहती है। इसके कारण भी घटिया दर्जे के खाद्य उपभोक्ता को मिलते है। म्याद का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

३ 'जंक' शब्द अंग्रेजी में उस पदार्थ के लिए काम में आता है जिसकी प्रोसेस या बैकिंग में लगभग जान ही निकल जाती है। उसकी मौलिकता नष्ट हो जाती है। मूल पदार्थ की गुणवत्ता नष्ट हो जाती है। गेहूँ से मैदा, मैदा से बिस्किट्स, केक आदि इसी तरह के खाद्य है। इनमें भी हिंसा होती है।

४. 'फास्ट फूड' अर्थात् तुरता आहार। अवकाश न होने और प्रमाद के कारण बाज़ार में मिलने वाले पके-पकाये खाद्य पदार्थ इसके अन्तर्गत आते हैं। बेकरी आइटम्स इसी के अन्तर्गत होते हैं। अचार आदि भी इसी में आते हैं। 'मेगी' आदि इसी प्रकार के खाद्य हैं। स्वच्छता, अहिंसा, स्वास्थ्य आदि की दृष्टि से इस तरह के खाद्यों से बचना जरुरी है

५. हिंसा-अहिंसा के विवेक का भी लोप उत्तरोत्तर होता जा रहा है। शुद्ध-अशुद्ध की बात तो कोसों दूर होती है बल्कि कहां किस कार्य में कितनी हिंसा हो रही है इस पर भी हमारा ध्यान नहीं जा रहा है। इस तरह के विवेक की वापसी बहुत जरुरी है।

६. धर्म को आज हमने गौण कर लिया है। व्यसन-मुक्ति की ओर हमारा ध्यान नहीं है। समृद्धि के कारण भी हम क्या खायें और क्या नहीं, क्या पहिनें और क्या नहीं, किस वस्तु का उपयोग करें और किस वस्तु का नहीं इस तरह का सांस्कारिक क्षरण के शिकार हम लगातार बने हुए हैं। यह चिन्ता का विषय है।

७. करुणा की भावना लगभग लुप्त हुई है। क्रुरताएँ उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। हमारी संवेदनशीलता भी अपेक्षया काफी कम हो गयी है अतः हमें करुणा की भावना को पुनरुज्जीवित करना है और देखना है कि वह हमारे जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में प्रकट प्रतिबिम्बित है। इसके लिए हमें अविलम्ब और प्रभावी कदम उठाने होंगे। संगोष्ठियों के आयोजन इस मानसिकता की संरचना में हमारी मदद कर सकते हैं।

कर्तव्य : ऐसे संकटापन्न क्षणों में हम क्या करे ?

१. लोगों को अधिकृत/प्रामाणिक जानकारियाँ उपलब्ध करायें। पूरे देश में कम-से-कम पांच सूचना केन्द्र स्थापित करें। इन केन्द्रों को अधिकृत/संपुष्ट जानाकारियों से लेस करें।

२. समाज में विवेक जगाने के लिए सभाएँ करें। मंदिरो में, स्वाध्याय-स्थलों में, सार्वजनिक सभागारो में - जहाँ भी संभव हो स्वस्थ/अनुकूल जनमत जगाये। पुस्तकें लिखें, प्राज्य पुस्तको का व्यापक प्रचार/प्रसार करें। दृश्य श्रण्य दोनों तकनीकों और माध्यमों का उपयोग करें।

३. परिवार से ले कर समाज/ग्राम-नगर तक धार्मिक संस्कारों के पुनरुज्जीवन का भरपुर प्रयास करें। धर्म की रचनात्मक वृत्तियों का लोटाना इतिहास के इस मोड़ पर बहुत जरुरी है।

४ शाकाहार की उपयोगिता/उपादेयता/वैज्ञानिकता/गुणवत्ता/स्वाभाविकता का भरपुर प्रचार करें। यह काम इस समय तन-मन-धन से अविलम्ब किया जाना चाहिये।

५ करुणा और दया की भावना को जगायें। वह काम शिशुओं से शुरु करें। स्कूलों में 'जीवदया-मण्डल' (कांइडनेस क्लबे) स्थापित करने के प्रयत्न करें।

संगोष्ठी के विषय

१ भक्ष्य-अभक्ष्य : कसौटियाँ (स्वरुप/निरुपण)

२. भक्ष्य-अभक्ष्य : शाकाहारीय दृष्टि

३. भक्ष्य-अभक्ष्य : ग्राह्य अग्राह्य : जैन दृष्टि

४. भक्ष्य-अभक्ष्य : चिकित्सा/स्वास्थ्य/स्वच्छता की दृष्टि :

(क) आयुर्वेद (ख) होम्योपेथी

(ग) एलोपेथी (घ) बायोकेमी (च) युनानी

५ भक्ष्याभक्ष्य : संसाधित (प्रोसेस्ड) खाद्य

६. ग्राह्य-अग्राह्य : वस्त्र, सज्जा, सौंदर्य-प्रसाधन

७. भक्ष्य-अभक्ष्य : बेकरी पदार्थ

८. ग्राह्य-अग्राह्य : विदेशी पदार्थ/वस्तुए :

९. गाह्या-अग्राह्य : खाद्य-अखाद्य अन्य क्षेत्र

इन सब विषयों पर तीन-चार सत्रों में एक साथ अथवा अलग-अलग संगोष्ठियाँ रखी जा सकती है।

सभी विषयों के अधिकृत विद्वान/जानकार/विशेषज्ञ आमन्त्रित किये जाएँ।

उपलब्ध निष्कर्मों को व्यापक रुप में प्रचारित किया जाए।

कुंडली

नर श्रेष्ठ है शील से, नारी श्रेष्ठ शीलवान
सम्मानित शीलवान हो, श्वानवत शीलहीन
संत की शोभा शील से, करे स्वाध्याय व ध्यान
शील से ही गति शील हो, शील शोभा विद्वान
शील भोभा विद्वान की, शील धर्म आधार
शील से मिले आरोग्यता, शील चरित्र आगार
कहें सौभाग्य कविराय, शील गुणों की खान
नर श्रेष्ठ है शील से, नारी श्रेष्ठ शीलवान.

● सौभाग्यमल जैन वकील, रतलाम

सरेराह चलते-चलते

❋ **आत्महत्या में केरल आगे** - देशभर में प्रतिलाख में आत्महत्या का दर ८.१ प्रतिशत है। किन्तु केरल राज्य में प्राप्त आंकडों के अनुसार वहाँ प्रतिदिन २४ आत्महत्याऐं होती है। स्मरण रहे केरल देश में पहला शिक्षित राज्य है।

❋ **अमेरिकी विद्यालयों में हिंसा बढ़ी** - अमेरिका के बुद्धिजीवी पिछले दिनों वहाँ विद्यालयों में बढ़ रही हिंसा से परेशान है। दी नेशनल एज्युकेशन एसोसिएशन द्वारा दिये गये आंकड़ों के अनुसार रोज एक लाख छात्र विद्यालयों मे हथियार लेकर आते हैं। लगभग एक लाख ६० हजार विद्यार्थी डर के कारण विद्यालय नहीं जाते क्यों कि उन्हें अपने सहपाठियों द्वारा ही धमकी दी गयी होती है।

❋ **केन्द्र सरकार, राज्य और दारुबंदी** - महात्मा गांधी एवं इस राष्ट्र का संविधान बनाने वालों की आत्मा आज अत्यंत बैचेन हो रही होगी इन्होंने भारत सरकार एवं राज्यों पर दारूबंदी लागू करने की सम्पूर्ण जवाबदारी सौंपी थी। थोड़े ही राज्यों में दारूबंदी लागू हुयी है। राज्यों को आवक प्राप्त करने में दारू का व्यापार सबसे सरल मार्ग लगता है। केन्द्र सरकार के कृषि प्रधान डा. बलराम जाखड़ ने संविधान के सिद्धान्तों को एक तरफ रखकर सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर सलाह दी है कि राज्य सरकारों को वाईन शेम्पेन एवं दारू की अन्य बनावटों पर आबकारी जकात, हटा देनी चाहिये जिससे किसान अपने बगीचों में इसके बनाने के लिये आवश्यक कच्चा माल द्राक्ष या संतरे के उत्पादन करनेवालों को उत्पादन में प्रोत्साहन मिल सके।

❋ **सरकार द्वारा १९ महिने में ५८ प्रतिशत की वृद्धि** - राशन पर मिलने वाली शक्कर के भाव बजट के कुछ दिन पूर्व बढाकर सरकार ने ग्राहकों पर रू. ७५० करोड़ का बोझ डाला है। राव सरकार ने शासन संभाला तब राशन कार्ड पर शक्कर का भाव ५ रूपये २५ पैसे था, वह आज ८ रूपये ३० पैसे पर पहुंचा है अर्थात् २४ जुलाई १९९१ से लगभग १९ महिनों में शक्कर ५८ प्रतिशत महंगी हुयी है।

❋ **अभिनेताओं द्वारा शांति संदेश** - अपनी फिल्मों में अतिरंजित हिंसा, खून का अभिनय करने वाले नेता जब सड़क पर आकर अहिंसा, शांति का उपदेश देने लगते हैं, तब उनसे कहने का मन होता है कि इन घटनाओं में आपकी फिल्मों का सहयोग भी कम नहीं है।

- प्रवासी

आध्यात्मिक उपदेष्टा के आवश्यक गुण

डॉ. श्री. जगदीश सूचिक

जैन धर्मावलम्बियों के व्याख्याकारों की भूमिका जैन दर्शन व भगवान महावीर के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज अध्ययन-अध्यापन के प्रति जन-सामान्य में हमें सहज रुचि का प्राय: अभाव देखने को मिलता है, ऐसी स्थितियों में जैन स्थानक, मन्दिरों व अन्य स्थानों में जैन आचार्यों, साधुओं, साध्वियों, महासतियों व पंडितों आदि के व्याख्यानों का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

सभी भारतीय दर्शनों में जैन दर्शन का अपना गौरवमय व अविस्मरणीय स्थान है। आत्म तत्त्व की विवेचना में तो इस दर्शन के समकक्ष कोई दर्शन नहीं, क्योंकि दिव्यद्रष्टा प्रभु महावीर का परमात्मवादी दर्शन 'आत्मा' का ही दर्शन है। आत्मा के सन्दर्भ में जितनी सूक्ष्म मीमांसा जैन-ग्रन्थों में उपलब्ध है, उतनी अन्य ग्रन्थों में नहीं। विशेषता यह कि उसे सहजता में आत्मसात भी किया जा सकता है। आत्म-स्वरूप का विवेचन महावीर का प्रमुख प्रतिपाद्य रहा है। इस दर्शन की एक विलक्षण विशेषता यह रही है कि यह मात्र वैचारिक धरातल पर ही नहीं प्रत्युत विचार के साथ आचार-निष्ठता से परिपूर्ण है। महावीर का दर्शन केवल विचारों का कोष मात्र ही नहीं, अपितु वह जीने की कला भी है। वहां सत्य की अन्वेषणा मात्र ही नहीं उसकी रमणता भी अनिवार्य मानी गई है। यही कारण है कि वेन्दात और मीमांसा, 'महायान' और हीनयान '—सांख्य और योग की तरह महावीर दर्शन धर्म और दर्शन दो भागों में विभाचित नहीं हुआ और न हीं किसी प्रकार का विरोध ही उपस्थित हुआ। दर्शन और धर्म, जैन दर्शन में परस्पर सहगामी रहे है।

इस दर्शन मे अनूठी एवं वस्तुनिष्ठ विशेषताएं है। आध्यात्म से सम्बन्धित जड़ चेतन, पुण्य-पाप,स्वर्ग-नर्क आत्मा-परमात्मा तथा संसार-मुक्ति सभी संगोपांग तर्क-संगत विवेचन तथा तद्नुसार जीवन-यापन, जैन-दर्शन और जैन-धर्म के प्राथमिक व प्रथम प्रतिपाद्य है।

चूंकि जैनदर्शन के विकास एवं विस्तार में प्रवचनकारों या व्याख्याकारों की महत्वपूर्ण भुमिका रही है, या प्रवचन ही जैन तत्व दर्शन के व्यवस्थित विकास का प्रमुख घटक रहा है, अत: यहां प्रवचनकारों से बहुत अधिक सचेष्ट रहने की आवश्यकता पर बल दिया है जैनागमों में आचार्य जैसे गौरवपूर्ण पद की प्रमुख विशेषताओं में वचन संपदा, वचना संपदा, या शब्द सामर्थ्य किंवा विचार व भाव संप्रेषण जैसे मौलिक गुणों को अत्यंत अनिवार्य तत्व माना गया गया है। अर्थात एक 'जैनचार्य' का वक्तृत्व कला प्रावीण्य होना अत्यंन्त आवश्यक है।

उपदेष्टा की सामान्य सी उपेक्षा सिध्दान्तों को गलत अथवा मिथ्या रुप में प्रस्तुत कर सकती है। अर्थ का अनर्थ हो सकता है। प्रवक्ता का मूल मंतव्य लक्ष्यविहीन होकर, पथभ्रष्ट हो सकता है।अस्तु ऐसी संवेदनशील स्थिति में व्याख्याकार की भूमिका, उसका दायित्व, अत्यन्त गुरुतर हो जाता है। यहां पर प्रश्न उठाया जा सकता है कि 'वक्ता' के साथ 'श्रोता' का भी गंभीर होना अपेक्षित व आवश्यक है। इस प्रसंग में मेरे अनुभव है

कि यदि वक्ता-धीर गंभीर प्रभविष्णु, बौद्धिक व मानसिक चातुर्य से परिपूर्ण व अपनी मौलिक अनुभूतियों का सृष्टा हो, उसकी शैली रोचक हो मृदुवाणी हो स्वर का आरोह व अवरोह संतुलित व संयमित हो तो क्या मजाल की श्रोता अपने स्थान से तनिक हिल भी जाए।

आजकल हम देखते हैं कि सामान्य- सा तत्वज्ञान हुआ नहीं कि हम अपने आपको व्याख्याकार व व्यासासन पद पर आसीन देखना चाहते है। हम यह भूलते है कि उपदेष्टा बनना इतना सहज नहीं। वह तो अत्यन्त साधना व तपस्या का पथ है। विशेषकर आध्यात्मिक सन्दर्भों में व्याख्याकार को कितना संयमित, संतुलित व मितभाषी होना चाहिए।

यहां उपदेष्टा के लिए कतिपय आवश्यक गुणों का विवेचन बिन्दुवार प्रस्तुत है:-

(१) **दृढ़ श्रद्धा** :- व्याख्याकार को सर्वप्रथम अपने प्रतिपाद्य विषय के प्रति दृढ़ श्रद्धा सघन आस्था से अपूरित होना चाहिए। यदि यह संशय-ग्रस्त या दुविधापूर्ण मन:स्थिति में रहे तो विषय के साथ न्याय नहीं हो सकता।

(२) **निराभिमानता** :- एक आध्यात्मिक प्रवक्ता में विनम्रवृत्ति का प्रादुभाव भी आवश्यक है। अहंग्रस्त व्यक्ति नूतन गवेष्णाओं व अभिनव ज्ञान का अधिकारी नहीं हो सकता फलत: अविकसित बुद्धि के कारण वह वास्तविक तत्व निर्णय नहीं कर सकता।

(३) **निकष्कपटता** :- उपदेष्टा का ऋजु (सरल हृदयी) होना एक आवश्यक गुण है। कुटिल व्यक्ति तो तथ्य व सत्य को छिपाने के उपक्रम में सिद्धांन्त व विषय के साथ अन्याय ही करेगा।

(४) **क्षमा** :- यदि उपदेष्टा क्षमावान नहीं है। उत्तेजक वृत्ति का है, तो वह क्षमादि धर्मगों का न तो महत्व ही जानता है, न ही उसका प्रयोग। ऐसी मनोदशा में मनोविकार के आवेग में वह अनुचित शब्दों का प्रयोग भी कर सकता है।

(५) **अध्ययनशीलता** :-प्रवक्ता को जिस विषय का प्रतिपादन करना है, उसका स्वयं में अनुशीलन अत्यन्त आवश्यक है। वह व्यापक अध्ययन के प्रति निरंतर जागरुक बना रह कर सतत अभ्यास से अध्ययन व अनुसंधान को अपने जीवन का अंग बनाये। उसका अध्ययन व अनुसंधान को अपने जीवन का अंग बनाये। उसका अध्ययन सूक्ष्म, तलस्पर्शी व पांडित्य पूर्ण हो।

(६) **अभिप्रायज्ञता** :- प्रवक्ता में एक मनोवैज्ञानिक गुण अभिप्रायज्ञता का होना भी आवश्यक है। श्रोताओं के चहेरे को पढ़कर वह उनके अभिप्रायों को जानकर तदनुसार विषय का निर्धारण करे।

(७) **निर्लोभता** :- उपनिषद में सूक्ति है-'हिरण्ययेनपाज्ञेण सत्य स्थापिहितं मुख'—अर्थात जहां लोभ वृत्ति का प्राद्रुर्भाव होता है वहां सत्योत्घाटन सम्भव नहीं। अत: उपदेष्टा का निर्लोभी होना आवश्यक है। यही निर्लोभता, निर्भीकता को जन्म देती है, जिससे वक्ता सत्य की दृढ़ता से स्थापना करता है।

(८) **स्वर माधुर्य** :- वक्तृत्व कला के साथ यदि उपदेष्टा की वाणी में स्वर माधुर्य का संयोजन हो तो मणि-कांचन संयोग से स्वर्ण व सुगन्ध का लाभ प्राप्त होता है। वक्ता के प्रियकारी वचन श्रोता के मानस में आनन्द की सृष्टि करते हैं।

(९) **वचन लालित्य** :- व्याख्याकार में स्वर माधुर्य के साथ वचन-लालित्य भी आवश्यक है। वचन की मिठास प्रवचन में मिश्री का कार्य करती है।मधुर तथा प्रियकारी वचनों से श्रोतावर्ग की प्रियता आसानी से प्राप्त हो जाती है, फलतः वे मनोयोगपूर्वक प्रवचन सुनते हैं। कठोर व कटु शब्दों का प्रयोग श्रोताओं में विक्षोभ की सृष्टि का कारण बनता है।

(१०) **व्यक्तित्व** :- जिस उपदेष्टा का व्यक्तित्व प्रभावी होता है उसके वचन भी प्रभावोत्पादक होते हैं। साथ ही वक्ता का आंगिक सौन्दर्य भी श्रोताओं को विशेष रुप से प्रभावित करता है। यद्यपि व्यक्तित्व मूलतः प्राकृतिक उपहार है तथापि उसको प्रयासपूर्वक आकर्षक अवश्य ही बनाया जा सकता है।

(११) **आत्मवेत्ता** :- चूंकि यहां आध्यात्मिक तत्ववेत्ता का विश्लेषण प्रस्तुत है, अतः प्रवक्ता का आत्मा- परमात्मा सम्बन्धी आध्यात्मबोध परिपुष्ट होना चाहिए, क्योंकि आध्यात्म विद्या, आत्मज्ञान के बिना निस्सार व निष्प्रयोजित है।

(१२) **समय-सीमा** :- प्रवक्ता में समयबद्धता गुण अत्यन्त महत्व रखता है। आवश्यकतानुसार विषय में अर्थसंकोच व अर्थविस्तार की क्षमता का वह ज्ञाता हो समय की अल्पता व आधिक्य को देखते हुए, अपने विषय सूत्रों को विस्तारित व संकुचित करने का कौशल अत्यन्त आवश्यक है।

(१३) **शब्द साधक** :- जो व्यक्ति शब्दों के गूढ़ व मार्मिक अर्थों को नहीं समझता तथा भावाभिव्यक्ति में समुचित शब्द संयोजना नहीं कर पाता वह प्रभावी वक्ता कदापि नहीं बन सकता। हमारे यहां 'शब्द को ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है। 'कबीर' जैसे तत्वज्ञानी भी— 'साधो शब्द साधना कीजे' की सलाह देते हैं। अतः व्याख्याकार की शब्द संपदा पर्याप्त होनी चाहिए, जो प्रयोग से निरन्तर विकसित व मुखरित होती है।

(१४) **गुणयुक्तता:** :- आध्यात्मिक प्रवक्ता का सर्वतो महान गुण हैं—गुण युक्तता तथा गुण-ग्राहिता। व्याख्याकार में प्रमाणित, प्रतिष्ठित, प्रभावशाली तथा विश्वासपात्र बनाने वाले सभी गुणों का संयोजन अत्यन्त आवश्यक है। साथ ही उसे तर्कज्ञ भी होना चाहिए, अन्यथा उसके वचन प्रामाणिक, वैज्ञानिक व सर्वसामान्य नहीं बन सकते।

उक्त कथित विशेषताओं से सज्जित व सद्गुणों से विभूषित सदात्मा पुरुष ही यथार्थतः प्रवचनकार के महनीय पद का सच्चा अधिकारी हो सकता है।

- *क्रोध का प्रारम्भ विवेकहीनता से होता है और अन्त पाश्चाताप से होता है। क्रोध के समय विवेक नहीं रहता है, अतः जो भी घयित होगा, वह अशुभ ही होगा। क्रोध के समय शरीर में इकट्ठे हुए विष खून में बह जाते हैं, जो हमें उग्रता व उत्साह देते हैं, जिससे जोश तो बढ़ जाता है पर होश नष्ट हो जाता है।*
- *क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, अहंकार आदि मन के आवेग हैं, यदि इन्हें न रोका जाये तो ये हमारे आचार-विचार और व्यवहार को दूषित कर देते हैं।*

समभाव आत्मा का स्वभाव है।

श्री उदयलाल जारोली

वत्थु सहाओ धम्मो-वस्तु का स्वभाव उसका धर्म है। मिश्री में मिठास, मिर्ची में चरकास, नमक में खारास, अग्नि में उष्णता, जल में शीतलता उसका स्वभाव है। स्वभाव वह है जो उसमें सर्वांग में समाहित रहे, उससे पृथक् नहीं किया जा सके। यदि मिश्री में से मिठास गुण को निकाल दे तो मिश्री ही न रहे। गुण के अभाव में गुणी का अभाव आता है। गुणों के समूह से ही गुणी की पहचान होती है। उसी प्रकार आत्मा का स्वभाव है समभाव। विभाव है विषमभाव। दया, करूणा, मैत्री , शान्ति, समता, क्षमा, सरलता, संतोष आदि आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं। क्रोधादि कषाय भाव, रागद्वेष, हिंसादि आत्मा के वैभाविक भाव है। स्वभाव भाव नहीं है। आत्मा के भाव होते हुए भी निमित्ताधीन होने से, पर के आश्रय से, पर के निमित्त मिलने, पर के कारण ही होने पर भाव कहलाते हैं। कर्मो के निमित्त से होते है। ये विषम भाव आत्मा के स्थायी भाव नहीं होते। राग सदैव नहीं रहता। क्रोध हर समय नहीं हो सकता। क्षणिक होता है। आता है जाता है। उसमें भी विभिन्न समयों में विभिन्न तरतमता लिए होता है। तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम, मंद, मंदतर और मंदतम ऐसे छः मोटे विभागों में बांटा जा सकता है। परन्तु समभाव, समताभाव, वितरागभाव सदा बना रहता है। जितने अंश में प्रकट हुआ उतने अंश में बना रहता है और विषमभाव पूरी तरह नष्ट होने पर, रागद्वेषादि पूरी तरह नष्ट होने पर पूर्ण वीतरागता प्राप्त होती है। एक बार वीतरागता आई कि फिर जाती नहीं। वह क्षय को प्राप्त नहीं होती। वह वीतरागता भी आत्मा में ही रहती है। त्रिकाल रहती है। मोहवशात रागद्वेष रुप परिणाम भाव से दबी रहती है। प्रबल पुरुषार्थ से प्रकट हो सकती है।

जल का स्वभाव शीतलता है। अग्नि के संसर्ग से अग्नि रुप होता है। जला देता है परन्तु जल का स्वभाव, जल का कार्य तो जलाना कभी नहीं होता। जलाने का कार्य अग्नि का है। अग्नि का संपर्क हटने पर जल स्वतः स्वभाव में आ जाता है। इसी प्रकार आत्मा का स्वभाव तो समभाव में संसर्ग से ज्ञानावरणादि के निमित्त से तद्रूप परिणमनकर विषमभाव करता है। रागादि करता है। आवरण हटते ही, मोहादि नष्ट होते ही सहज स्वरूप में स्थित होते ही समभाव में आ जाता है वह सहज स्वरुप कहीं बाहर से नहीं आता। आत्मा तो सहज स्वरुप ही है। समता स्वरुप ही है। सम ही है। पर निमित्तों के हटते ही शुद्ध स्वरुप प्रकट हो जाता है। सम तामय हो जाता है। वह समता तो उसका सहज स्वभाव ही है।

जो समो सव्भूववेसु, थावरेसु तसेसुवा।
तस्स समाइगं ठांई, इदिं केवलिसासणे ।।

आत्मा को आत्मा की स्वभावदशा का ज्ञान होते ही विषमता जाती रहती है। अनादि मिथ्या मान्यता से आत्मा स्वयं के बारे में ही भ्रान्त दशा में पड़ा रहता है। मोहादिवशात् स्व को स्व और पर को पर रुप जान नहीं पाता है। पर में स्व की कल्पना करता है। पर ही स्व रुप भासित होता है। शरीर, कुटुम्ब, धनसम्पदा, पदप्रतिष्ठा को स्व और स्वरुप ही मानता है। इसी कारण बाह्य पर राग करता है। इन्हें अपना मानता है। इन्हें क्षति पहुंचाने वाले पर द्वेष करता है। क्रोध करता है। हिंसादि पर उतारु हो जाता है। क्लेश पाता है। कर्मबंध करता है। उनके परिपाक पर पुनः रागादि रुप परिणमन कर पुनः नवीन

कर्मबंध करता है और ऐसे दुष्चक्र में अनादि से फंसा हुवा है।

जिस क्षण स्व का ज्ञान हो जाता है। स्व स्वभाव का ज्ञान हो जाता है, भ्रांति टूट जाती है। स्व-पर का भेद स्पष्ट हो जाता है। तब समभाव आ जाता है। सब जीवों के प्रति, सब भावों के प्रति अखंड एकरस वीतराग भाव आ जाता है। लोक में स्थित समस्त त्रस और स्थावर जीवों को समभाव देखता है। अपने समान जानता है। सिद्ध समान जानता है। पर्याय से दृष्टि हटाकर शुद्ध आत्मद्रव्य दृष्टि में आ जाता है। तब न माता -पिता दिखते हैं न भाई-बहिन-पत्नी-पुत्रादि न एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय दिखते हैं न देव नारक, तिर्यंच मनुष्य अपितु उनकेसाथ रही हुई अजर अमर अविनाशी चैतन्य स्वरुपी अखंण्ड आत्मा दृष्टि गोचर होती है। भेद पर्याय दृष्टि में पड़ता है। इसी कारण रागद्वेषादि परिणाम होते हैं। द्रव्य दृष्टि होते ही सब जीवों के प्रति सब भावों के प्रति समभाव आ जाता है। केवली के शासन में वही स्थायी सामायिक है।

समभावो समाइयं, तणं कंचण सत्तुमित्तविसओत्ति।
निरभिसंगमचित्तं, उचियपवित्तिपहाणं च।।

समभाव ही सामायिक है। तृण हो कंचन, शत्रु हो या मित्र, उसका चित्त निरभिश्वंग हो, उचित प्रवृत्तिप्रधान हो जाता है। जब दृष्टि द्रव्य की ओर, शुद्ध द्रव्य की ओर हो जाती हैं तब तृणा और कंचन समान दिखते है। दोनों ही पुद्गल परमाणुओं के पिंड दिखते हैं—सडन, गलन, विध्वंसनरुप पुद्गल। फिर न तृणा के प्रति तुच्छ भाव और कंचन के प्रति लालसा भाव। दोनों ही विनाशी का आत्म द्रव्य से पूर्णतः भिन्न। फिर न कोई शत्रु, न कोई मित्र। अपितु सर्वत्र सभी आत्मा ही आत्मा दिखाई देती है। शत्रु भी मित्र लगता है कर्मों का ऋण चुकाने में सहायक लगता है। धन्य है और धन्य हो गए गजसुकुमाल मुनि जिन्होंने ऐसा मानकर परमपद पा लिया।

सामायिक में चित्त अचित्तप्रवृत्तिप्रधान और निरभिश्वंग हो जाता है। फिर कोई कितने ही उपसर्ग दे, कितने ही परिषह आजाएं, विषमभाव नहीं आते, क्रोधादि परिणाम नहीं होते फिर चाहे एक ही रात में २०-२० परीषह आ जाएं, चाहे कोई कानमें कीले ठोके चाहे कोई डंक मारे, चाहे कोई शरीर का मांस नोचे, सामायिक नहीं टूटती, विषमता लेशमात्र भी नहीं आती। अडोल, अकंप आत्म ध्यान में समभाव में लीन रहते हैं। ऐसा कैसे संभव है।? हमें तो कोई जरासी गाली देने आ जाए, क्रोधावेश में आ जाते है, हानि पहुंचाने आ जाए हिंसादि पर उतर आते है, हमारे जीवन में यह विषम भाव क्यों ? उन आत्माओं के ऐसी सामायिक क्यों हुई, हमारी ऐसी क्यों नहीं होती? कारण? कारण है अज्ञान दशा। उन महान् आत्माओं की दृष्टि शुद्ध आत्म द्रव्य पर थी। पर्याय से दृष्टि हट गई थी।

प्रथम देह दृष्टि हती, तेथी भास्यो देह।
हवे दृष्टि थई आत्ममां, गयों देह थी नेह।।

देह तो उनके भी थी परन्तु आत्म दृष्टि हो जाने से देह से नेह नष्ट हो गया। धधकते अंगारों से सिर जल रहा है पर ध्यान कहां है? सिर पर? सड़न गलन रुप पुद्गल परमाणुओं के पिंड शरीर पर? नहीं। इसलिए समता आ गई। परम वीतरागता आ गई। स्वभाव दशा प्रकट हो गई। केवलज्ञान, केवलदर्शन हो गया। धन्य है ऐसी सम- स्वभाव दशा में प्रर्वतने वाली आत्माएं। धिक्कार है हमें। जरासा विपरीत, चेतन या अचेतन, निमित्त पाकर भारी विषमदशा में आने वालो को। वह दिन धन्य होगा जब हम भी उन महान् आत्माओं की ज्ञान दशा, चारित्रदशा के निमित्त से उनका अवलोकन और चिंतवन कर अपने सहज स्वरुप को जानकर, मानकर स्वरुप सहज समभाव में स्थित हो जाएंगे।

रूकिये ! पढिये !! सोचिये !!!

- विडम्बना की बात यह है कि मनुष्य ने अपने हाथों से प्रकृति से छेड़छाड़कर स्वयं को खतरे में डाल लिया है। बढ़ते हुए प्रदुषण के कारण दमा, कैंसर, एडस, आन्त्रशोध व अन्य भयानक बीमारियों ने मनुष्य के शरीर में घर कर लिया है।
- आज पर्यावरण सुरक्षा के लिए हमें अपने पूर्वजों (ऋषि मुनियों) की निर्मल पर्यावरण की परिकल्पना को साकार करने की जरूरत है। साथ ही प्राणीमात्र के अस्तित्व की रक्षा के लिए प्राकृतिक वन संपदा का संरक्षण अति महत्वपूर्ण है। प्रत्येक धर्म ने भी धार्मिक आधार पर वृक्षों का संरक्षण करने की बात कही है।
- औद्योगिक विकास के नाम पर पर्यावरण व प्राणीमात्र की रक्षक वन सम्पदा कटने से भूमि क्षरण के कारण वे रेगिस्तान मे बदलती जा रही है। रासायनिक कारखानें, धुआं अपवर्जीत अवशेष जनसंख्या की वृद्धि, वाहनों द्वारा छोड़े गये धुंये तथा शोर ने पर्यावरण को प्रदुषित कर वायु मंडल में जहर सा घोल दिया है।
- जो बात वाणी के संबंध में लागू होती है वही बात हमारे भोजन पर भी लागू होती है। भोजन सात्विक होना चाहिये। राजसी एवं तामसी भोजन जहाँ इन्द्रिय, शरीर एवं मन में काम, क्रोध लोभ इत्यादि विकारों को जन्म देता है वहीं अनेक रोग पैदा करता है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हितों की रक्षा के लिए डंकेल प्रस्ताव प्रस्तावित हैं। अपने बीजों को पेटंट करवा कर ये कंपनियाँ उसे सारी दुनिया में बेचेंगी। विकासशील और गरीब देश उनके बीज खरीदें उसके लिए ये जोर-जबरदस्ती के साथ अनुदान और ऋण का लालच भी देंगी। तब गरीब देशों की सरकारें ऋण की खातिर फिर इन बीजों के प्रोत्साहन के लिए किसी क्रांति की योजना बनाएंगी। खेती पर छाने वाले इस बहुराष्ट्रीयवाद पर विचार की जरूरत है।
- पशुओं की चमड़ी से हम अपनी चमड़ी सजाने के लिए उतावले रहते हैं। जानवरों के पास मन की बात कहने की शक्ति नहीं है इसलिए उन पर इतने जुर्म हो रहे हैं सिर्फ इंसानों की साज सजावट के लिए हर जीव को जीने का हक है - फिर हम क्यों निर्दोष जीवों का खून बहाने को आमदा है।
- हम में से अधिकांश उपभोक्ता अनजाने में क्रूरता के दोषी बनते हैं। थोड़ा-सा बदलाव लाकर हम लाखों-करोड़ों मूक प्राणियों को पीड़ा से छुटकारा दिलवा सकते हैं। उपभोक्ता बाजार में तो मांग और पूर्ति का गणित चलता है - यदि मांग नहीं होगी तो पूर्ति का फायदा? उपभोक्ताओं! किसी चीज का इस्तेमाल करने से पहले एक क्षण को सोच लिजिए कहीं उस वस्तु के पीछे किसी के आँसू और वेदना तो नहीं छिपी? जाने-अनजाने हम जुल्म में हिस्सेदार तो नहीं बन रहे?

— मुसाफिर

स्वाध्याय – चिन्तन

– श्री ललितकुमार कोठारी

* स्वाध्याय एक ऐसी दिव्य ज्योति है जो हमारे अन्तरंग जीवन को प्रकाशमान कर देती है। यह ज्योति जब तक जलती रहेगी, तब तक जीवन में अशान्ति का अन्धेरा टिक नहीं पायेगा।

* स्वाध्याय में स्थिर रहने वाला व्यक्ति बहिर्जगत से विमुख होकर अन्तर्जगत में पहुँच जाता है।

* स्वाध्याय में तल्लीन व्यक्ति जीवन की पुस्तक को पढ़ता है और अपने आपका गहराई से निरीक्षण और परीक्षण भी कर लेता है।

* स्वाध्याय एक ऐसा उद्यान है जिसमें ज्ञान के फूल अपनी सौरभ से महक रहे हैं।जिसने इस सौरभ को ग्रहण किया, उसका जीवन सुरभित हो उठा।

* स्वाध्याय हमारे जीवन में अज्ञान के सघन अन्धकार को दूर कर देता है और ज्ञान के प्रकाश को फैलाता है।

* स्वाध्याय में संलग्न व्यक्ति मन में शान्ति का अनुभव करता है, जीवन में धार्मिक क्रान्ति करता है और भ्रान्ति को समाप्त कर देता है।

* स्वाध्याय एक ऐसा राजमार्ग है जिस पर अग्रसर व्यक्ति मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ता है, मोक्ष मार्ग ही उसका चरम एवं परम लक्ष्य होता है।

* स्वाध्याय जीवन जीने की सच्ची और अच्छी कला है, जो व्यक्ति इस कला में पारंगत है, उसका जीवन सुन्दर बन जाता है।

* स्वाध्याय एक ऐसी प्रचण्ड अग्नि है, जो हमारे जन्म–जन्मान्तरों की कर्मघास को भस्मसात् कर देती है।

* स्वाध्याय एक बहती हुई अमृत धारा है। जो व्यक्ति इस धारा से लाभ उठा लेते हैं, उनका जीवन अमृतमय बन जाता है।

* स्वाध्याय एक ऐसा जलाशय है, जिसमें स्नान करने वाला व्यक्ति अपने कर्म–मल को धो डालता है।

* स्वाध्याय एक ऐसी संजीवनी बूटी है जो हमारी आत्मा में अध्यात्म का प्राण संचार कर देती है।

* स्वाध्याय एक नन्दनवन है जिसमें विचरण करने वाला व्यक्ति आधि, व्याधि और उपाधि के ताप से मुक्त होता है और समाधि को प्राप्त करता है।

समाचार दर्शन

परम श्रद्धेय आचार्यश्री का बम्बई के उपनगरों में पदार्पण
भक्तजन दर्शनार्थ उमड़ पड़े

बम्बई : पंद्रह वर्षों के दीर्घकाल के अंतराल के बाद प. पू. राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि मुनिमंडल एवं साध्वीमंडल के बम्बई के उपनगरों में पदार्पण से सर्वत्र आनंदोल्लास का वातावरण छा गया। प्रत्येक संघों में भव्य सोमैय्या एवं गहुलियों के साथ पूज्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ। महिने भर के विचरण के अपूर्व धर्म जागृति हुयी। विविध शासन प्रभावना के कार्य हुए। प्रतिदिन मधुर प्रवचनों का लोगों ने लाभ लिया। दि. ६.२.९३ को मानपाड़ा (थाने) में श्री शान्तिनाथ जैन मंदिर की शानदार प्रतिष्ठा करवाने के बाद आपके कदम बम्बई की ओर बढ़े। यहाँ उनके प्रतिदिन के कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण दे रहे हैं -

दि. ७/२/९३ : प्रातः भायन्दर पधारने पर श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत समारोह ५२ जिनालय आदि मंदिरों के दर्शन करते हुए श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर पहुंचा। श्री थराद जैन संघ-बम्बई की ओर से पूजन पढाया गया एवं स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया।

दि. ८/२/९३ : बोरिवली श्री संघ द्वारा सोमैय्या के पश्चात् प्रवचन एवं स्वामीभक्ति का आयोजन व जामलीगली उपाश्रय में विश्राम।

दि. ९/२/९३ : प्रातः सुमेरनगर में भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर, कांदिवली में सोमैय्या, प्रवचन व स्वामीवात्सल्य।

दि. १०/२/९३ : मालाड़ में जीतेन्द्र रोड़ चिन्तामणि पार्श्वनाथ के दर्शन कर शाह देवकरण मूलजी निर्मित मंदिर व उपाश्रय में पदार्पण, श्री संघ द्वारा भव्य सोमैय्या, प्रवचन व स्वामीवात्सल्य।

दि. ११/२/९३ : गोरेगांव में आगमन पर श्री राजस्थान जैन संघ द्वारा भव्य सोमैय्या, राजस्थान हॉल में स्थिरता, प्रवचन व स्वामीभक्ति। आचार्य देव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी से मिलन।

दि. १२/२/९३ : अंधेरी में श्री संघ द्वारा सोमैय्या, प्रवचन व उपाश्रय में स्थिरता।

दि. १३/२/९३ : भव्य सोमैय्या के साथ जोगेश्वरी में पदार्पण, मंगल प्रवचन व स्वामीभक्ति।

दि. १४/२/९३ : विलेपार्ले में पूज्य आचार्य भगवंत का भव्य प्रवेश एवं दि. १७/२/९३ को श्री राज राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर का उद्घाटन (विस्तृत जानकारी शाश्वत धर्म के अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी।) दि. १८/२/९३ तक स्थिरता।

दि. १९/२/९३ : खार, शांताक्रुज होते हुए नायगांव दादर पदार्पण। सुश्रावक

श्री. एस. पी. शाह कोशिलाव निवासी द्वारा स्वामीभक्ति एवं गुरुभक्ति का अनूठा लाभ। भव्य सोमैय्या व प्रवचन।

दि. २०/२/९३ : वरली पूनम एमार्टमेन्ट उपाश्रय में पदार्पण श्री संघ द्वारा सोमैय्या व प्रवचन एवं स्वामीवात्सल्य।

दि. २१/२/९३ : सुबह नवकारसी के पश्चात् भव्य चल समारोह के साथ तिरुपति एपार्टमेण्ट-महालक्ष्मी की ओर प्रस्थान। श्री भीनमाल जैन संघ बम्बई की ओर से भव्य सोमैय्या। चल समारोह में विक्टोरिया में गुरुदेव की तस्वीर लेकर बैठने का लाभ श्री सरेमलजी माणकचंदजी कोठारी ने लिया। श्री भीनमाल जैन संघ अध्यक्ष-श्री घेवरचंदजी नाहर, सुखराजजी नाहर, सुमेरमलजी बाफना, सेवंतीभाई मोरखीया आदि ने पूज्य श्री के बम्बई आगमन पर हर्ष व्यक्त किया। भीनमाल श्री संघ की ओर से भीनमाल में चातुर्मास हेतु जोरदार विनंती की गयी। पूज्य आचार्य भगवंत ने कहा कि अभी तो दक्षिण प्रदेश की ओर जा रहे हैं जब राजस्थान प्रदेश के आसपास होंगे तब योग्य निर्णय लिया जायेगा। प्रवचन के बाद भीनमाल श्री संघ की ओर से स्वामीवात्सल्य रखा गया था।

दि. २२/२/९३ : प्रातः भव्य सोमैय्या के साथ श्री बाबुलाल पन्नालाल जैन आदिश्वर मंदिरं, वालकेश्वर में प्रवेश व प्रवचन। भक्तामर पूजन का आयोजन धानेरा निवासी मोरखीया बाबुलालजी की स्मृति में रमणलाल, नगीनदास परिवार की ओर से।

दि. २३/२/९३ : वालकेश्वर स्थित सम्राट अशोक सोसायटी में शोभायात्रा के साथ भव्य प्रवेश।

दि. २४/२/९३ : त्रिवेणी बिल्डिंग होते हुए भारत नगर में भव्य प्रवेश प्रवचन के बाद राजस्थान जैन संघ द्वारा प्रभावना, स्वामीवात्सल्य। श्री थराद जैन संघ बम्बई के उपक्रम से लिए गये श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय श्री राज-राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर १७ खेतवाडी में दादा गुरूदेव के फोटो की स्थापना की गयी एवं आरती की गयी, जिसका लाभ 'श्री वाडीलाल अमूलखभाई उगरचंदभाई परिवार-थराद ने लिया।

दि. २५/२/९३ : कमाठीपुरा ८ वीं गली में भव्य सोमैय्ये के साथ पदार्पण। भगवान नेमिनाथ के दर्शन के बाद प्रवचन। तेलुगुवाड़ी में स्थिरता। श्री राजस्थान जैन संघ द्वारा स्वामीवात्सल्य।

दि. २६/२/९३ : श्री शत्रुंजय दर्शन होते हुए श्री मोतीशा जैन मंदिर में सोमैय्ये के साथ आगमन। प्रवचन, प्रभावना के पश्चात् बाली निवासी कुन्दनमलजी की स्मृति में उनके परिवार द्वारा भक्तामर पूजन का आयोजन व स्वामीवात्सल्य।

दि. २७/२/९३ : भव्य सोमैय्ये के साथ पायधुनी आदिश्वरजी मंदिर में पदार्पण। प्रवचन व स्वामिभक्ति।

दि. २८/२/९३ : भव्य चल समारोह गुलालवाडी, सी. पी. टैंक रोड, वी. पी. रोड, गिरगांव चर्च, ओपेरा हाऊस, धर्म पेलेस होते हुए प्लाझा पंचशील पहुंचा। समस्त त्रिस्तुतिक जैन संघ की ओर से आचार्य श्री के बम्बई पदार्पण पर हर्ष व्यक्त किया जाकर श्री भरत भाई के करकमलों से गुरूदेव श्रीमद्ध विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा लिखित एवं श्रीमद् विजय

जयन्तसेनसूरीश्वरजी द्वारा सम्पादित **'षड् द्रव्य विचार'** पुस्तक का विमोचन किया गया। पूज्य आचार्यश्री की सत्प्रेरणा से भीनमाल निवासी श्रीमान् घेवरचंदजी वाबुलालजी नाहर की ओर से गुरू राजेन्द्रसूरि हॉस्पिटल, खाचरौद को एक अेम्बुलेंस भेंट दी गयी। प्रवचन एवं साधर्मिक भक्ति का आयोजन हुआ। श्री चंद्रप्रभु जैन मंदिर - प्रार्थनासमाज में विश्राम।

दि. १/३/९३ : श्री सांचोर जैन संघ बम्बई की ओर भव्य सोमैय्ये के साथ सी. पी. टैंक रोड़, कापोल वाडी आगमन। अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना।

दि. २/३/९३ : प्रार्थना समाज स्थित श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर के सामने खड़ायता भुवन में स्थिरता।

दि. ३/३/९३ : अरविन्द कुंज, ताडदेव सोनावाला बिल्डिंग में पदार्पण, शांतिस्नात्र पूजन।

दि. ४/३/९३ : प्रातः लेमींग्टन रोड स्थित नवजीवन सोसायटी में भव्य सोमैय्या प्रवचन आदि। शाम को प्रार्थनासमाज पुनः आगमन।

दि. ५/३/९३ : डुंगरी में राजस्थान संघ की ओर से भव्य स्वागत। प्रवचन आदि। रात्रि विश्राम प्रार्थना समाज।

दि. ६/३/९३ से ९-३-९३ : खडायता भुवन, प्रार्थनासमाज में स्थिरता।

दि. १०/३/९३ : को दादर नायगांव, दि. ११/३/९३ को संघाणी इस्टेट घाटकोपर एवं दि. १२-३-९३ को सर्वोदय पार्श्वनाथ मंदिर मुलुंड में आगमन हुआ।

थाना में पदार्पण एवं भिवंडी की ओर विहार

पूज्य आचार्य भगवंत का शनिवार दि. १३/३/९३ को थाने तीर्थ में मुनिमंडल व साध्वीमंडल सह पदार्पण हुआ। स्मरण रहे सन् १९८५ से अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के मुखपत्र 'शाश्वत धर्म' का प्रकाशन थाने से हो रहा है। पूज्य आचार्य भगवंत का मंगल पदार्पण शाश्वत धर्म कार्यालय में हुआ। शाम को विहार कर जाते समय माजीवड़ा स्थित डपुजी आर्ट प्रिंटर्स (जहाँ शाश्वत धर्म छपता है) में पधारे एवं प्रेस का अवलोकन किया। आगे विहारकर काल्हेर पधारे। काल्हेर से भव्य चल समारोह के साथ भिवंडी में प्रवेश हुआ।

भिवंडी में पदार्पण एवं चैत्यपरिपाटी का आयोजन

आहोर निवासी शा. झुमरमलजी देवीचंदजी रिखबाजी वेदमुथा परिवार की ओर से अ. सौ. जडावीवेन के वीसस्थानक २१ छोड़ के उद्यापन निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव आयोजित किया गया। एवं गुरुवार १८/३/९३ को भिवंडी से कल्याण चैत्यपरिपाटी आयोजित की गयी। भक्तामर पूजन, विविध पूजायें, स्वामिवात्सल्य एवं प्रतिदिन प्रभुजी की सुंदर आंगी व रात्रिभावना में चेतनकुमार एन्ड पार्टी ने अच्छा रंग जमाया। महोत्सव का आयोजन श्री सुपार्श्वनाथ मंदिर, नवीचाल, भिवंडी में किया गया।

पूज्य आचार्य भगवंत मुनिमंडल सह दि. १९ मार्च को मोहने, दि. २० को बदलापुर दि. २१ को कर्जत पधारे। दि. २२ को खोपोली एवं दि. २३ को लोणावला पधारे।

लोणावला में राज राजेन्द्र जयन्तसेन ज्ञान मंदिर गुरुदेव के फोटो की स्थापना

यहाँ आचार्य श्री के पदार्पण पर भव्य सोमैय्या किया गया। चैत्र सुदि १ बुधवार दि. २४/३/९३ को आहोर निवासी मुथा पारसमलजी वालचंदजी द्वारा गुरु मंदिर हेतु प्रदत्त मकान में गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी के फोटो की स्थापना की गयी। शाम को विहार कर माणकचंदजी सवाणी के बंगले पर पधारे।

पूज्य आचार्य भगवंत के साथ मुनिश्री नित्यानंदविजयजी, मुनिश्री हेमरत्नविजयजी, मुनिश्री विश्वरत्नविजयजी, मुनिश्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनिश्री प्रशान्तरत्नविजयजी, मुनिश्री चारित्ररत्नविजयजी, मुनिश्री दर्शनरत्नविजयजी आदि ठाणा क्रमशः २६ मार्च को चिंचवड़ होकर दिनांक २७ मार्च को पुणे पधारे। यहाँ भव्य सोमैय्ये के साथ प्रवेश हुआ। कांबली वोहराने का लाभ सियाणा निवासी शा. मिश्रीमलजी भोपाजी (जम्बू ज्वेलर्स) ने लिया। तीन दिन पुणे में विचरण के पश्चात् चैत्र सुदी १४ को कराड़ पधारने की संभावना है। वहाँ श्री संघ की ओर से महावीर जन्म कल्याणक निमित्त त्रिदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत सिद्धचक्र पूजनादि कार्यक्रम में आप निश्रा प्रदान कर आगे नेल्लोर की ओर विहार करेंगे।

स्मरण रहे नेल्लोर में श्री रामाणी परिवार द्वारा निर्मित श्री राजेन्द्रनगर इंदकुर पेठ में श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर की प्रतिष्ठा अंजनशलाका जेठ सुदी ११ सोमवार दि. ३१-५-९३ को आपकी निश्रा में सम्पन्न होगी।

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी के संभवित कार्यक्रम

आचार्यदेव श्री जयन्तनेससूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में चैत्री ओलीजी सांथु में, वैसाख सुदी ६ को सांथु में प्रतिष्ठा, वैसाख सुदी १४ को बागरा में शांतिस्नात्र जेठ वदी में आहोर में पंचान्हिका महोत्सव व जेठ सुदी ५ को जालोर में दादा गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के फोटो की स्थापना हेतु महोत्सव होगा।

मुनिराज श्री का इस वर्ष चातुर्मास भूति (राजस्थान) में होना तय हुआ है।

मानपाड़ा (थाने) में चातुर्मास तय

मानपाड़ा के इतिहास में प्रथम बार राष्ट्र-संत आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वीजी श्री प्रेमलताश्रीजी, पूर्णकिरणाश्रीजी, कल्परेखाश्रीजी आदि ठाणा ३ का चातुर्मास आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार की ओर से तय हुआ है।

थाने तीर्थ में शाश्वती ओलीजी की आराधना

इस वर्ष शाश्वती चैत्री ओलीजी की आराधना शा. कपूरचंदजी भुताजी परिवार की ओर से प्रवर्तक मुनि श्री हरिशभद्रविजयजी एवं आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वीजी श्री शशीकलाश्रीजी आदि ठाणा १३ की निश्रा में करवायी गयी।

हमारे नये संरक्षक •श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छ जैन संघ-वासणा (गुज.), •श्री महाविदेहतीर्थधाम-नवागाम सुरत (गुज.), •आहोर निवासी संघवी जुगराज, कान्तिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलिप, धीरज, संदीप बेटा-पोता कुन्दनमलजी भुताजी श्रीश्रीमाल वर्धमान गोत्रीय परिवार थाने (महा.)

मानपाड़ा (थाने) में भव्य प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न

थाने : यहाँ मानपाड़ा में श्री शांतिनाथ आदि जिन बिम्ब, गणधर श्री गौतमस्वामीजी, गुरूदेव श्री राजेन्द्रसुरिजी आदि गुरू बिम्बों की प्रतिष्ठा राष्ट्रसन्त जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी श्री भुवनप्रभाश्रीजी, साध्वीजी श्री शशीकलाश्रीजी, प्रेमलताश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में सानंद सम्पन्न हुयी। इस अवसर पर अष्टान्हिका महोत्सव माघ सुदि ७ शनिवार दि. ३०-१-९३ से प्रारम्भ हुआ, इसी दिन पूज्य आचार्य भगवंत का मुनिमंडलसह सुरत से उग्र विहार कर मंगल पदार्पण हुआ। पुज्य श्री का मानपाड़ा में प्रवेश प्रसंग पर सामैया व गहुलियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। जुलुस नगर भ्रमण करते हुए मेहमान रूप में विराजित श्री शांतिनाथ आदि जिन प्रतिमाओं के दर्शनवंदन कर निर्माणाधीन मंदिर पहुँचा। संघ पूजन व श्रीफल की प्रभावना हुयी। प्रातः १० बजे पूज्य श्री सकल श्री संघ के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव स्थल श्री गुरू राजेन्द्र नगर ग्रीनवुड काम्प्लेक्स में पधारे। भव्य सौमेय्या के पश्चात मांगलिक प्रवचन हुआ। प्रतिदिन व्याख्यान, विविध पूजायें, संघ पूजन, नवकारसी, स्वामी भक्ति व प्रभावना होती थी। रविवार दि. ३१-१-१९९३ को सुबह की नवकारसी शा. भँवरलालजी, राजमलजी, उगमराजजी, सोहनराजजी लुंकड परिवार - भीनमाल निवासी (ग्रीनवुड काम्प्लेक्स) वालों की ओर से रखी गयी थी। दि. ३-२-१९९३ को अट्ठारह अभिषेक किये गये। दि. ४-२-१९९३ को प्रातः ९ बजे गुरू राजेन्द्रनगर (ग्रीनवुड-काम्प्लेक्स) से अजन्ता बेन्ड, अभिनंदन मंडल के बेंड, घोड़े, गजराज, रथ इंद्रध्वजा, दो घोडों की बग्गी, ढोल के साथ बाजते-गाजते शोभायात्रा का प्रस्थान हुआ। जो घोड़बंदर रोड, मानपाड़ा नगर होती हुयी पुनः गुरूराजेन्द्रनगर पहुँची। इस विशाल रथयात्रा में हजारों भाई-बहनों ने भाग लिया। जैन धर्म की जय-जयकार, गुरू राजेन्द्र की जय-जयकार व राष्ट्रसंत की जय-जयकार से पुरा मानपाड़ा नगर गुँज उठा।

माघ शुक्ला १३ शुक्रवार दि. ५-२-१९९३ को प्रातः मंगलबेला में पूज्य श्री आचार्यदेव के साथ सकल संघ ने मानपाड़ा प्रतिष्ठोत्सव स्थल की ओर प्रस्थान किया। ॐ पुण्याहम्-पुण्याहम् प्रियन्ताम्-प्रियन्ताम् की मंगल ध्वनि के साथ मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान को विराजमान करने एवं ध्वजा दण्ड आरोहण करने का लाभ आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार ने लिया।

श्री सुमतिनाथ एवं श्री पार्श्वनाथ प्रभु को विराजमान करने का लाभ शा. चम्पालालजी हिम्मतलालजी चौपड़ा (आहोर) व शा. छगनराजजी भुताजी श्रीश्रीमाल परिवार (आहोर) वालों ने लिया। गणधर गौतमस्वामीजी को विराजमान करने का लाभ शा. वीरचंदजी धनाजी जीवावत (आहोर) एवं गुरूदेव राजेन्द्रसूरिजी को विराजमान करने का लाभ शा. मीठालालजी - जुहारमलजी परमार (गेनडी) मानपाड़ा वालों ने लिया। अधिष्ठायिका गरुडदेव की स्थापना शा. नगराजजी तोलाजी मुथा परिवार (धाणसा) एवं अधिष्ठायक निर्वाणीदेवी की स्थापना शा. जीवराजजी भीकमचंदजी

परिवार (लुणावा) ने लाभ लिया। तोरण बांधने का लाभ आहोर निवासी शा. छगनराजजी नगराजजी वजावत परिवार ने लिया।

श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर में गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी के फोटो की स्थापना का लाभ शा. छगनराजजी भुताजी परिवार (आहोर) एवं गुरुदेव के पाट का लाभ शा. तेजराजजी चम्पालालजी, हिम्मतमलजी चौपड़ा परिवार आहोर वालों ने लिया। प्रतिष्ठोत्सव अवसर पर क्लोज सर्किट टी. वी. की व्यवस्था की गयी थी।

दोपहर २ बजे पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी की ९ वीं आचार्यपदारोहण तिथि निमित्त कांबली वोहराने का लाभ शा. नगराजजी तोलाजी मुथा परिवार धाणसा निवासी ने लिया। संघवी परिवार को तिलक करने का लाभ शा. चम्पालालजी हिम्मतमलजी चौपड़ा (आहोर), माला पहनाने का लाभ शा. छगनराजजी नगराजजी वजावत (आहोर), साफाचुनडी द्वारा स्वागत का लाभ शा. नारायणदासजी वसाजी छाजेड़ परिवार (केशवणा) एवं श्रीफल द्वारा स्वागत का लाभ शा. गिरधारीमलजी जुहारमलजी परिवार (आहोर) ने लिया। मानपाड़ा श्री संघ, थाने श्री संघ, अ. भा. त्रिस्तुतिक जैन संघ, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद इत्यादि संस्थाओं द्वारा संघवी परिवार का अभिनंदन पत्र एवं शाल, श्रीफल द्वारा स्वागत किया गया। शनिवार दि. ६-२-१९९३ को प्रातः काल द्वारोदघाटन संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार आहोर निवासी द्वारा किया, दोपहर नूतन जिनालय में शांतिस्नात्र पढ़ायी गयी। विधिविधान हेतु श्री हेमराजजी यति सायला निवासी पधारे थे। प्रतिदिन भक्तिभावना में चेतनकुमार एन्ड गोपाल आर्केस्ट्रा पार्टी ने रंग जमाया। लाइट डेकोरेशन व टेन्ट व्यवस्था अरिहन्त टेन्ट हाउस - नागदा (म. प्र.) ने किया। पूरा राजेन्द्रनगर - (ग्रीनवुड काम्प्लेक्स) तोरण, पताकाओं, बेनरों व विद्युत रोशनी से इन्द्रपुरी की तरह सजाया गया था।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री उगमराजजी (ग्रीनवुड काम्प्लेक्स) श्री भूरमलजी, श्री पारसमणि, श्री घेवरचंदजी, डा. हेमराजजी पोरवाल, श्री रमेशभाई थापर, श्री अभिनंदन जैन मंडल, श्री महावीर जैन सेवा मंडल (कराड) श्री मुनिसुव्रत महिला मंडल, श्री पार्श्व राजस्थानी महिला मंडल, थाने, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा-मानपाड़ा का सहयोग सराहनीय रहा। इस अवसर पर श्रीमति मोवनबाई कुन्दनमलजी, श्रीमति विमलादेवी जुगराजजी, श्रीमति शान्तिदेवी कांतिलालजी की विविध तपश्चर्याओं के निमित्त ९ छोड का उद्यापन रखा गया। गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य-प्रदेश, आंध्रप्रदेश, तामिलनाडु, कर्नाटक आदि प्रदेशों से कई गुरुभक्तों का आगमन हुआ।

सम्पूर्ण आयोजन का लाभ श्री शांतिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट के संयोजन में आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार ने लिया।

(विशेष परिशिष्ट अगले अंक में)

समाचार – सार

लक्ष्मणी तीर्थ (अलिराजपूर) - श्री लक्ष्मणी जैन तीर्थ में इन्दौर के प्रतिष्ठान हुन्डिया ट्रेडर्स द्वारा गरीब आदिवासी भाइयों को भोजन कराया गया। कार्यक्रम श्री लक्ष्मणीतीर्थ ट्रस्ट मंडल एवं पेढी की उपस्थिती में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

माण्डवला - आचार्य देव श्री विवुधप्रभसूरीश्वरजी के दिक्षा के ६३ वर्ष पूर्ण होने के अनुमोदनार्थ पोष वद ५ को पूजा बढाई गई। पुजा में महिला मण्डल माण्डवला एवं अभयकुमार पटवारी ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

लक्ष्मणी तीर्थ - जैन तीर्थ लक्ष्मणी की वर्षगांठ मनाई गई। इस अवसर पर पू. मुनिराज श्री भुवनहर्षविजयजी म. सा. आदि ठाणा पधारे थे। इस शुभ अवसर पर पंचकल्याणक पूजन रखी गई।

धानेरा-प.पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वी महाप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वी पुण्यदर्शनाश्रीजी एवं हर्षदर्शनाश्रीजी की निश्रा में विश्वपूज्य प्रातः स्मरणीय प्रभु श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की जन्म एवं स्वर्ग तिथि पौष सुदी ७ के दिन गुरूदेव की पूजा एवं भव्य अंग रचना तथा स्वामीवात्सल्य के साथ बड़ी धुमधाम से मनाई गई।

नीमच - अ. भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा एवं त्रिस्तुतिक श्री संघ के संयुक्त आयोजन में गुरूसप्तमी प्रभात फेरी, प्रार्थना, गुरूगुणानुवाद, चल समारोह एवं श्री राजेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजन आदि कार्यक्रमों द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनायी गई।

पूना - विश्व पुज्य प्रातः स्मरणीय प्रभु श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की जन्म एवं स्वर्ग तिथि (गुरू सप्तमी) के अवसर पर विरामी निवासी श्री तेजराज देवीचंदजी गिरिया मेहता ने मालवा प्राचीन तीर्थ यात्रा का आयोजन किया जिसमें १७५ यात्रीयों को श्री बावनगजाजी, लक्ष्मणीतीर्थ, मोहनखेड़ातीर्थ, भोपावर, माण्डवगढ़ आदि तीर्थों की यात्रा करवाई।

रतलाम - परम पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म. सा. की आज्ञानुवर्ती एवं परम विदुषी साध्वीं रत्ना श्रीपानकुंवरजी म. सा. की अनुयायी तरूण तपस्विनी मधुर व्याख्यानी साध्वी श्रीप्रवीणाश्रीजी म. सा. द्वारा समता भवन में प्रभावी प्रवचन हुआ। प्रवचन में आपने मानव जाति को सम्बोधित करते हुए कहा कि हे मानव यदि तुझे मोक्ष प्राप्त करना हो तो तु अपनी इन्द्रियों पर बलात अधिपत्य के माध्यम से त्याग, तपस्या व भगवत भक्ति के निष्कंटक मार्ग को प्रशस्त कर जीवन को प्रभु भक्ति में समर्पित कर स्वयं का व विश्व के प्रत्येक प्राणीयों का कल्याण कर।

सियाणा - राष्ट्रसंत प. पू. जैनाचार्य जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती

मुनिराज श्री केवलविजयजी, मुनिराज श्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में मुमुक्षु श्री सरेमलजी लखमीचंदजी की दीक्षा माघसुदी ६ को सानंद संपन्न हुई। नव दीक्षित मुनि का नामकरण श्री चिदानंदविजयजी म.सा. रखा गया। इस प्रसंग पर अरविंदा कुमारी की मोहनखेड़ा तीर्थ पर दीक्षा निमित्त शा. महेंद्र कुमार जेठमलजी की ओर से स्वामिवात्सल्य रखा गया।

साँथु - मुनिराज श्री जयानंदविजयजी आदि मुनि मंडल की निश्रा में श्री आदिनाथ, श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ आदि जिन बिम्वों का प्रवेश माघ सुदी १३ को सानन्द सोल्लास हुआ।

लाडनूं - आचार्य श्री तुलसी युवाचार्य महाप्रज्ञ के सानिध्य एवं मुनि श्री किशनलालजी के निर्देशन में वीदासर में आयोजित जीवन विज्ञान शिक्षक संदर्शिका लेखन कार्यशाला का आयोजन जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता एन.सी.ई.आर.टी. के प्रोफेसर डा. चिलाना मुल्कराज ने की। विशेष संभागी के रूप में मुनि श्री धर्मेन्द्रकुमार ने भाग लिया। समापन समारोह में कार्यशाला के अध्यक्ष डा. चिलाना ने कार्यशाला आचार्यश्री को समर्पित किया।

सिरोड़ी - विश्व शांति युवक जागृति प्रेरक जैनाचार्य श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में वाल ब्रह्मचारिणी मुमुक्षु वीणाकुमारी ने २० वर्ष की यौवनावस्था में भौतिक सुख सामग्री का त्याग करके संयम पथ अंगीकार किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में शा. वीरचंदजी घुड़ाजी परिवार ने तन, मन, धन से सहयोग दिया।

काकीनाडा - काकीनाडा में पुज्य मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी, मुनिराज श्री अजितशेखर विजयजी आदि ठाणा की निश्रा में प्रथम बार उपधान माला परिधान महोत्सव सम्पन्न हुआ। उपधान में १२३ आराधकों ने भाग लिया। समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप में जिला पुलिस अध्यक्ष श्री गोपीनाथ रेड्डी पधारे थे। इस अवसर पर मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी द्वारा लिखित पुस्तकों का विमोचन किया गया।

उम्मेदपुर - श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन बालाश्रम में नूतन भवन निर्माण के सहयोगकर्ता श्री ताराचंदजी, मिश्रिमलजी, मोहनलालजी, बोरीलालजी, डा. चम्पालालजी चौहान परिवार अगवरी निवासी का स्वागत संस्था द्वारा किया जाकर अभिनंदन पत्र भेट दिया गया।

शिवगंज - आचार्यदेव श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य युवा प्रवचनकार विद्वान मुनि श्री रश्मिरत्नविजयजी म.सा. ने दि. १० जनवरी रविवार को रामायण पर जाहिर प्रवचन दिया। प्रवचन में हर जाति व धर्म के हजारों भाई-वहनों ने भाग लिया तथा एकता व भाईचारे की एक मिसाल दी इस प्रवचन का आयोजन शा. घीसुलालजी

कपुरचंदजी सोलंकी परिवार ने शांतिस्नात्रादि पांच महापूजन सह अठ्ठाई महोत्सव के प्रसंग पर किया।

सुमेरपुर - यहाँ श्री जीरावला पार्श्वनाथ जिन विम्व की प्रतिष्ठा आचार्य प्रवर श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में माघ सुद ६ दि. २९/१/१९९३ को सम्पन्न हुई।

जयपुर - भारतीय हिन्दी परिषद का ३२ वां राष्ट्रीय अधिवेशन राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्वावधान में १६-१७ अक्टूबर १९९२ को सफलतापूर्वक संपन्न हूआ। इस अधिवेशन में राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, विहार, प. वंगाल, दिल्ली, पंजाव, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश आदि प्रान्तों से लगभग ५०० हिन्दी प्राध्यापक व साहित्यकार सम्मिलित हुए। अधिवेशन का संयोजन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. नरेन्द्र भानावत् ने किया।

सियाणा - आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री केवलविजयजी, मुनिराज श्री जयानन्द विजयजी आदि ठाणा साध्वी कुसुमश्रीजी आदि ३ ठाणा की उपस्थिती में वसों द्वारा सियाणा निवासी शा. भवुतमलजी सोनमलजी नाणेशा परिवार की ओर से फाल्गुन वदी ६ शुक्रवार दि. १२/२/९३ को श्री जीरावला तीर्थ से श्री केशरियाजी तीर्थ यात्रा प्रवास संघ निकाला गया। माला परिधान फाल्गुन वदी १३ शुक्रवार दि. १९/२/९३ को श्री केशरियाजी पर हुआ। यात्रा प्रवास संघ निमित्ते अष्टान्हिका महोत्सव का कार्यक्रम रखा गया।

आहोर - श्री गोड़ी पार्श्वनाथ बावन जिनालय की वर्षगांठ निमित्त मुनिराज श्री केवलविजयजी म. सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में मुथा हस्तीमल फूलचंदजी तिलेसरा सोलंकी परिवार ने सकल श्री संघ की आज्ञा लेकर नवकारशी का लाभ लिया। जिनालय की वर्षगांठ फाल्गुन वदी ५ गुरुवार दि. ११/२/१९९३ को सानंद सम्पन्न हुयी।

नवाडीसा - श्री पार्श्वनाथ आदि जिन विम्वों की प्रवेश प्रतिष्ठा आचार्य देव श्रीमद् विजय सुदर्शनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में माघ सुदी १३ शुक्रवार दि. ५/२/१९९३ को सानंद सम्पन्न हुयी। प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग पर श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा, श्री अष्टापदजी की पूजा, श्री १०८ पार्श्वनाथ अभिषेक महापूजन, रथयात्रा, मुमुक्षु प्रीतिकुमारी का दीक्षा वर्षीदान वरघोड़ा, साधर्मिकवात्सल्य आदि कार्यक्रम हुए।

देवनहल्ली - प. पू. आचार्य श्रीमद् स्थूलभद्रसूरीश्वरजी के आचार्यपद एवं दक्षिण केसरी पद में स्वर्णीम दिन के उपलक्ष्य में दि. १०/१/१९९३ रविवार को नाकोड़ा अवन्ति १०८ पार्श्वनाथ जैन तीर्थ धाम देवनहल्ली में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री चारुकीर्ती भट्टारक ने अपने करकमलों से दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस

कार्यक्रम में अनेक स्कुलों के बच्चों द्वारा नवकार मंत्र की आराधना, स्तुति एवं जैन धर्म के ऊपर अनेकों मन मोहनीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था श्रीं अरिहंत जैन प्राणी कल्याण संस्था के सक्रीय सदस्यों द्वारा की गयी।

दुर्ग - पूज्य श्री रतनमुनिजी म. सा. आदि ठाणा ५ के सानिध्य में स्व. पूज्य गुरूदेव श्री मंगलचंदजी म. सा. का जन्म एवं दीक्षा दिवस अति धुमधाम से मनाया गया।

रानापुर - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं प्रगतिशील नेहरू युवा मंडल के तत्वावधान में एक दिवसीय चर्म रोग निदान शिबिर का आयोजन किया गया। शिबिर का शुभारम्भ श्री सुजानमलजी जैन के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. सु. श्री. उषा मेढा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस शिबिर में १२५ रोगीयों का परिक्षण किया गया। इस शिबिर को सफल बनाने के लिए एवं केन्द्रीय अध्यक्ष स्वर्गीय श्री जीतमलजी हिराणी की स्मृती में एक विकलांग को ट्राईसिकल भेंट की गई। कार्यक्रम सफल रहा।

विजयवाड़ा - श्री राजेन्द्र जैन सेवा संघ की ओर से "निःशुल्क नैत्र शिबिर का आयोजन रखा गया। शिबिर का उद्घाटन कलेक्टर श्री राजीव शर्मा ने दीप प्रज्वलित करके किया। डॉ. वि. शाम्बशिवराव ने रोगियों की जांच करके रोगियों को निःशुल्क दवाई वितरण करवाई।

कर्जत - कर्जत युवक संघ द्वारा दिपावली के अवसर पर फटाके न फोड़नेवाले २५ बच्चों को इनाम में हाथ घडी वितरित की गई।

हुबली - राजस्थान युथ फेडरेशन द्वारा प्रकाशित "गागर में सागर जैन निर्देशिका" का विमोचन महानगर के आयुक्त श्री वी. पी. कनीराम के करकमलों द्वारा किया गया।

मदुराई - माघ सुदी १३ शुक्रवार दि. ५/२/९३ को शा. मंगलचंदजी दरगाजी दासपा वालों के कर कमलों से नूतन धर्मशाला का खात मुहुर्त सम्पन्न हुआ।

राजनांदगांव - विनय मित्र मण्डल तथा लायनेस क्लब ऑफ नांदगांव के संयुक्त तत्त्वावधान में तीन दिवसीय निःशुल्क विकलांग सहायता शिविर का आयोजन किया गया।

मद्रास - श्री आहोर जैन प्रवासी संघ के चुनाव सर्व सम्मति से सम्पन्न हुए जिसमें निम्न पदाधिकारी मनोनित किये गये। सर्व श्री कमलचंदजी मेहता (अध्यक्ष), श्री विजयराजजी कोठारी (सचिव), श्री विमलचंदजी तलावत (कोषाध्यक्ष)।

ग्वालियर - आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी म. सा. की निश्रा में ४ अप्रैल से महावीर पंचकल्याणक मानस्तम्भ प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव, एवं विश्व शांति महायज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनकर सम्यग्ज्ञान का प्रसार करे

आपका पत्र मिला

❀ शाश्वत धर्म अंक बहुत ही उपयोगी एवं निखर रहा है। आपके मार्गदर्शन व कुशल सम्पादन से हीरे जवाहरात से अलंकृत मूर्ति के समान सुशोभित हो रहा है। यही मेरी शुभ कामना। **- सुरेशकुमार एस. वोरा (बाकरावाला) मद्रास**

❀ जनवरी शाश्वत-धर्म प्राप्त हुआ। पत्रिका में पावन चरणों में शत्-शत् वन्दन (रेखाजैन) एवं 'मेरे मधुकर' (पुखराजजी जैन) द्वारा लिखित स्तवन् विवेचन सराहनीय व ज्ञानवर्धक लगे। **- मनोज जैन - खरसोद कलाँ**

❀ शाश्वत धर्म अंक मिला। सर्वश्रेष्ठ सम्पादकीय लगा जिसमें मन को गुरू गौतम की भांति एकाग्र लगा। शाश्वत पत्रिका दिन दुगुनी और रात चौगुनी प्रगति करे यही शुभकामनाएं। **- पृथ्वीराज जे. जैन, सांचोर**

❀ शाश्वत धर्म पत्रिका मिली। सामग्री आत्मज्ञान की ज्योति जगमगाने के लिये अत्युत्तम साधन है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। **- अशोक जैन - महेश्वर**

❀ शाश्वत धर्म पत्रिका मिली। इसमें रूकिये ! पढिये !! सोचिये !!! अति विचारणीय है। आपकी पत्रिका समाज सेवा में दिन-दुनी उन्नत्ती करे यही मेरी हार्दिक कामना है। **- महावीर बी. कोठारी - मद्रास**

❀ शाश्वत धर्म का प्रकाशन सुन्दर ढंग से हो रहा है। सभी सम्प्रदायों की प्रसन्नता लेख आदि सब बहुत ज्ञान वर्धक उपयोगी व पाठनीय है मेरी शुभकामनायें हमेशा आपके साथ है। **- विनोद अेस. संखलेचा - मेंगलवा**

❀ जनवरी का शाश्वत धर्म मिला। "भामती की निष्काम सेवा" व "स्वास्थ्य चर्चा" बहुत ही रोचक लगे। मैं सदैव आशा करता हूँ कि पत्रिका उन्नति के शिखर पर पहुँचे। यही शुभ कामनाएँ। **- संघवी महेन्द्र जैन - ताड़पत्री (आ. प्र.)**

❀ शाश्वत धर्म निरन्तर नया अनोखा स्वरूप बनकर आता है। आपका सम्पादकीय लेख देश को नई दिशा देने वाला होता है। **- हस्तीमल बागरेचा (हैद्राबाद)**

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनाकर सम्यग्ज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोग दीजिये।

❀ नव.+दिस. अंक मिला। वहुत अच्छा लगा। सम्पादकीय पशुवध के खिलाफ दस साल से डटे हैं सत्याग्राही पढ़कर अच्छी जानकारी मिली। इसके खिलाफ सिर्फ सत्याग्रही को ही नहीं हर मनुष्य को डटे रहना चाहिए यही मेरी इच्छा हैं। **- सुरेश मेहता - वैंगलोर**

❀ नव.+दिस. अंक मिला। सम्पादकीय पशुधन कत्ल के वारे में जानकारी पढ़कर दिल में गहरी चोंट लगी। काश! सरकार वढ़ती आवादी की चिन्ता के साथ घटती पशु संख्या के वारे में चिन्तित होती। **- पृथ्वीराज जैन**

❀ नव.+दिस. अंक में आपके द्वारा लिखा सम्पादकीय 'पशुवध के खिलाफ' जो आपने लेख प्रकाशित किया है वह अति सुन्दर है और यह देश के हित के लिये है। हम आशा करते है शाश्वत-धर्म की उन्नति ही देश के लिये हितदायक होगी।

- रोहित भंडारी - ताड़पत्री

❀ शाश्वत धर्म की प्रतिकृति सुन्दर व बोधपूर्वक साहित्य पढ़कर खुशी होती है। ज्ञान वर्धक लेख के लिए धन्यवाद है। **- वी. वी. मेहता - मद्रास**

❀ शाश्वत धर्म अंक मिला। यह पत्रिका निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो। यही मेरी शुभ कामना है। **- दिनेश कुमार - वालोतरा**

❀ शाश्वत-धर्म नव.+दिस. अंक मिला। 'फर्टीलाइजर सवसीडी - मौत की वर्षा' अच्छा लगा। पशुवध के विषय पर लिखा गया सम्पादकीय अच्छा लगा। मेरी शुभ कामनाएँ स्वीकार करें। **कंकु देवी - सुराना**

❀ नव.+दिस. का मासिक प्रकाशन मिला। 'रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!!' वहुत अच्छा लगा। पशुवध के वारे में जानकर दिल द्रवित हुआ। शाश्वत धर्म जैन धर्म की गतिविधियों के लिए सर्वोत्तम है। **- दुर्गाचन्द जैन - मेंगलवा**

❀ नव.+दिस. अंक मिला। पशु हत्या के वारे में जानकारी सटीक थी। मेरी ओर से आपको शुभ कामनाएँ। **- सुरेश संकलेचा - मदुराई**

❀ शाश्वत-धर्म किताव तो घणी अच्छी लागे है यो तो म्हारो सौभाग्य है के अतरी वढिया किताव म्हारा घरे आवे ने महाखा ने अणीती अच्छी-अच्छी ज्ञान की वाता वाचवा ने मिले। गुरुदेव ती याज प्रार्थना है के या किताव लगातार उन्नति करें।

- राजेश ओहरा - रतागढ़ खेड़ा

महावीर-वाणी

- धागे में पिरोई हुई सूई गिर जाने पर भी गुम नहीं होती उसी प्रकार ज्ञान-रूप धागे से युक्त आत्मा संसार में भटता नही, विनाश को प्राप्त नहीं होता ।

- स्वाध्याय से ज्ञानवरण (ज्ञान को आच्छादन करने वाले) कर्म का क्षय होता है ।

– मधुकर

परिषद के प्रांगण से

आदरणीय परिषद बंधुओं! सादर जयजिनेन्द्र!

हमारी संस्कृति अहिंसा, दया, मैत्रीभाव तथा करूणा की है। इन गुणों के आधार पर ही जैन धर्म ने समय-समय पर पूरे देश का दिशा निर्देशन किया है। अहिंसा की शक्ति असीम है व्यक्ति चाहे कितना ही क्रूर हो, वह कदापि अहिंसा की शक्ति को हिंसा की लहर से विस्थापित नहीं कर सकता। हिंसा उग्रता की परिचायक है। व्यक्ति विवेकहीन बनकर जव क्रोध में उवलने लगता है तव प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर वह हिंसा का प्रदर्शन करता है। इससे उसे कुछ प्राप्ति नहीं होती है। विपरित वह खोता है हिंसा का उत्तर हिंसा नहीं है। हिंसा का शमन अहिंसा से ही हो सकता है।

आज देश में चारों ओर जो वातावरण बन गया है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य का भाईचारा टूट गया है। वैचारिक स्तर दहक रहा है। धर्म की सही परिभाषा से हम विमुख हो गए हैं तथा धर्माचरण की हमारी जीवन शैली भटक गई है। धर्म के माध्यम से जीवन सुधार तथा आत्म कल्याण का लक्ष्य सम्पूर्ण करना दूर की बात बनती जा रही है देश के वातावरण का प्रभाव हर समाज तथा परिवार पर होता है। इन सभी का असर हमारे परिवारों, पड़ौस नगर व भावी पीढ़ी पर भी होना है। देश में उन्माद की इस आंधी से घोर अव्यवस्था छा गई हैं। स्थान-स्थान पर दंगे हुए हैं तथा रक्तपात हुआ है। दया व करूणा के भावों की तरंगें दिखाई नहीं दे रही है लेकिन यह सभी अस्थायी हैं। मानव को शांति व राहत अहिंसा, मैत्री, दया तथा करूणा जैसे भाव ही दे सकता है। भगवान महावीर स्वामी ने ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व अहिंसा के अग्रदूत के रूप में ही अवतरण किया था। उन्होंने अहिंसा की सूक्ष्मता तक व्याख्या कर जनमानस को इस मार्ग की ओर प्रवृत्त किया। उन्होंने युग की धारा को मोड़ा उन्ही के उपकार से आज भी भारत अहिंसा संस्कृति के लिए पूरे विश्व में सम्मानजनक स्थान बनाए हुए है। पुनः देश में हिंसा अपने चरमोत्कर्प पर पहुंच रही है इस समय हमारा कर्तव्य है कि इस अंधेरे को दूर करने के लिए अहिंसा दीप के प्रकाश से देश को मार्ग दिखाएं। अहिंसा ही देश को ऊवार सकती है। मानव-सभ्यता के पतन का यह दोर अहिंसा से ही रोका जा सकता है।

परिपद की समस्त शाखाओं से अपिल है कि वे अहिंसा प्रचार के लिए अभियान प्रारंभ करें। परिपद के माध्यम से अपने नगरों में अहिंसा-गोष्ठियों का आयोजन करें, अहिंसा सम्मेलन रखें, अहिंसा विपय पर निवंध, भापण स्पर्धाओं का आयोजन करें, विद्वानों के अहिंसा पर प्रवचन करवाएं तथा स्थानिय दैनिक/साप्ताहिक/मासिक समाचार पत्रों में अहिंसा पर सामग्री प्रकाशित करवाएं अहिंसा के लिए किए जाने वाली प्रवृत्ति को प्रवल करें। इन आयोजनों को सार्वजनिक रूप से किया जाए तथा सभी धर्मावलम्बियों को तीर्थंकर महावीर देव के उपदेशों से अवगत किया जाए।

इस समय हमारा कर्तव्य है। इस कर्तव्य को हमें निभाना है।

सेवन्तीभाई एम. मोरखिया
अध्यक्ष
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

गुरू जयंति की धूम

परिषद की शाखाओं ने समाज के सहयोग से अपने अपने नगरों, ग्रामों में गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज की जयंति के अवसर पर धूमधाम से सर्वत्र कार्यक्रम आयोजित किए।

- **ढोढर (जि. रतलाम)** में गुरूजयंति ठाठ से मनाई गई गुरूगुण इक्कीसा का सामूहिक पाठ हुआ तथा गुरूवंदना की गई।

- **पूना (महाराष्ट्र)** में गुरूदेव की अष्टप्रकारी पूजन का आयोजन पूरे हर्षोल्लास के साथ किया गया। जिसमें डेढ हजार भक्तों ने भाग लिया। प्रभावना एवं लड्डू व सेव का भाता वितरित किया गया। दो बस तथा दो मीनी बस में १७५ यात्रियों को लेकर शाह तेजराजजी देवीचंदजी गीरीया मेहता बीरामी राजस्थान वाले श्री सुरेशकुमारजी पन्ना कलेक्शन ने यहां से बावनगजा तीर्थ होते हुए लक्ष्मणजी, मोहनखेड़ा, भोपावर, मांडव, इंदौर की संघ यात्रा करवाई जो सकुशल सम्पन्न हुई।

- **जावरा** में प्रातः स्नानपूजन, दोपहर गुरूदेव की पूजन व सायं भक्ति का आयोजन किया गया महिलाओं ने भी हर्षोल्लास से भाग लिया।

- **धानेरा** में पूज्य साध्वी श्री पूज्य दर्शनाश्रीजी तथा पूज्य साध्वी श्रीहर्षदर्शनाजी की निश्रा में आयोजन सम्पन्न हुआ। भव्य अंगरचना की गई, दादा गुरूदेव की पूजा पढ़ाई गई। स्वधर्मीवात्सल्य रखा गया।

- **थराद** में गुरू सप्तमी महोत्सव खूब धुमधाम से मनाया गया। पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिचंद्रविजयजी महाराज के सानिध्य में अभूतपूर्व उत्साह से पांच दिनों का महोत्सव रखा गया। दोपहर संगीत पार्टी के साथ पूजा तथा रात्रि को भक्ति के कार्यक्रम रखे गए गुरूजयंति के दिन स्वधर्मीवात्सल्य हुआ प्रातः व्याख्यान, दोपहर पूजा तथा पाठशाला के भाई बहनों के लिए गुरूदेव के जीवन पर भाषण प्रतियोगिता हुई। परिषद शाखा की ओर से प्रत्येक प्रतियोगी को पच्चीस रूपए पुरस्कार रखा गया सामूहिक आयंबिल में डेढ़ सौ भाई-बहनों ने भाग लिया। भव्य भावना तथा अंग रचना का आयोजन किया गया। गुरूमंदिर का फूलों से श्रृंगार किया गया। हजारों लोगों ने भाग लिया। पूरे जैन समाज ने व्यापार बंद रखकर कार्यक्रमों में भाग लिया।

- **काकीनाड़ा** में श्रीमद् राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। आंगी हुई व शाम को गुरूभक्ति का आयोजन किया गया। गुरूजयंति श्री नेमीनाथ जैन मंदिर में मनाई गई। सामूहिक आयंबिल आराधना भवन में कराए गए।

  परिषद शाखा के उपक्रम से असहाय लोगों को चादरें वितरित की गयी, इस अवसर पर एस. पी. साहब पधारे थे।

इन्दौर : विश्वपूज्य गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. का जन्म व स्वर्गारोहण तिथि गुरूसप्तमी महोत्सव दि. ३१-१२-९२ से दि. ३-१-९३ तक चार दिवसीय विविध कार्यक्रमों के साथ श्री संघ व परिषद शाखा इन्दौर के तत्वाधान में मनाया गया। जिसके अंतर्गत प्रतिदिन मंदिरजी पर आकर्षक विद्युतसज्जा, दोपहर में महिलामंडल द्वारा अष्टप्रकारी पूजन, अंगरचना, रात्रि को आरती एवं भक्ति के आयोजन किए गए।

दिनांक ३ जनवरी रविवार को प्रातः १० बजे श्री राजेन्द्र उपाश्रय में गुरू गूणानुवाद सभा यहाँ विराजित पू. मुनिराज श्री कलहंसविजयजी म. सा. की सानिध्यता में की गई इस सभा का शुभारम्भ मुख्य वक्ता कुक्षी से पधारें विद्ववर्य श्री मणिलालजी पुराणिक द्वारा गुरूदेव के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के द्वारा हुआ श्री मणिलालजी पुराणिक ने अपने ओजस्वी विद्वतापूर्ण उद्वोधन के द्वारा गुरूदेव को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। एक अन्य वक्ता श्री कमलसेठी (इन्दौर) ने भी गुरूदेव को शव्दांजली दी। श्री पुराणिक का वहुमान परिषद द्वारा श्री हजारीमलजी रांका व पूनमचंदजी रूनवाल ने किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद के अध्यक्ष श्री यशवंत वोराणा व आभार प्रदर्शन सह सचिव नीरज सुराना ने किया।

अलिराजपुर : परिषद शाखा के ९२-९३ के चुनाव करवाये गये। जिसमें सर्व सम्मति से श्री प्रफुल्लकुमार जैन (अध्यक्ष), श्री कमलेश काकड़ीवाला (सचिव) श्री अनिल जैन (कोषाध्याक्ष), चुने गये। चुनाव केन्द्रीय अल्पबचत मंत्री श्री जवाहरलालजी जैन की सानिध्यता में सम्पन्न हुए।

अलिराजपुर में गुरू जयंति के अवसर पर त्रिदिवसीय (४ से ६ जनवरी तक) विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। ४ जनवरी को प्रो. श्री. के. के. त्रिवेदी एवं श्री दीक्षित द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के फोटो को पुष्पमाला पहनाई गई। बाद में स्तवन प्रतियोगिता एवं "आज का युवा एवं धर्म" पर परिसंवाद का कार्यक्रम हुआ। ५ जनवरी को रात्रि ७ वजे गरवा तथा नाटक कार्यक्रम हुआ। ६ जनवरी को प्रा. जैन के मुख्य आतिथ्य में रात्रि प्रश्नमंच कार्यक्रम एवं फेन्सी ड्रेस प्रतियोगिता हुई। दोपहर को स्वास्तिक मंडल प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। गतिविधियों की जानकारी वाल परिषद अध्यक्ष श्री मनीष ने दी। परिषद के राष्ट्रीय अल्पवचत मंत्री श्री जवाहरलाल जैन द्वारा सारे कार्यक्रमों का संचालन व तैयारी की गई। समाज के सदस्यों को बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरणा दी गई।

वांसवाड़ा में शाखा का गठन

वांसवाड़ा : यहाँ समाज की वैठक परिषद राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य - श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन पूर्व बीमा अधिकारी इंदौर के मुख्य आतिथ्य तथा श्री महावीरजी जैन कुशलगढ़ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें वाँसवाड़ा में परिषद शाखा का गठन किया गया। श्री राकेशकुमारजी जैन को अध्यक्ष तथा श्री जगदीशजी जैन को मंत्री नियोजित किया गया। पूरी कार्यकारिणी अध्यक्ष घोषित करेंगे।

राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी का दसवाँ पाटोत्सव महोत्सव सम्पन्न

दलोदा - आचार्य देव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के दसवें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ५/२/९३ को म.प्र. इकाई के अध्यक्ष डॉ. श्री सोहनलालजी सुराना की अध्यक्षता में श्री शीतलनाथ राजेन्द्र जैन मंदिर में एक विचार-गोष्ठी का आयोजन रखा गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से किया गया। तत्पश्चात् म.प्र. इकाई के अध्यक्ष - श्री सुरानाजी ने इस मंगल दिवस पर सबकी ओर से आचार्यश्री को वन्दन एवं अभिनन्दन प्रकट किया तथा शासन देव से प्रार्थना की कि श्री आचार्यदेव युगो-युगो तक इस पद पर आसीन रहकर जिनशासन की शोभा बढ़ाते रहे तथा हम सबको सदमार्ग बताते रहें।

डॉ. नरेन्द्र भानावत प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत

जयपुर - अ. भा. जैन विद्वत परिषद के महामंत्री एवं जिनवाणी के सम्पादक डॉ. नरेन्द्र भानावत राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अपनी विशिष्ट साहित्यिक उपलब्धियों एवं योग्यता के आधार पर प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किये गये हैं। डॉ. भानावत ने लगभग २५ मौलिक व ५० सम्पादित कृतियाँ सृजित की हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से उनकी लगभग ८० वार्ताएँ प्रसारित हो चुकी हैं। उनके निर्देशन में १३ छात्र पी. एच. डी. उपाधि प्राप्त कर चुके है। आप राजस्थान, जोधपुर, उदयपुर, इन्दौर आदि विश्वविद्यालयों की हिन्दी-राजस्थानी पाठ्यक्रम समितियों के सदस्य और संयोजक रहे है। आप राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हैं।

१ जनवरी से २८ फरवरी १९९३ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य वनाने वाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल सदस्य
श्री पारसमलजी वी. मुथा - लोनावला	--	१	३२	३३
कार्यालय - थाने	२	४	११	१७
श्री मोहनलालजी एच. जैन - जोगेश्वरी	२	३	३	८
श्री बावुलालजी वोहरा - नागदा जं.	१	--	१	२
श्री घीसुलालजी - काकीनाड़ा	१	--	--	१
श्री रुपचंदजी पटवारी - मांडवला	१	--	--	१
श्री अशोक श्रीश्रीमाल - टाण्डा	--	१	--	१
	७	९	४७	६३

पधारिये ! 卐 श्री आदिनाथाय नमः 卐 **अवश्य पधारिये !!**

श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वराधनचंद्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचंद्र गुरुभ्यो नमः

सुविशाल गच्छाधिपति, राष्ट्रसंत, गांभीर्यादिगुणालंकृत
वर्तमानाचार्यदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज के
आज्ञानुवर्ती प. पू. मुनिराज श्री जयानन्दविजयजी म.
आदि मुनिमंडल की परम पावन निश्रा में

साँथू नगर (राज.) में श्री आदिनाथ जिन मन्दिर एवं पू. श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरु मन्दिर का

भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री संघ आमंत्रण

मंगल महोत्सव	प्रतिष्ठा
वैशाख वदी ११ शनिवार दि. १७-४-९३ से वैशाख सुदी ७ गुरुवार दि. २९-४-९३	वैशाख सुदी ६ बुधवार दिनांक २८-४-१९९३

卐 मंगल कार्यक्रम 卐

श्री अष्टोत्तरी शांतिस्नात्र, श्री अठारह अभिषेक एवं श्री भक्तामर महापूजनादि सहित जिन भक्ति के विशिष्ट मनमोहक कार्यक्रम सुप्रसिद्ध विधिकार, संगीतकार आदि के द्वारा मनमोहक होंगे। प्रभुजी की अंगरचना, चलचित्रों की रचना, वरघोड़े आदि भव्य कार्यक्रमों में सहभागी बनकर कर्मनिर्जरा करने अवश्य पधारें।

आपरा पधारवासु शासन री शोभा होसीजी।

साँथू नगर - अहमदाबाद समदड़ी रेलवे लाइन में बाकरा रोड़ से १० कि. मी. एवं मारवाड़ बागरा से ५ कि. मी. जालोर से २५ कि. मी. दूर है। अहमदाबाद, सूरत, जयपुर, नाकोड़ा, जालोर एवं भीनमाल से मारवाड़ बागरा उतरने से साँथू के लिए टैक्सियों की सुन्दर व्यवस्था है। बाकरा रोड़ जालोर से सीधी बस सेवा भी उपलब्ध है।

महोत्सव में पधार कर हमें साधर्मिक भक्ति का लाभ देने की कृपा करें।

निमंत्रक-

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढ़ी
साँथू नगर, जि. जालोर-३४३ ०२७ (राज.)

सकल श्रीसंघ
साँथू नगर

शब्दसागर इनामी स्पर्धा १५ के उत्तर एवं परिणाम

परिणाम - १) कुमारी सोमी जैन - बाग (डी-८५७) २) कुमारी संगीता जे. संघवी - थाने (बी-८९) ३) कुमारी अंजुवाला डूँगरवाल (पारावाला) - रतलाम (सी-८२२) ४) श्री जितेन्द्रकुमार बी. जैन - थेरगांव (पूना) (सी-१०१५) सभी उत्तीर्ण प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप प्रत्येक को दो सौ रूपये का समान भाग २००/४ = ५० (पचास रू. नगद) म. आ. द्वारा भेज दिये गए हैं।

उत्तर :- बाएं से दाएं - १)प्रमाद ३) पश्चाताप ६) कोठारा ८) त्याग ९) सार १०) नाता १२) विगई १३) साल १५) कावि १८) रज १९) नन्द २०) वानर २२) समुद्रविजय २४) साचासुमति २५) करता २६) उपमा २७) अविनय ३०) अ ३१) रज ३२) शकडाल ३५) वत्तिया ३६) स्वर्ण ३७) इत्थी ३८) अवश ४०) दिन, दिन ४३) सोमिल ४४) सासन ४६) अरिहंत ४७) कुमार ४८) रामटेक ४९) माता ५०) पल ५१) सल्लखेना ५२) रसपरित्याग।

उपर से नीचे की ओर - १) प्रत्याख्यान २) माग ३) पर ४) ताना ५) पताका ६) कोह ७) राई ९) साल ११) गरजता १२) विजय १४) जैनम १६) विसर्जन १७) अद्रक २०) वासुदेव २१) रति, अरति २३) वीरवाडा २४) सामायिक २६) उप्पननेइ वा २८) विजया २९) यशस्वन ३३) कर्ण ३४) लत ३५) वश ३८) अमीरस ३९) वल ४०) दिनकर ४१) दुरितारी ४२) वीतराग ४३) सोमा ४४) सामना ४५) सटे ४६) अमाप ४७) कुल ४८) राख।

शोक श्रद्धांजली

❖ **लवाणा** - धर्मप्रेमी, जीवदया में तन, मन, धन से सहयोग देनेवाले लवाणा निवासी शा. चम्पालाल रीखवचंदजी का डीसा में ६५ वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आप शांत स्वभावी व्यक्ति थे।

❖ **डीसा** - जेतडा निवासी वीरवा डीया बाबुलालजी देवचंदजीभाई का ५८ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप जैन शासन के कार्यो में अग्रणीय थे। आपके देहावसान से वीरवाडिया समाज को क्षति हुई है।

❖ **कोटा** - श्री भंवरलालजी संघवी का दि. १२-१-९३ को स्वर्गवास हो गया। आप व्यापारी संघ के प्रमुख एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।

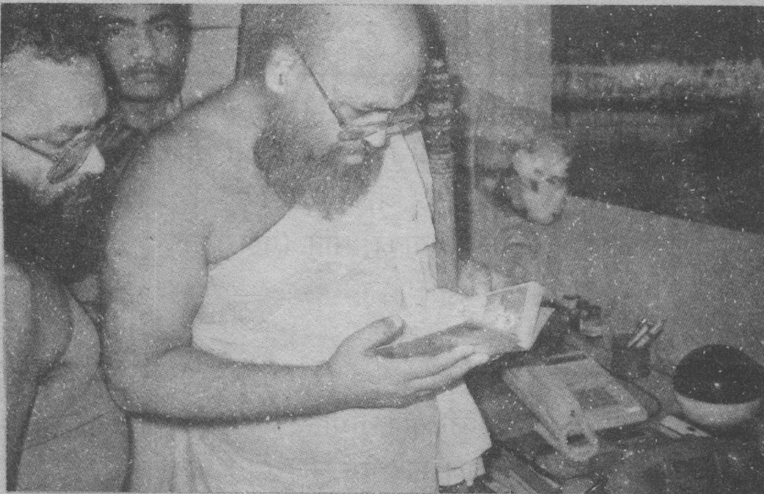

प.पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी का शाश्वतधर्म कार्यालय में पदार्पण एवं अवलोकन (समाचार पृष्ठ:३७ पर)

प.पू. आचार्य श्री इप्जी आर्ट प्रिंटर्स के प्रेस में भी पधारे, जहाँ शाश्वतधर्म छपता है (समाचार पृष्ठ:३७ पर)

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा-काकिनाडा के उपक्रम से असहायों को चादर वितरण (समाचार पृष्ठ ४८ पर)

शाश्वत धर्म के सम्बन्ध में तथ्य संबंधी घोषणा

फार्म ४ (नियम ९) रजिस्टार आफ न्यूज पेपर्स के आदेशानुसार

प्रकाशन स्थान	: जामली नाका, थाने (महाराष्ट्र)
प्रकाशन अवधि	: मासिक
मुद्रक, प्रकाशक	: जे. के. संघवी
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: जामली नाका, थाने.
स्वामित्व	: अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद केन्द्र, मोहनखेड़ा तीर्थ.

मै जे. के. संघवी एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सत्य है।

जे. के. संघवी
सम्पादक

મરતાં સમરો

દુઃખ અશાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી આવે છે, અને તેથી માનવી સમાધિથી ચલિત થાય છે. દુઃખની અસહ્ય વેદનામાં ખોટા વિચારો કરી દુર્ગતિએ પણ જાય છે.

આવા અવસરે દુઃખમાં સુખનો અનુભવ એક માત્ર 'કલ્યાણમિત્ર' જ કરાવી શકે, જે દુઃખી બીમાર આત્માને સાંત્વન આપવા દ્વારા વૈરાગ્યનો રંગ લગાડે છે. સંસાર પરનો મોહ ઉતારી, વેદનાને સમભાવે સહન કરી સમાધિ જાળવવા, આગ્રહ કરે છે. અને આ 'મંત્રાધિરાજ'નું રટન ચાલુ રાખી પરભવ સુધારવા સમજાવે છે.

આ રીતે અંત સમયે કલ્યાણમિત્ર નવકાર મંત્રનું સ્મરણ કરી કરાવી મરણને સુધારી સદ્ગતિ અપાવે છે.

- *કામભોગ શલ્યરૂપ છે, કામભોગ વિષરૂપ છે, અને કામભોગ ભયંકર સર્પ જેવા છે. જે ઓ કામભોગની ઈચ્છા કર્યા કરે છે, તે એને પ્રાપ્ત કર્યા વિના જ દુર્ગતિમાં જાય છે.*

- *કામભોગો ક્ષણમાત્ર સુખ આપનારા છે અને ઘણા સમય સુધી દુઃખ દેનારા છે. કામભોગોની સામગ્રી મેળવવામાં ઘણું કષ્ટ ઉઠાવવું પડે છે, જ્યારે સુખ તો નામ માત્રનું મળે છે. વળી સંસારમાંથી છૂટવા માટેના જે ઉપાયો છે, તેના એ પ્રતિપક્ષી છે. પાકા વિરોધી છે. અને અનર્થની ખાણ છે.*

આનંદ શ્રાવક અને અપરિગ્રહ

-શ્રી રોહિત શાહ

સંગ્રહ કરવાની મનોવૃત્તિવાળા માનવી પાસે સંપત્તિ હોવી એ અભિશાપ છે.

પરમાર્થે સદ્દ્વ્યય કરવાની શુભ ભાવનાવાળા માનવી પાસે સંપત્તિ હોવી એ આશીર્વાદ સમાન છે.

ભગવાન મહાવીરના સમયમાં આનંદ નામનો એક શ્રાવક થઈ ગયો. તેના ખજાનમાં બાર કોટિ સુવર્ણમુદ્રાઓ હતી. અને તેના ગૌચરમાં ચાળીસ હજાર ગાયો હતી. આ ઉપરાંત પણ ધન સંપત્તિની અઢળક વૃદ્ધિ થયા કરતી હતી.

આનંદ શ્રાવક ગાયોની રૂડી માવજત કરતો હતો. ગૌચરમાં લીલું-ઘાસ ઉગાડતો, ગાયોને પીવાનાં પાણીની સુયોગ્ય વ્યવસ્થા કરતો, ઠંડી-ગરમી અને વરસાદમાં ગાયોને કાંઈ તકલીફ ના પડે તેની તકેદારી રાખતો.

પૈસો પૈસાને ખેંચી લાવે છે.

આનંદ શ્રાવકની સંપત્તિ, નવી અઢળક સંપત્તિને તેડી લાવતી હતી.

એક વખત આનંદ શ્રાવકને સમાચાર મળ્યા કે તેના નિવાસસ્થાને સ્વયં પ્રભુ મહાવીર પધારવાના છે. આનંદના હૈયે હરખનાં શત શત પદ્મ વિકસી-વિલસી રહ્યાં. એને ખુદને પોતાના અહોભાગ્યની ઈર્ષ્યા ઉપજી! જેનાં દર્શન કરવા જગતના જીવો અધીરા થઈ ઊઠે છે. તેવા પરમાત્મા મહાવીર ખરેખર શું પોતાને આંગણે પધારશે?

આનંદ શ્રાવકે પ્રભુના સ્વાગતની તૈયારીઓ કરવા માંડી. પ્રભુદર્શનની શુભ ઘડી જેમ જેમ સમીપ આવતી હતી તેમ તેમ તેની પ્રતીક્ષા ઉત્કટ બનતી જતી હતી.

ને આખરે એ વિરલ, ધન્ય, શુભ ઘડી આવી.

પ્રભુ મહાવીર આનંદ શ્રાવકને ઘેર પધાર્યા. આનંદનો સમગ્ર પરિવાર પ્રભુની સેવામાં ઓતપ્રોત થઈ ગયો.

છેવટે આનંદ શ્રાવકે પ્રભુને પૂછ્યું, "પ્રભુ! આપના આગમનથી મને રોમેરોમે અનરાધાર હર્ષનો રોમાંચ થઈ રહ્યો છે. કિન્તુ, આપના આગમનનું પ્રયોજન જાણવા અધીર છું."

"આનંદ! તારી ચિંતા મને અહીં આવવા પ્રેરતી હતી..." પ્રભુ બોલ્યા.

"મારી ચિંતા?"

"હા..."

"પરંતુ, પ્રભુ આપના આશીર્વાદથી, પ્રબળ પુણ્યોદયથી અને સદ્દગુરુની કૃપાથી મને કોઈ વાતે લેશ પણ દુઃખ નથી. મારા જીવનમાં કશી આપત્તિ કે વિપત્તિ નથી. તો પછી

આપના દિલમા મારા પ્રત્યે ચિંતા પ્રગટાવવાનું કારણ શું?'' આનંદ શ્રાવક ગંભીર થઈ ઊઠ્યો.

''હું જાણું છું, વત્સ! તારે ત્યાં સુખસંપત્તિની કોઈ સીમા નથી. વળી, તેમાં અધિકાધિક વૃદ્ધિ થતી રહે છે. એટલે બાહ્ય દૃષ્ટિએ તો તારે કશી આપત્તિ નથી. પરંતુ એ જ કારણે મને તારી ચિંતા થઈ રહી છે.''

પ્રભુની વાણી સાંભળીને આનંદ શ્રાવકને જ નહિ. પરંતુ ત્યાં ઉપસ્થિત સૌ કોઈને વિસ્મયપૂર્ણ મૂંઝવણ જાગી.

''પ્રભુ આપના કથનનો મર્મ સમજાતો નથી.'' આનંદે કહ્યું.

''આનંદ! મારી ચિંતા એ જ છે કે તારી પાસે બેસુમાર ધન છે. અસંખ્ય ગાયો છે. અને તેમાં સતત ઉમેરો જ થયા કરે છે. ધનમાં આ રીતે વૃદ્ધિ થતી રહે એ ધર્મની વિરુદ્ધ છે.''

''પ્રભુ! કહેવાય છે કે મહાપુણ્યોદય હોય તો જ ધન-વૈભવ મળે છે. તો પછી એ ધર્મવિરુદ્ધ શી રીતે?

''આનંદ! જરૂરિયાત કરતાં વધારાની સંપત્તિ માનવીને પાપ કરવા પ્રેરે છે. તે ભોગવિલાસ અને પ્રમાદ તરફ વળવા પ્રેરાય છે. સંપત્તિ પુણ્યોદયથી મળતી હશે ખરી. કિન્તુ પાપનું નિમિત્ત પણ એ બની શકે છે.''

''તો, પ્રભુ! આજથી જ વેપાર-ધંધા બંધ કરીશ. ગૌચરને વેરાન કરી દઈશ.'' આનંદ બોલ્યો.

''ના, આનંદ! મેં તને વેપાર કે ગૌચર બંધ કરવાનું નથી કહ્યું, માત્ર તને એટલું જ કહેવું છે કે સંપત્તિને વધતી અટકાવો.'' પ્રભુએ કહ્યું.

''આપ સ્વયં મારા પથદર્શક બનો, તેવી અરજ છે.''

''તો હે આનંદ! પ્રત્યેક ધર્મમાં અપરિગ્રહનું મહત્વ સ્વીકારાયું છે. જૈન ધર્મમાં તો પરિગ્રહ-પરિમાણ વ્રતની પણ આગવી મહત્તા છે. અમુકથી વિશેષ ધનસંચય નહિ કરવાની શુભ પ્રતિજ્ઞા લેવી એ પણ તપ છે. વેપારધંધો બંધ કરી દઈએ તો અકર્મણ્ય બન્યા કહેવાઈએ. પરંતુ એ બંધ કરવાને બદલે, તેમાંથી મળતી આવકનો જગતના જીવો માટે સદ્વ્યય કરવો જોઈએ. નિ:સ્વાર્થપણે બીજાના જીવનને પોષણ આપવું એ ઉત્તમ ધર્મ છે.''

''પ્રભુ! આપની આજ્ઞા શિરોમાન્ય છે.''

''તો પછી, હવેથી વધારાની સંપત્તિનો સદ્વ્યય કરીને મને તેની જાણ કરજો. જેથી મારી તમારા માટેની ચિંતા મટે.'' કહીને ભગવાન મહાવીર પોતાના માર્ગે સંચર્યા.

આનંદ શ્રાવકે પ્રભુની આજ્ઞા પાળીને પોતાની જરૂરીઆતથી વિશેષ ધન-ધાન્ય બીજાઓને વહેંચવા માંડ્યું.

અઢી હજાર કરતાંય વધુ વર્ષો ઉપર થઈ ગયેલા પ્રભુ મહાવીરની મર્મવાણી આજના યુગમાં ય એટલી જ અર્થપૂર્ણ અને તાજગીભરી લાગે છે.

આજે ચોતરફ પરિગ્રહ, હિંસા, અસત્ય, અસંયમ અને પ્રમાદની જવાળાઓ લયકારા મારી રહી છે. તેવી વિકટ સ્થિતિમાં પ્રભુ મહાવીરની વાણી શીતળ આહ્‌લાદ આપે છે.

મંદિરો દહેરાસરોની બાહ્ય જાળવણી કરતાં, આંતરીક શુદ્ધિનું કાર્ય સવિશેષ મહત્વ ધરાવે છે.

સેવંતી એમ સંઘવી

મંદિરો ભારતીય સાંસ્કૃતિક ખજાનાના બેનમૂન પ્રતિકો છે. મંદિરોમાંની કળાસંપત્તિ બેજોડ અને સમૃદ્ધ છે, જેણે ભારતના ચાર પુરુષાર્થનો સાંસ્કૃતિક વારસાને અકબંધ રાખ્યો છે. આવો અમુલ્ય સાંસ્કૃતિક ખજાનો આપણને વારસામાં મળ્યો છે. કપરા કાળમાં પણ આપણા વડવાઓએ જિનભક્તિનો સંદેશ આપતા જિનાલયોની રક્ષા કુનેહથી ખુમારીપુર્વક કરી હતી. આજે પણ જિનમંદિરોની જાળવણી, જીર્ણોદ્ધાર, અને સંવર્ધનનું કાર્ય મહાજનો ચૉપ, ચીવટ અને ખંતપૂર્વક કરી રહ્યા છે. જેના લીધે આપણાં દેવાલયો મહા-મહાજન શ્રીતિર્થંકર દેવોના સંદેશને આર્યદેશના ખૂણેખૂણે પ્રસરાવી રહ્યાં છે.

મંદિરોની બાહ્ય જાળવણી કરતાં આંતરીક શુદ્ધિનું કાર્ય સવિશેષ મહત્વ ધરાવે છે. જૈન સિધ્ધાંતો પ્રમાણે આ કાર્ય શ્રાવક-શ્રાવિકાઓએ જાતે કરવાનું હોય છે. પણ આપણે જોઈ શકીએ છીએ કે ગૃહસ્થવર્ગ વર્તમાનકાળની બદલાતી જતી જીવનવ્યવસ્થાના કારણે આ બાબતમાં ઉદાસીન અને કેટલેક અંશે લાપરવાહ બન્યા છે. બાહ્ય રીતે પ્રભુનો પૂજક વર્ગ વધી રહ્યો છે. પણ પરમાત્મા અને દહેરાસરની શુદ્ધિનું કાર્ય દિવસે-દિવસે કથળી રહ્યું છે. કારણકે વિધિપૂર્વક પૂજાના બદલે પક્ષાલ-ચંદન-પુષ્પ-આંગી સિવાયનો વિધિ લગભગ ભૂલાઈ ગયો છે. પરિણામે પરિસ્થિતિ એ હદે વણસી છે કે માટે ભોગે ભગવાન શુધ્ધાંને પૂજારીને હવાલે કરી દેવાયા છે.

આપણા પૂર્વજો દહેરાસરને લગતી દરેક બાબતમાં અગ્રેસર રહેતા. ઘરનું કામ ઘરની દરેક વ્યક્તિ પોતાની યોગ્યતા પ્રમાણે સંભાળી લે છે, તેવી જ રીતે દેરાસરને લગતું દરેક ખુણે પણ જવાબદારીપૂર્વક તેઓ સંભાળી લેતા. શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓ સવારનાં વહેલા ઉઠને દહેરાસરનો કાતો લેવાથી માંડીને તમામ કામો જાતે કરી લેતાં હતાં. બહેનો બેડાંઓ ભરીને શુદ્ધ-પવિત્ર જળ દહેરાસરે હોંશભેર પહોંચાડતી. પૂજાનાં વાસણો માંજવાનું-અંગલૂછણા-પાટલૂછણાં વગેરે ઉપકરણોને શુદ્ધ કરવાનું કામ બહેનો કાળજીથી જયણાપૂર્વક કરતી. આપણા વડીલો ઈષ્ટદેવને પક્ષાલ અંગલૂછણાં વગેરે ઉત્કટભાવે ભક્તિમાં ભીંજાઈને કરતા. પરમાત્મા અને મંદિરને લગતુ નાનામાં-નાનું કાર્ય કરતાં તેઓ ગર્વ સાથે ધન્યતા અનુભવતા. આ રીતે ભગવાન અને ભક્ત વચ્ચે એક સેતુ બંધાતો.

આજે ભાવપૂજાનો ઉલ્લાસ આપણા હૃદયમાં ઉત્કટપણે પ્રાયઃજાગતો નથી એનું એક કારણ ચૈત્યવંદન ભાષ્યના આદેશ પ્રમાણે ક્રમશઃ પ્રથમ નિસિહિ પછીનું દેરાસર સંબંધી કાર્ય આપણે વિસરી ગયા છીએ. આથી બધું જ કામ પ્રાયઃ પગારદાર પૂજારીઓ ઉપર છોડી દેવાથી અનેક પ્રકારની આશાતનાઓ અને અશુદ્ધિઓને જાણે કે માઝા મૂકી છે.

દાખલા તરીકે (પક્ષાલ) માટેનું જળ મીઠા કૂવાનું હોય. કૂવાની આસપાસમાં મળ-મૂત્ર આદી દુર્ગંધ ન થતી હોય, એવા કૂવેથી પાણી લાવી જાડા ગરણાથી ગાળવું. આ પાણીમાં ચરક-જીવજંતુ વગેરે ન પડે માટે તેને ઢાંકીને રાખવું. જળ લાવતાં કોઈનો સ્પર્શ ન થાય તે રીતે મંદિરમાં લાવવું. અભિષેકના જળ માટે અગાઉ મંદિરોમાં ખાસ અલગ કૂવા રાખવામાં આવતા. કેટલેક સ્થળે કૂવાનાં પાણી ખારાં અથવા બેસ્વાદ હોવાથી જિનબિંબો કાળા પડી જાય છે, તેમજ કાટ લાગી જાય છે. આવા દોષોથી બચવા માટે મંદિરના રંગમંડપની નીચે અથવા આસપાસમાં ભૂગર્ભટાંકા બનાવીને ચોમાસામાં વરસાદ (સર્વ જળોમાં અંતરીક્ષનું પાણી શ્રેષ્ઠ છે.) ના પાણીનો સંગ્રહ કરી તે જળથી પરમાત્માનો અભિષેક કરવો જોઈએ.

વરસાદનું પાણી ૧૨માસ રહેવા છતાં પ્રાયઃ બગડતું નથી. આજેતો ગામડે ગામડે પાણી લોખંડની પાઈપો વડે ટાંકાઓમાં ચડાવવામાં આવે છે. આ પાણીમાં અનેક જંતુઓ ઉત્પન્ન થાય છે. પરિણામે પાણી વાસી અને અપવિત્ર બને છે. વળી રસાયણો અને કેમીકલયુક્ત પાણી વાપરવાથી ઘણી જ આશાતના અને નુકશાન થાય છે.

આતો શુદ્ધ જળ માટેનું એકજ ઉદાહરણ આપ્યું. આ રીતે દરેક સામગ્રી ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણેની શુદ્ધ-સાત્વિક-પવિત્ર અને નિર્મળ હોવી જોઈએ.

આજે પાયાની આ બાબતો પ્રત્યે શ્રાવકોને મોટેભાગે જ્ઞાન નથી. પાયાના આ મુલ્યોનો હ્રાસ થતો હોય ત્યારે ગુરુભગવંતોએ પણ અતિ મહત્વની એવી આ બાબતો પ્રત્યે ઉદાસીન રહેવાને બદલે કે ઓચ્છવો-મહોત્સવોમાં જ પોતાના કાર્યની ઈતિશ્રી માનવાને બદલે શ્રીસંઘનું યથાયોગ્ય શુદ્ધ વિધિઓ તરફ ધ્યાન ખેંચવું જોઈએ. બીજી તરફ ગૃહસ્થ વર્ગ વહીવટદારો-કાર્યકરો નિષ્ક્રિય કે નિરસ પણ નથી. ભગવાન પ્રત્યે તેમને ભક્તિ તો અપાર છે. પણ અજ્ઞાનતાને કારણે કે અજાણપણામાં તેઓ બીનજરૂરી અને તે પણ છ કાયના જીવોની ક્રુર કત્લેઆમથી ઉત્પન્ન થયેલા બાહ્ય આડંબરોને પ્રોત્સાહન આપી રહ્યા છે. જેમ કે હજારો લાખો બલ્બોની લાઈટોની રોશનીઓ, પ્લાસ્ટીકના તોરણો-ફૂલો-ધજાઓ તેમજ કાગળના તુચ્છ ચળકાટવાળા ડેકોરેશનો વગેરે ભગવાનની આવી ઉન્માર્ગ પ્રેરક ગાંડી ભક્તિ કરવાથી આશાતના થાય છે. એટલું જ નહી ચાર પુરુષાર્થ બાહ્ય સાધનોથી ઉત્પન્ન થયેલાં મહાહિંસક સાધનો વડે પ્રભુની ભક્તિ કરવાથી ભગવાનના માર્ગને હાનિ-નુકસાન પહોંચાડવામાં આપણે નિમિત્તરૂપ તો નથી થતા ને ?

આપણા આત્મતેજને વિકસાવે તેવાં દેવમંદિરોનો બાહ્ય આડંબર રાજા ઋષભની અહિંસક પરંપરા મુજબનો જરૂર આવકાર્ય ગણાય. જેમ કે શુદ્ધ ઘી તેલના દીવડાઓની રોશની, સુગંધિત સુવાસિત મહેંકતાં ફૂલોની સજાવટ-ભવ્ય આંગી-કલાત્મક રચનાઓ, ખાદીની ધજાઓ કમાનો, આસોપાલવના તોરણો.

આ રીતે ધાર્મિક અનુષ્ઠાનોની ઉજવણી કરવાથી બગીચાના ફૂલોની જેમ આપણા મનમાં સુંદર વિચારોની સરવાણી વહે છે. આત્મા પરમાત્મ ભક્તિમાં તન્મય અને તદાકાર બને છે. એટલું જ નહી આ રીતની શુદ્ધ અને સાત્વિક ઉજવણી સઘળાય જીવોને તાજગી આપે છે.

પૂજાઓ-સિદ્ધચક્ર પૂજનો - ઉજમણાં અંજનશલાકા-પ્રતિષ્ઠા આદિ ઓચ્છવો-મહોત્સવો તો આત્માના ઉત્થાન માટેની અદ્‌ભૂત ક્રિયાઓ છે. પરમાત્મમય બનવા માટેનું અમોઘ ઔષધ છે. આત્મામાંથી પરમાત્મા બનવાની ગુરુચાવી છે. પણ આ ઊંચાં વિધિવિધાનો અનુષ્ઠાનોમાં મંગળ કરવાની/કલ્યાણ કરવાની શક્તિ ત્યારે જ પ્રવેશે છે જો તેમાં વપરાતાં દ્રવ્યો ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણેના શુદ્ધ-પવિત્ર-નિર્મળ અને સુગંધિત હોય. દ્રવ્યો વાસી - અભક્ષ્ય - અને અપવિત્ર હોય તો તે અનુષ્ઠાનમાં મંગળ કરવાની શક્તિ પ્રગટ થતી નથી. અનુષ્ઠાનનું ફળ છે અહિંસક ભાવની વૃદ્ધિ કરવાનું. પણ જેના વડે એ અનુષ્ઠાનો કરાય છે, તે દ્રવ્યો જ તો હિંસક સંસ્કૃતિમાંથી ઉત્પન્ન થતાં હોય તો અહિંસક ભાવ શી રીતે પ્રગટ થાય ? દુર્ગંધ દૂર કરવા ધુમાડો કરવો છે. પણ ધુમાડાનાં દ્રવ્યો સ્વયં જો દુર્ગંધ મારતાં હોય તો આવા ધુમાડાથી દુર્ગંધ કેમ દૂર થશે ? કહેવાનું તાત્પર્ય એટલું જ કે અવિધિનો પક્ષપાત એટલો તો ન જ થવો જોઈએ કે અવિધિ એજ વિધિ બની જાય. કેડીનો આશ્રય એટલો તો ન લેવાય કે કેડી એજ માર્ગ બની જાય.

વાતનો સાર એટલો જ છે કે ધર્મગુરુઓએ, વહીવટદારોએ, ગૃહસ્થોએ અને દાનવીરોએ દહેરાસર શુદ્ધિ અને દ્રવ્યશુદ્ધિને સૌથી વિશેષ અને પ્રથમ પ્રાધાન્ય આપવું જોઈએ. દ્રવ્યશુદ્ધિ વગરનાં વિધિવિધાનો પૂન્યાનુબંધી પૂન્યને બદલે પાપાનુબંધી પાપતો નથી બંધાવતાને ? વિધિ અને વિધિના રાગ વગરની ક્રિયા

અનુબંધે પાપ બંધાવનાર છે. જયણાથી પૂન્ય બંધાય છે. અને ભગવાનની ભકિતથી અનુબંધ બંધાય છે.

મંદિર પરમાત્માને પામવાનું આલંબન છે. પગથીયું છે. તો આ મંદિરો સ્વચ્છ-સુઘડ, ધૂપ-દીપથી વાસિત અને ફૂલોની સુંગધથી મહેંકતાં હોયતો આવા મધુર વાતાવરણમાં ભગવાનનાં દર્શન માત્રથી અવિકસિત આત્માઓમાં ચેતના જાગૃત થાય છે. દર્શનાર્થીઓનું દિલ ત્યાં જડાઈ જતું હોય છે. મઘમઘતા શુદ્ધ-પવિત્ર અને નિર્મળ વાતાવરણમાં ભલભલા પાપીઓ પોતાના મનની મલીનતા પશ્ચાતાપના પાણીથી ધોઈને પવિત્ર બને છે. આવા આલ્હાદક વાતાવરણમાં પ્રવેશતાંજ અશુભ વિચારો વરાળ થઈને ઉડી જાય છે. હૃદયમાં શુભ ભાવનાનાં મોજાં ઉછળવા માંડે છે.

આમ પ્રભુ મિલનની તીવ્ર ઝંખના લાવવા માટે શુદ્ધિકરણ આવશ્યક છે. તો જે રીતે આપણા ઘર-દુકાન વગેરેની શુદ્ધિમાં જાળવણીમાં આપણે મન પરોવીએ છીએ. બરાબર તેજ રીતે ચાલો આપણે સૌ જાતે દેહેરાસર શુદ્ધિના આ યજ્ઞનો શુભારંભ કરીએ.

કાજો કાઢવાની જયણાપૂર્વક કરેલી નાનકડી ક્રિયા એ પણ પરમાત્માની ભક્તિ છે. આમ પરમાત્માની વિધિપૂર્વક કરેલી નાનામાં નાની ભક્તિ એતો મોક્ષનું પ્રવેશદ્વાર છે.

આવો આપણે સૌ એ પગદંડીના પથિક બની એમાં સહભાગી બનીએ.

પ્રામાણિકતાના પ્રતાપે મેઘરાજાની મહેર

વિક્રમ સંવત ૧૭૪૦માં ગુજરાત-સોરાષ્ટ્રમાં મોટો દુષ્કાળ પડ્યો; જેમાં અનેક પશુઓ અને મનુષ્યો પણ ભૂખે મરવા લાગ્યાં. ચોમાસું બેસી ગયું હતું અને દિવસો પસાર થયે જતા હતા, તો પણ વરસાદ આવ્યો નહિ.

તે વખતના ગુજરાતના નરેશે અનેક યજ્ઞો કર્યા અને સાધુ-સંતોને પ્રાર્થના કરી, પરંતુ વરસાદ આવ્યો જ નહિ. કોઈ પ્રજાજનોએ કહ્યું કે આપણા રાજ્યમાં અમુક વેપારી છે તે ચાહે તો વરસાદ થાય.

રાજા તુરત વેપારી પાસે ગયા અને વાતચીત કરી. વેપારી કહે મહારાજ ! હું તો આપનો એક સામાન્ય પ્રજાજન છું, મારાથી શું થઈ શકે ? તો પણ રાજા માન્યા નહિ, તે તો હઠ કરીને બેસી ગયા કે તમારે આ અનેક મૂક પશુઓ અને ભૂખ્યા પ્રજાજનો ઉપર દયા કરવી જ પડશે. તમે તેમ નહિ કરો ત્યાં સુધી તમારા ઓટલા ઉપર ભૂખ્યો બેસી રહીશ.

આખરે વેપારીને માનવું પડ્યું. તેણે પોતાનું ત્રાજવું ઉઠાવ્યું અને આકાશ સામે જોઈને કહ્યું : 'જો આ ત્રાજવાથી મેં કોઈને ક્યારેય ઓછું - અધિકું તોલી દીધું ન હોય, નીતિનું સેવન કર્યું હોય, સત્યનું જ આચરણ કર્યુ હોય તો હે દેવતાઓ ! તમે અનુગ્રહ કરજો.'

હજુ તો આ વેપારીએ પોતાની પ્રાર્થના પૂરી કરી તેટલામાં તો આકાશ ધીમે ધીમે વાદળાંઓથી ઘેરાવા લાગ્યું. ઠંડો પવન આવવા લાગ્યો અને વરસાદ પડવા લાગ્યો.

સત્ય અને પ્રમાણિકતાનો આવો પ્રભાવ જોઈ રાજા અને સમસ્ત પ્રજાજનો ખૂબ ખુશ થઈ ગયા અને વેપારીની કીર્તિ રાજ્યસભામાં ફેલાઈ ગઈ. તુલાધાર વૈશ્ય જેવી જ આ વેપારીની પ્રમાણિકતાની પરમાત્માએ પણ નોંધ લેવી પડી.

સાભાર - દિવ્ય ધ્વનિ

અંક વિજ્ઞાનથી આત્મજ્ઞાન...

ગામના પાદરમાં નદી કિનારે ઝુંપડીમાં એક બાવાજી રહેતા હતા. તે ઘરબારી હતા. એકવાર મનમાં વિચાર આવ્યો કે મને આંક લખતાં પણ આવડતા નથી માટે અંકજ્ઞાન શીખવું આવશ્યક છે. વિચાર થયો કે બીજે જ દિવસે અમલમાં મૂક્યો, એક શિક્ષક ને ભણાવવા માટે નક્કી કર્યા. હંમેશાં તે શિક્ષક ભણાવવા માટે આવે.

બાવાજીનું અંક વિજ્ઞાન ધીરેધીરે વધવા માંડ્યું. બાવાજી જ્યારે ભણવા બેસતા ત્યારે પેલી બાવાની પત્નિ બાવી પણ રોજ સામે આવીને બેસી જાય.

એમ ક્રમશઃ એક થી માંડી એકવીશ સુધીના આંકડા તો શીખાઈ ગયા. હવે નંબર હતો બાવીશના આંકનો!

શીખવાની પદ્ધતિ એ હતી કે "બે બગડે બાવી" એમ શિક્ષક બોલાવે. જેવું શિક્ષક શીખવાડે તેવું જ બાવાજી બોલતા જાય.

ક્યાંક ભૂલી તો નથી જવાતું ને?

એ વિચારે થોડી થોડી વારે બાવાજી શિક્ષક ને પૂછે. "કેમ? બે બગડે બાવી બરોબર ને?"

એમ વારંવાર બોલતાં બાવાજીને શિક્ષકે રહસ્યાર્થ સમજાવ્યો.

"હે બાવાજી! આ તમે શું બાલો છો? તેનું સત્યજ્ઞાન છે તમને?"

બાવાજીએ નકારાત્મક ઉત્તર આપ્યો. ત્યારે શિક્ષકે શું કહ્યું ખબર છે?'

"જે બાવા થયા છતાં બાવી રાખે તેના બે ભવ બગડે. આ સામે બાવી બેઠી છે. અને તમે તેનો સંગ કરો છો માટે તમારા પણ આભવ અને પરભવ બંન્ને નહીં બગડે?"

આ સાંભળી બાવાજી ને પણ થયું કે અંક વિજ્ઞાન ભણવાનું પણ મારે માટે કેટલું ઉપકારક સિદ્ધ થયું.

બાવીશના આંકડાનો મર્મ સમજી બાવી નો સંગ છોડી ખરો ત્યાગમાર્ગ સ્વીકારી તે બાવાજીએ આત્મહિત ને સાધ્યું.

મુનિ પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી

આઠ સંપદાથી પરમાણો

શાશ્વતો આત્મા પોતાના શુદ્ધ સ્વરૂપને પ્રાપ્ત કરવાની ઝંખના કરે છે પરંતુ તેને આઠ કર્મના આવરણોને કારણે તે અશક્ય જેવું લાગે છે. પણ જો શુદ્ધ આલંબન મળે તો અવશ્ય તેમાં સફળ થાય.

શ્રેષ્ઠ આલંબન રૂપ 'પંચનમસ્કાર' મંત્રનું સ્મરણ મળવાથી, વ્રતધારી આત્મા સામાયિક લેતાં, પારતાં, પૌષધ, સજઝાય, ધ્યાન, માંગલિક શ્રવણ, નવકારશી ચોવિહાર, પચ્ચક્ખાણ આદિ ક્રિયાઓમાં દિવસ ભરમાં અનેકવાર મંગળ કરી દિવસ મંગળમય ઈચ્છે છે.

આ મહામંત્રમાં નવ પદ છે. તેમ અર્થ સંકલનાની દ્રષ્ટિએ 'મંગલાણં ચ સવ્વેસિં, પઢમં હવઈ મંગલં' એ બે પદની એકજ 'સંપદા' સ્વીકારવાથી એ આઠ સંપદાવાળો કહેવાય છે. આવા ચમત્કારિક મંત્રનું રટન આત્માના શુદ્ધ સ્વરૂપની સાથે અષ્ટમહાસિદ્ધિ જેવી લબ્ધિઓને પણ આપનાર બને, તેમાં આશ્ચર્ય શું ?

ગોરાઓની મીટ ઈકોનામી અને ભારતની મીલ્ક ઈકોનોમી

બી.એ.એલ.એલ.બી. એડવોકેટ ધાનેરા નવસારી

૪૨ વર્ષમાં આ દેશના સત્તા ભૂખ્યા રાજકારણીઓએ ભારતની સ્ત્રી જાતિ અને ગાયમાતાની જે દશા કરી છે, તે જોઈ પથ્થર હૃદયના માનવીની આંખમાં આંસુ આવી જાય છે. ભૂતકાળમાં કોઈ રાજાએ ખુરશી માટે આટલી નીચ કક્ષાની પ્રવૃત્તિઓ કરી હોય એવું ભાગ્યે જ બન્યું હોય.

પ્રશ્ન :- શું ગાય એટલે પશુઓ ભારતીય અર્થવ્યવસ્થામાં કેન્દ્ર સ્થાને છે તે સમજાવો ? અને આઝાદી પછી ગોરાઓની સલાહ લઈ આપણા રાજકારણીઓએ દેશના પશુધનની જે દુર્દશા કરી છે અને પ્રજાને જે હાડપિંજર જેવા આ સત્તાભૂખ્યા વરૂઓએ કરી છે તે સમજાવો ?

જવાબ :- Cow is in Centre of Indian Economic Management and She is Symbol of Indian Civilization. ભારતની અર્થવ્યવસ્થામાં ગાય કેન્દ્ર સ્થાને છે ગાય એટલે પશુઓ વગરના ભારતની કલ્પના પણ થઈ શકે નહીં. ગાય છે માટે ભારત જીવતું છે. યુરોપના તથા અમેરિકાના ગોરાઓની અર્થવ્યવસ્થા માંસ અને યસીન ઉપર આધારિત છે જ્યારે હજારો વર્ષથી ભારત ગાય, બળદ, ભેંસ પાડા, બકરાં, ઘેટાં, ઊંટ, ઘોડા વિગેરે જાનવરો ઉપર આધારિત છે. ભારતના લોકો કરોડો વર્ષથી દૂધ, ઘી, દહીં, છાસ, મીઠાઈ, શીરો, લાપસી, ઠેઠા દાળ ખાતા આવ્યા છે. આપણા હિંદુઓ જૈનો વિગેરે તમામ લોકો ગાયને જીવાડી તેને ઘાસ ખવડાવી તેનું દૂધ પીએ છીએ. દૂધમાંથી જ ચા-દહીં, ઘી, માવા, મીઠાઈની સવારથી જ ભારતીય ખોરાકમાં ઘી દૂધની જરૂર પડે છે. દેવસેવા ભગવાને દીવો કરવા ઘીની જરૂર પડે છે. બપોરે ધૂપ-ચુરમું બનાવવા ઘીની જરૂર. ભગવાનને સ્નાન કરાવવા ગાયના દૂધની જરૂર, બળતણ તથા ખાતર માટે મકાન લીંપવા છાણની જરૂર ખેતી તથા ટ્રાન્સપોર્ટ ભાર ઉપાડવા બહારગામ જવા વાહન માટે બળદોની જરૂર, આ બધું સસ્તા ભાવે મફતમાં, ઘર આંગણે ગાય આપે છે. અનાજ છુટું પાડવા, ૨૪ કલાકમાં બળતણ ત્થા ખાતર માટે મફતમાં છાણાં-જીવનની તમામ જરૂરીયાતો તદ્દન શુદ્ધ સાત્વિક ખોરા દૂધ અને ઘી ગાયમાતા આપે છે.

ભારતીય પ્રજાને સુંદર રૂપાળા, ઉંચા દેખાવડા બળદો આ ગાયમાતા આપે છે. ભારતની શક્તિ તંદુરસ્તી બુદ્ધિ, ધંધો, ખેતી, વાહન અને ટ્રાન્સપોર્ટ આપણી તમામ Prime Necersity પ્રાથમિક જરૂરિયાતો ૨ બળદ અને ૧ ગાય રાખો એટલે આરામ. ઘાસ ખાય માટે ખર્ચ નહીં, ડીઝલની જરૂર નહીં, માટે ૪૨ આરબ દેશોને સલામ કરવાની નહીં બેરીંગ તૂટે નહી માટે ૭૫ ગોરા દેશોને સલામ કરવાની કડાકૂટ નહીં.

૨૪ કલાકમાં છાણ તૈયાર મફતમાં, માટે ગેસ કોલસા કોઈ ખર્ચ નહીં. આજે કોલસા રૂા. ૬-૦૦ના ૧ કીલો મળે છે. અનાજ કરતાં બળતણ મોંઘું ધન્ય છે. આજના રાજકારણી ઓને; ભગવાન સિવાય મને નથી લાગતું બીજો કોઈ તેમની ભ્રમજાળને ભેદી શકે.

૧૯૬૨માં માર્કેટીંગ યાર્ડ ધાનેરામાં ચણા રૂા. ૬-૦૦ના ૨૦ કીલો, ઘઉં રૂા. ૫-૦૦ ૨૦ કીલો, બાજરી રૂા. ૪-૦૦ ની ૨૦ કીલો. હું જાતે નોંધ તથા હરાજી કરતો હતો. આપણા રાજકારણીઓ

પ્રજાને ઉલ્લુ બનાવવામાં એટલા Expert નિષ્ણાત થઈ ગયા છે કે કોઈ સજ્જન તેમનાં શુકન લેવાને પણ તૈયાર નથી. વાતો બધી પ્રગતિની કરવી અને હકીકતમાં આ મહાન દેશની પ્રજાને ચિંથરેહાલ હાડપિંજર અને ભીખારી જેવી કરી ખલાસ કરી નાખવી ખલાસ થઈ ગઈ છે.

આપણે પશુ પાલન કરનારને વળી પરદેશી ખાતર ફર્ટીલાઈઝરની શું જરૂર છે ? પરંતુ કોઈ બાપ હાથે કરીને છોકરાને ભીખારી કરવા તૈયાર થયો હોય, અને છોકરો પણ પેંડા માટે રાજ વેચવા તૈયાર હોય તો ઘરની દુર્દશા ન થાય તો શું થાય ? ગાય ભેંસ પશુઓ વેચી-ભારતનો ખેડૂત આજે યુરીયા સ્લ્ફર ગેમેક્ષીન ખરીદવા દુકાને દુકાને ફરે છે.

સરકાર પણ નવાં નવાં કતલખાનાં ખોલે છે. જાણે કે ગાયનો, પશુનો, પક્ષીનો છેલ્લે ભારતના માનવીનો વિનાશકાળનો પીરીયડ, ડ્રામાનો છેલ્લો અંક ન ચાલતો હોય ? ટ્રેક્ટર એનો ધોળો હાથી છે, પોદલો કરે નહિં અને ઘાસ ખાય નહિં. ડીઝલ ખાય અને રીપેરીંગમાં ધણીને ભીખારી કરે.

જ્યારે બળદગાડીને ઊંટગાડીને ધક્કા મારવા પડે નહિં. બળદ ડીઝલ ખાય નહિં, પોદલો કરે ખાતર આપે, પ્રદુષણ નહીં પરંતુ હવામાન પર્યાવરણ Environment શુદ્ધ કરે છે. બળદના વાહનમાં બેરીંગ તૂટવાનો ભય નહિ, ગેરેજ નહિ, રીપેરીંગ નહીં, મને સમજાતું નથી કે બેંકો ટ્રેક્ટર, જીપડાં ખરીદવા લોન આપી આપીને ભારતના ખેડૂતને જમીન વેચાવી ક્યાં સુધી ભીખારી કરવા માગે છે ? દૂધ ઘીથી અંધાપો આવે નહીં. ઘી અમૃત છે, ઝેરને બહાર ફેંકે છે ગાય-ભેંસ બકરાં ઘેટાં રાખવાને બદલે ભારતમાં ભૂંડ ઉછેરનો કાર્યક્રમ શરૂ કરવા પાછળ ગોરાઓનો ઈરાદો આ રામકૃષ્ણ, મહાવીર, રાણા પ્રતાપ શિવાજી, વીર દુર્ગાદાસ અને ભામાશાના વારસદાર એવી ભારતીય પ્રજાને ખાનપાન. ચારિત્ર ધર્મભ્રષ્ટ કરી તમામ રીતે ખતમ કરવા માંગે છે. જાનવરનું છાણમૂત્ર પવિત્ર અને રોગનાશક છે. દૂધ ઘી ખાનારી ગાય, ભેંસ, બકરાં, ઘેટાં વચ્ચે જીવનારી હિન્દુસ્તાની પ્રજાને વળી દવાખાનાની રાતોરાત શું જરૂર પડી ? બેકારી વળી રાતોરાત ક્યાંથી ટપકી પડી ? પરંતુ ૪૨ મુસ્લીમ આરબ દેશો અને ૭૫ ગોરાદેશોની ગીધ નજર આપણી પશુસૃષ્ટિ ઉપર છે. આઝાદીના બાનાસર આ ગોરાઓ તથા આરબો આપણી પાસેથી તમામ પશુઓ ખરીદી લઈ બદલામાં ગંધાતું ડીઝલ પેટ્રોલ, કેરોસીન, ક્રુડ ઓઈલ ભારતને આપે છે. આ બધા Mineraloils ખનીજ તેલો માછલીના શરીરની ચરબી છે. ગાય, બળદ, ભેંસ, બકરાં, ઘેટાં જીવતાં હોય તો આ ગંધાતા તેલ કોણ ખરીદે, સોનું વેચી દારૂ ખરીદવો, અને દારૂ પીને પછી ગાંડા થવું એવો ડફોળ ધંધો કોઈ સામાન્ય માણસ પણ ન કરે. આજે આપણા રાજકીય નેતાઓ માંસ Export કરી કતલખાનાં ખોલી જાનવરો ૪૨ આરબ મુસ્લીમ દેશોને વેચી ગંધાતું બટર ઓઈલ ત્થા ડીઝલ અને બનાવટી ખાતર ખરીદ કરવાનો વેપલો કરી રહી છે.

ભારતની ૪ પુરુષાર્થની અહિંસક સંસ્કૃતિ ધર્મ-અર્થ કામ અને મોક્ષનો ૪૫ વર્ષમાં ગોરાઓ અને આરબોની સલાહથી ખાતમો બોલાવનારા આ રાજકારણીઓએ ગાયમાતાને કતલખાને મોકલી, સ્ત્રી માતાને વસ્ત્ર વિહોણી કરી, ભારતની પ્રજાને હાડપિંજર કરી છે અને ભાષણમાં અમો તમારું ભલું કરવા ગાદી ઉપર બેઠા છીએ તેવું દરેક ચૂંટણીમાં કહે છે.

મૂંગા પશુઓ નેતાઓને કહે છે. અમે તમારું શું બગાડ્યુ છે તે દેવનાર કતલખાને ફાંસીએ ચડાવો છો ? અમને ઘાસ ખાઈને જીવવા દો તમે માણસો અનાજ ખાઓ. અમને જીવવા દો દૂધ

આપશું, ઘી આપશું, બળતણ ખેતી માટે છાણ આપશું અને ચામડું મરીએ ત્યારે લઈ લેજો. ૨ બળદ ૧ ગાય બકરી ઘેટીના સંગથી ભારતનો ખેડૂત વેપારી કારીગર તમામ કોમો સુખી હતી. દૂધ ઘીની નદીઓમાં પ્રજા આનંદ કરતી હતી. રાજકારણીઓના પ્રોપેગેન્ડા તો ભલભલાને મૂર્ખના સરદાર બનાવે તેવા છે. ગામડામાં સરકારે તમામ ધંધા ખલાસ કર્યા જેથી પ્રજા પોટકાં ઉપાડી ગામડાંથી શહેરમાં મજુરી કરવા જાય, તેને Transfer of Population વસ્તિની બદલી થઈ કહેવાય, તેના બદલે પોતાનું પાપ છુપાવવા કહે વસ્તિ વધી ગઈ માટે આપેરેશન કરાવો વર કન્યા મરો કે જીવો રાજકારણી કહે પ્રજા ભલે ખલાસ થાય અમારું ખપ્પર ભરો. આપણી અર્થવ્યવસ્થા ભગવાન આદેશ્વરે બતાવેલી હતી.

માનવશક્તિ અને પશુશક્તિ સાથે રહી અહિંસક રીતે બન્ને જીવન જીવે અને મોક્ષ એ અંતિમ ધ્યેય હતું. ગોરાઓએ આપણી આ અહિંસક સંસ્કૃતિના મૂળમાં જ આઝાદી પછી આપણાજ દેશ નેતાઓને હાથે દિવાળી ચંપાવી છે. દિવાળી આપનાર ગોરા તથા ડીઝલવાળા આરબો છે અને દિવાળી સળગાવનાર ઘરનો જં માણસ આપણા રાજકારણીઓ છે. બિચારાઓને ૪૨ વર્ષ પછી પણ ગાય માતાની કતલ અટકાવતાં શરમ આવે છે. હમણાં જ સપ્ટે ૯૦ ભાજપના પાલી જીલ્લામાંથી પાર્લામેન્ટમાં ચૂંટાયેલા જૈન યુવાન શ્રી ગુમાનમલ લોઢાસાહેબે લોકસભામાં ગાયની કતલ ભારત ભરમાં અટકાવવા પ્રપોઝલ રજૂ કરી ત્યારે આપણા સંસદ સભ્યો નાશભાગ કરી ગયા હતા, જે હાજર રહ્યા તેઓએ પણ વિરુદ્ધમાં મતદાન કર્યું. અમુક સભ્યો જ ગાયના માટે બોલ્યા, રીટાર્યડ જસ્ટીસ શ્રી ગુમાનમલ લોઢા આ દ્રશ્ય જોઈ અવાક્ બની ગયા. કારણ કે આપણા રાજકારણીઓ જો ખુરશી રહેતી હોય તો માતાની કતલ ભલે થાય તેટલી તદ્દન નીચી કક્ષાએ ઉતરી ગયા છે. ભલે માની લાજ લૂંટાય ખુરશી મળતી હોય તો લેવી.

યુરોપના ગોરાઓની અર્થવ્યવસ્થા હિંસા, નાગાઈ ઠગવિદ્યા Exploitation લડાઈ-શોષણ અને છેવટે અંતિમ ધ્યેય જીવમાત્રનો પોતાના સુખ સગવડ માટે નાશ કરવો. ધર્મનો નાશ કરી ભારતને Christian Country બનાવવો. પોતે નરકમાં જવું, સાથે બીજાને પણ પાપમાં ખેંચી જવો. ગોરાઓ સવાર પડતાંજ ભૂંડના માંસ ઉપર ભૂખ્યા વરૂ જેમ તૂટી પડે છે. પછી દારૂ પીએ છે ગોરાઓ ભૂંડ કે જે નાલાયક Sexual અને હર પળે નાગું ગંદકી ફેલાવનારું જાનવર છે તેને કરોડોની સંખ્યામાં ભારતમાં ઉતારી ભારતની ઉછળતી પ્રજાને તમામ રીતે ખતમ કરવાનું ભયંકર ષડયંત્ર રચાયું છે. દૂધ, ઘીનાં ફાંફાં મારનારી હાડપિંજર ભારતીય પ્રજામાં ભગવાન પ્રવેશ કરે તોજ ગોરા-આરબો તથા રાજકારણી એવા તમામ ઠગોનો મને વિશ્વાસ છે. ગોરાઓ ધાર્મિક એવી ભારતીય પ્રજાને શસ્ત્રોથી લડાઈ કર્યા વગરજ તાજા દૂધ, ઘીને બદલે ભૂંડનું માંસ, ઈંડા, દારૂ નાગાઈ, ટી.વી, મશ્કરી, ઠઠ્ઠા, નાલાયકી શીખવાડી Slow Poisone તદ્દન નીચી કક્ષાએ લઈ જવા માગે છે. ભારતીય પ્રજાનું બાળપણ તથા આપણા નેતાઓની સ્વાર્થવૃત્તિથી ગોરાઓને "મોસાળમાં વિવાહ ઔર માં પીરસને વાલી" જેવી સગવડ મળી હોય તો લુચ્ચા ભૂલે ખરા ? આપણુ દુર્ભાગ્ય કે છેલ્લા ૪૦ વર્ષમાં કોઈ ભડવીરે જન્મ ન લીધો. કદાચ કુટુંબનિયોજન ગર્ભપાતના કારણે આ શક્ય બન્યું હોય ?

ગોરાઓ Meat Economy માંજ માને છે માંસ ખાઈ દારૂ પી જાનવરોની કતલ કરી

નાગાઈની ફિલ્મ જોઈ ભૂંડ જેવું જીવન જીવે છે.

સવારમાં ઉઠતાં ગોરાઓ દારૂનો ગ્લાસ હાથમાં લઈ છાપું વાંચે છે. જ્યારે ભારતનો ધાર્મિક માણસ સવારથીજ દેવોની સંસ્કૃત ભાષાના શ્લોકો રાગથી ગાય છે. પછી ભગવાનનું નામ, મૂર્તિપૂજા, ઘીના દીવા, કબૂતરને અનાજ, ગાયને ઘાસ, કૂતરાને રોટલા આપે છે. ત્યાં સુધી પોતે પાણી પણ પીતો નથી. ગોરાઓના દેશમાં તમને આવું જોવા ન મળે. ગોરો સગા મા બાપને પાસ આપી હોટેલ દેખાડે છે. બીમાર થાય તો દવાખાના ભેગો અને ત્યાંથી બારોબાર શ્મસાન ભેગો કરવામાં આવે છે. Time is money. Money is every thing. માણસની ત્યાં કોઈ કિંમત નથી.

આઝાદી પછી ગોરાઓએ ૪૨ મુસ્લીમ દેશોમાં માથું મારવાને બદલે હિન્દુસ્તાન નામના એકજ દેશનો નાશ કરવાનો નિર્ણય કર્યો. કારણ કે ૪૨ મુસ્લીમ દેશોની વસ્તી ૧ હિન્દુસ્તાનની લગભગ સરખી છે આ કામ માટે ગોરાઓએ જાતે ભારતીય એવા આજના ભણેલા કહેવાતા સુધરેલા દારૂડીયા પંસંદ કર્યા. કારણ કે ઘરનો નોકર વધુ વિનાશ કરી શકે છે. ગોરા જેમ તેમ આ રાજકારણીઓ (૧૦ ટકા સજ્જન સિવાયના) નાચે છે. ગોરાઓ કહે ૨૦ કરોડ ૪૦ કરોડ લોન લઈ જાઓ ભાઈ અડધા ખાઈ જજો પણ અમો કહીએ તે ઉદ્યોગ ભૂંડ ઉછેર, માછીમારી ઉદ્યોગ, મરઘા કાર્ય, ઈંડા કતલખાના ખોલજો અને રાજકારણીઓએ ગોરાએ કહ્યું તેમ અમલ કરી દીધો. પરિણામે ગાયને બદલે પ્રજાને માંસને રવાડે ચડાવી ૧ કરોડ ભૂંડ મુંજરી આપનારા આપણાજ છે. એરકંડીશન ઓફીસોમાં બેસી પાપની સહીઓ કરનારાને ભારતની ભોળી અજ્ઞાન પ્રજા કદાચ માફ કરશે; પરંતુ આજ નહિ તો કાલ કુદરત માફ કરશે નહિં. બળદને બદલે ટ્રેક્ટર રાખી ભીખારી થાઓ, ટ્રેક્ટર અને જીપ ખટારા ચલાવવા આરબોને બકરાં ઘેટા ખાવા આપી દો. પ્રજા પણ નિઃસહાય લાચાર થઈ બધું જોયા કરે છે. ઘર સળગ્યુ છે અને પગારભથ્થા ઓછાં પડતા હોઈ બંબાવાળા હડતાલ ઉપર ઉતરી જાય તેવી સ્થિતિમાં આહૂત ધર્મ વખતે જેટલું બચે તે બચાવવા કામે લાગી જવા દરેક સજ્જનની આજે ફરજ છે.

કીડી
આગની બાજુમાં
ઉભીય રહેતી નથી.
આપણે
વરસોથી
ક્રોધની આગને
સાથે જ રાખીને જીવી રહ્યા છીએ...
આશ્ચર્ય છે ને ?

❀ ❀ ❀

માનવતાની
વકીલાત કરનારા
પૂર્વકાળનાં
માણસો ક્યાં અને
કેવળ
પૈસાને જ નજરમાં
રાખીને અસીલની
વકીલાત કરનારા
આજના વકીલો ક્યાં !!

❀ ❀ ❀

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

सव्व जगुज्जोयकरं नाणं, नाणेण नज्जए चरणं ।

– व्यवहार भाष्य ७/२१६

ज्ञान विश्व के समग्र रहस्यों को प्रकाशित करनेवाला है । ज्ञान से ही चारित्र (कर्तव्य) का बोध होता है ।

नाणंमि असंतमि, चरित्तंवि न विज्जए ।

– व्यवहार भाष्य ७/२१७

ज्ञान नहीं है तो चारित्र भी नहीं है ।

णाणी ण विणा णाणं ।

– निशीथ भाष्य ७५

ज्ञान के बिना कोई ज्ञान नहीं हो सकता ।

नाण-किरियाहिं मोक्खो ।

– विशेषावश्यक भाष्य गा. ३

ज्ञान एवं क्रिया (आचार) से ही मुक्ति होती है ।

नाणफलाभावाओ, मिच्छादिट्ठिस्स अण्णाणं ।

– विशेषावश्यक भाष्य ५२१

ज्ञान के फल (सदाचार) का अभाव होने से मिथ्या दृष्टि का ज्ञान अज्ञान है ।

ज्ञानधनानां हि साधूनां, किमन्यद् वित्तं स्यात् ?

– सूत्रकृतांगचूर्णि १/१४

जिनके पास ज्ञान का ऐश्वर्य है, उन साधु पुरूषों को, और क्या ऐश्वर्य चाहिए ?

सव्वणाणुत्तरं सुयणाणं ।

– उत्तराध्ययन चूर्णि

साधना की दृष्टि से श्रुतज्ञान सब ज्ञानों में श्रेष्ठ है ।

स्व-पर प्रत्यायकं सुतनाणं ।

– नंदी-चूर्णि ४४

स्व और पर को बोध करानेवाला ज्ञान - श्रुतज्ञान है ।

आगमबलिया समणा निग्गंथा ।

– व्यवहार सूत्र १०

श्रमण निर्ग्रन्थों का बल 'आगम' (शास्त्र) ही है ।

नाणीं नवं न बन्धइ ।

– दशवैकालिक निर्युक्ति ३१६

ज्ञानी नवीन कर्मों का बंध नहीं करता ।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की *अनुमति* प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

सम्पादक : जे. के. **संघवी**, अ. भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स-थाने में मुद्रित ।